सिन्डरैला यूरोप में–1

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Cinderella-1, Europe Mein (Cinderella-1, in Europe)
Cover Page picture: Cinderella Shoes
{ublished Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Europe

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5
सिन्डरैला यूरोप में–1 7
सिन्डरैला का परिचय 10
1 सिन्डरैला यूरोप में–पहला भाग 15
1 सिन्डरैला 17
2 ओवन साफ करने वाली 35
3 तीन सन्तरे 40
4 हरा नाइट 47
5 टूटा घड़ा 74
6 रशैन कोटी 77
7 सिन्डरैला या शीशे के छोटे जूते 87
8 फ़िने सिन्ड्रौन 104
9 छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की 152
10 छोटी लम्बी नाक वाली 165
11 लावारिस 175

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000**, तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

सिन्डरैला यूरोप में–1

बच्चो सिन्डरैला की कहानी तो तुम सबने सुनी होगी जिसमें एक बिन माँ की बेटी की शादी एक राजकुमार से हो जाती है और उसकी एक या दो सौतेली बहिनें देखती रह जाती हैं। पर यह कहानी अकेली ही नहीं है। सिन्डरैला जैसी बहुत सारी कहानियाँ हैं। आज हमने इस पुस्तक में तुम्हारे लिये सिन्डरैला और उसकी जैसी कई कहानियाँ यहाँ इकट्ठी कर के रखी हैं। तुम लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि सिन्डरैला की कहानी संसार भर में कई रूपों में पायी जाती है। इसके **365** रूप अब तक इकट्ठा किये जा चुके हैं।[2]

ये कहानियाँ ऐसी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाने पर भी सुनने में एक सी लगती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही कहानियाँ दी जा रही हैं। ये सब कहानियाँ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियाँ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। ऐसी कहानियाँ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियाँ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम **11** पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ"। इसमें "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियाँ थीं।[3] इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियाँ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[4]

अब प्रस्तुत है इस सीरीज़ की **12**वीं पुस्तक "सिन्डरैला जैसी कहानियाँ"। सिन्डरैला की बहुत सारी कहानियाँ होने की वजह से इस पुस्तक को कई भागों बाँट दिया गया है। प्रस्तुत है यह इसका पहला भाग — "सिन्डरैला यूरोप में–**1**"। इसमें सिन्डरैला की वे कहानियाँ हैं जो यूरोप के देशों में कही सुनी जाती हैं। ये सब कहानियाँ हमने एक वेब साइट से चुनी हैं।[5]

क्योंकि सिन्डरैला यूरोप की लोक कथाओं का एक मुख्य प्रचलित और लोकप्रिय चरित्र है इसलिये इसकी यूरोप के देशों की लोक कथाऐं पहले दी जा रही हैं। प्रस्तुत है इसका पहला भाग — "सिन्डरैला यूरोप में–**1**"। इसमें सिन्डरैला की वे कहानियाँ थीं जो यूरोप के देशों में कही सुनी जाती हैं।

इस पुस्तक के बाद "सिन्डरैला जैसी कहानियों" की बाकी कहानियाँ "सिन्डरैला यूरोप में–**2**" और "संसार में कितनी सिन्डरैला" भी आने वाली हैं जिसमें सिन्डरैला से सम्बन्धित कुछ और कहानियाँ चुनी गयीं हैं जो और दूसरी वेबसाइटों और पुस्तकों से ली गयीं हैं और यूरोप के देशों के अलावा दुनियाँ के दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं। क्योंकि सिन्डरैला की कहानियाँ अभी भी समाप्त नहीं हुई हैं इसलिये अगर वे मिल गयीं तो वे कहानियाँ भी इसी सीरीज़ में निकट भविष्य में प्रकाशित करने की कोशिश की जायेगी।

तो लो इतनी सारी सिन्डरैला की कहानियाँ अब हिन्दी में। आशा ही सिन्डरैला जैसी इतनी सारी कहानियाँ पढ़ कर तुम्हें अवश्य ही आश्चर्य भी होगा और खुशी भी।

---

[2] See this site - http://www.365cinderellas.com/

[3] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[4] "One Story Many Colors-3" – like "Tom Thumb"

[5] http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/marianroalfecox/index.html

बच्चों क्या तुमको मालूम है कि सिन्डरैला उस लड़की का असली नाम नहीं था? तो फिर क्या था उसका नाम? अंग्रेजी में एक शब्द है "सिन्डर"[6] जिसका अर्थ होता है राख। क्योंकि उस लड़की को अंगीठी और चूल्हे की राख के पास लेटने और रहने को मजबूर किया जाता था इसलिये उसको उसकी सौतेली बहिनें उसको "सिन्डरैला" के नाम से पुकारती थीं। उसका असली नाम क्या था यह तो पता नहीं पर क्योंकि सिन्डर के बाद "ऐला" शब्द लगा हुआ है और वह लड़कियों का पहला नाम भी है तो यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि ऐला ही शायद उसका असली नाम रहा होगा।

तो लो अब हिन्दी में पढ़ो सिन्डरैला की ये इतनी सारी कहानियॉ और आनन्द लो भिन्न भिन्न प्रकार की सिन्डरैला की कहानियों को पढ़ने का...। आशा ही सिन्डरैला जैसी इतनी सारी कहानियॉ पढ़ कर तुम्हें अवश्य ही आश्चर्य भी होगा और खुशी भी।

[6] Cinder means ash

सिन्डरैला का परिचय

यूरोप की कई लोकप्रिय लोक कथाओं में से शायद सिन्डरैला की लोक कथा सबसे ज़्यादा लोकप्रिय है। सिन्डरैला की कहानी तो तुम सबने सुनी ही होगी कि किस तरह उसकी सौतेली माँ उसको तंग करती थी और फिर किस तरह एक परी ने उसकी सहायता कर के उसकी शादी एक राजकुमार से करा दी थी।

सिन्डरैला के सुनहरी जूतों को कौन नहीं जानता। यह कहानी तो शायद इतनी ज़्यादा लोकप्रिय है कि इस तरह की कहानियाँ संसार के बहुत सारे देशों में अपनी अपनी तरह से कही सुनी जाती हैं।

तुमको यह पढ़ कर आश्चर्य होगा कि मैरियन कौक्स[7] ने इस कहानी के **345** रूप पाये हैं और लिखे हैं। सिन्डरैला की कहानी के **345** रूप देना तो यहाँ अभी सम्भव नहीं है पर उसके कुछ रूप यहाँ दिये जाते हैं। आशा है कि ये कथाएँ भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी और विभिन्न देशों में सिन्डरैला कैसे देखी जाती है उसके बारे में कुछ जानकारी देंगी।

---

[7] Marian Cox. Cinderella: Three Hundred and Forty-Five Variants of Cinderella, Catskin, and Cap o' Rushes, with an introduction by Andrew Lang (London: Published for the Folk-Lore Society by David Nutt, 1893). This book is available at the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/marianroalfecox/index.html also.
There is one more Web Site where you can find all these stories - http://www.365cinderellas.com/

इस पुस्तक को लिखने का मुख्य उद्देश्य है सिन्डरैला की बहुत सारी कहानियों को हिन्दी भाषा भाषियों तक पहुँचाना और उसकी बहुत सारी कहानियाँ जो विभिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं उनको एक जगह इकट्ठा कर के रखा जाना। क्योंकि सिन्डरैला की कहानियाँ बहुत सारी हैं इसलिये हमने इनको कई पुस्तकों में बाँट दिया है।

क्योंकि सिन्डरैला की कहानी मूल रूप से यूरोप की कहानी है इसलिये इसकी पहली पुस्तक में हम उसकी कहानियाँ सबसे पहले यूरोप के अलग अलग देशों से ली गयी कहानियों से शुरू करते हैं। "सिन्डरैला यूरोप में–1"। ये सब कहानियाँ कई वेबसाइट[8] से ली गयी हैं।

उसके बाद के दूसरे हिस्से की, यानी "सिन्डरैला यूरोप में–2" की, अन्तिम चार कहानियाँ एक दूसरी वेबसाइट[9] से ली गयी हैं। ये कहानियाँ कुछ जानवर एक दूसरे को सुना रहे हैं और अपनी अपनी दलील दे रहे हैं कि उन्हीं की सिन्डरैला असली थी।

इस वेबसाइट पर केवल चार कहानियाँ ही दी हुई हैं – एक मिश्र की, दूसरी फ्रांस की, तीसरी जर्मनी की और चौथी रूस की। इनमें पहली मिश्र वाली कहानी मिश्र की एक मूल कहानी पर आधारित है और दूसरी रूस वाली कहानी भी रूस की एक मूल

[8] One of them is : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
[9] https://sites.google.com/site/whichistherealcinderella/introduction

कहानी पर आधारित है इन दोनों ही कहानियों का मूल रूप "एक कहानी कई रंग–12ः संसार में कितनी सिन्डरैला" नाम की पुस्तक में दिया गया हैं। इस तरह से इन कहानियों के दोनों रूप पढ़े जा सकते हैं।

इस पुस्तक के बाद "सिन्डरैला यूरोप में–2" और फिर "संसार में कितनी सिन्डरैला" भी आने वाली हैं जिसमें सिन्डरैला से सम्बन्धित कुछ और कहानियॉ और दूसरी वेबसाइटों और पुस्तकों से ली गयीं हैं जो यूरोप के देशों के अलावा दुनियॉ के दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं।

क्योंकि सिन्डरैला की कहानियॉ अभी भी समाप्त नहीं हुई हैं इसलिये अगर वे मिल गयीं तो वे कहानियॉ भी इसी सीरीज़ में निकट भविष्य में प्रकाशित करने की कोशिश की जायेगी।

बच्चों क्या तुमको मालूम है कि सिन्डरैला उस लड़की का असली नाम नहीं था? तो फिर क्या था उसका नाम? अंग्रेजी में एक शब्द है "सिन्डर"[10] जिसका अर्थ होता है राख।

क्योंकि उस लड़की को अंगीठी और चूल्हे की राख के पास लेटने और रहने को मजबूर किया जाता था इसलिये उसको उसकी सौतेली बहिनें उसको "सिन्डरैला" के नाम से पुकारती थीं।

वैसे उसका असली नाम क्या था यह तो पता नहीं पर क्योंकि सिन्डर के बाद "ऐला" शब्द लगा हुआ है और वह लड़कियों का

[10] Cinder means ash

पहला नाम भी है तो यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि ऐला ही शायद उसका असली नाम रहा होगा।

सो लो पढ़ो अब सिन्डरैला की ये इतनी सारी कहानियॉ हिन्दी में और आनन्द लो भिन्न भिन्न प्रकार की सिन्डरैला की कहानियों के पढ़ने का...

1 सिन्डरैला यूरोप में–पहला भाग

सिन्डरैला की कहानियों के इस पहले भाग में यूरोप के देशों से ली गयी कुछ कहानियॉ हैं। क्योंकि वहॉ की कहानियॉ भी बहुत अधिक हैं इस वजह से अभी इन कहानियों को दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है। इस पहले भाग में सिन्डरैला की यूरोप के देशों में कही सुनी जाने वाली **11** कहानियॉ दी जा रही हैं।

इन कहानियों को पढ़ कर तुम सबको लगेगा कि इनमें से सिन्डरैला कुछ कहानियॉ तो तुम्हारी सुनी या पढ़ी हुई कहानी से कितनी मिलती जुलती हैं पर कुछ कहानियॉ उनसे कितनी अलग भी हैं।

और कुछ कहानियॉ तो इनमें ऐसी हैं जो सिन्डरैला की तुम्हारी पढ़ी हुई कहानियों से बिल्कुल ही नहीं मिलतीं। पर फिर भी वे सब सिन्डरैला की कहानियों जैसी ही हैं।

यह सब जानना कितना अच्छा लगता है कि एक ही कहानी अलग अलग जगह पर अलग अलग समाज में कितने अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती है। तो लो पढ़ो एक ही कहानी के कई रंग – "सिन्डरैला यूरोप में–**1**" पुस्तक का पहला भाग।

1 सिन्डरैला[11]

सिन्डरैला की यह कहानी बहुत पुरानी है, 18वीं सदी की। इसकी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक अमीर आदमी की पत्नी बहुत बीमार पड़ गयी और इतनी बीमार पड़ी कि उसके जीने की कोई उम्मीद ही नहीं रही। उनकी एक बेटी थी।

मरते समय पत्नी ने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "बेटी, देखो सबके साथ हमेशा भली रहना। हमारे भगवान तुम्हारी हमेशा रक्षा करेंगे। मैं तुमको हमेशा ही ऊपर स्वर्ग से देखती रहूँगी और हमेशा तुम्हारे पास ही रहूँगी।"

यह कह कर उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और वह मर गयी। बच्ची रोज अपनी मॉ की कब्र पर जाया करती थी और वहॉ जा कर रोती रहती थी। वह अपनी मॉ के कहे अनुसार सबके साथ भले ढंग से रहती थी।

जब जाड़ा आया तो बर्फ पड़ी और उसकी मॉ की कब्र बर्फ से ढक गयी। उसके बाद वसन्त आया तो वह बर्फ पिघल गयी और उस बच्ची के पिता ने दूसरी शादी कर ली।

---

[11] Cinderella – a fairy tale from Germany, Europe. By Jacob and Wilhelm Grimms, in "Children's and Household Tales", 7th ed. 1857. Translated by DL Ashliman. 1857 edition was the last edition of this tale. The Grimms Brothers took this story from the stories written by Dorothea Viehmann (1755-1815), and other sources. This story can be read in English at the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/grimm021.html

उसकी सौतेली मॉ अपने साथ अपनी दो बेटियों को भी ले कर आयी थी।

उसकी अपनी दोनों बेटियॉ बहुत सुन्दर थीं। उनका रंग गोरा था पर उनके दिल वहुत बुरे और काले थे। उन सबके आने के बाद जल्दी ही उस बच्ची के लिये समय बुरा समय आ गया।

वे लड़कियॉ कहतीं रहतीं — "यह बेवकूफ बरामदे में हमारे साथ क्यों बैठती है?" "अगर उसको रोटी खानी है तो उसको कमाना भी होगा।" "इस घर में काम करने वाली को हमसे दूर रखो।" आदि आदि।

सिन्डरैला के अच्छे कपड़े उससे छीन लिये गये और पहनने के लिये उसको भूरे रंग की एक पुरानी पोशाक और लकड़ी के जूते दे दिये गये।

फिर उसकी सौतेली मॉ की वे लड़कियॉ उसका मजाक बनाती हुई और उसको रसोईघर में ले जाती हुई कहती — "देखो तो यह कितनी सजी हुई लग रही है।"

वहॉ उसको सुबह से शाम तक सारा दिन बहुत सारा काम करना पड़ता। वह सुबह सवेरे दिन निकलने से भी पहले उठती। घर के लिये पानी लाती, आग जलाती, फिर घर भर के लिये खाना पकाती और बरतन साफ करती। घर की सफाई भी वही करती।

इसके अलावा उसकी बहिनें उसको तंग करने के लिये जो कुछ भी वे कर सकती थीं करतीं। वे उसका मजाक बनातीं। मटर और

मसूर के दाने राख में बिखेर देतीं ताकि वह उनको बैठ कर फिर से चुन कर अलग कर सके।

शाम को जब वह काम कर के थक जाती तब उसको सोने के लिये कोई पलंग भी नहीं मिलता। उसको अंगीठी के पास पड़ी राख के पास ही सोना पड़ता। और क्योंकि वह हमेशा धूल से भरी और मैली दिखायी देती सो सब उसको सिन्डरैला कहने लगे।

एक बार उसका पिता बाहर किसी मेले में जा रहा था। उसने उसकी दोनों सौतेली बहिनों से पूछा कि वह उनके लिये वहॉ से क्या ले कर आये।

एक ने कहा — "सुन्दर पोशाकें।"

दूसरी ने कहा — "मोती और जवाहरात।"

"और तुम सिन्डरैला? तुमको क्या चाहिये?"

सिन्डरैला बोली — "पिता जी मेरे लिये तो जब आप घर लौट रहे हों तो किसी भी पेड़ की कोई भी छोटी सी शाख जो सबसे पहले आपके टोप से टकराये बस वही ले आना।"

सो जब वह उस मेले से लौटा तो अपनी दोनों बेटियों के लिये सुन्दर पोशाकें, मोती और जवाहरात लाया। जब वह वापस आ रहा था तो जंगल में एक हैज़ल नट[12] के पेड़ की डंडी उसके टोप से टकरा गयी।

[12] Hazel Nut – is a nut. See its picture above

उसको सिन्डरैला का ध्यान आया कि उसने उस पेड़ की एक शाख मॅगवायी थी जिसकी शाख उसके टोप से सबसे पहले टकरा जाये और उसने उस पेड़ की वह डंडी तोड़ ली और उसके लिये ले आया। घर आ कर उसने जिस जिसके लिये जो जो चीज़ ले कर आया था वह वह उसको दे दी।

सिन्डरैला ने अपने पिता को धन्यवाद दिया और उस डंडी को ले कर अपनी मॉ की कब्र पर गयी और वहॉ जा कर उसने उस डंडी को उसकी कब पर लगा दिया। दिनों दिन वह डंडी बढ़ने लगी।

सिन्डरैला वहॉ दिन में तीन बार जाती थी और उस शाख के पास बैठ कर रोती रहती और भगवान से प्रार्थना करती रहती।

जब भी वह वहॉ होती तो हर बार वहॉ एक सफेद चिड़िया आती और अगर वह कोई अपनी इच्छा बोलती तो वह चिड़िया उस चीज़ को नीचे फेंक देती जो वह चाहती और इस तरह वह उसकी इच्छा पूरी कर देती।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि वहॉ के राजा ने यह मुनादी पिटवायी कि उसके किले में एक उत्सव मनाया जायेगा जो तीन दिन तक चलेगा। देश की सारी सुन्दर लड़कियों को उस उत्सव में हिस्सा लेने के लिये बुलाया गया।

यह उत्सव इसलिये मनाया जा रहा था ताकि राजा का बेटा अपने लिये दुलहिन चुन सके। सिन्डरैला की सौतेली बहिनों ने जब

यह सुना कि उनको भी उस उत्सव में बुलाया गया है तो वे बहुत खुश हुईं।

उन्होंने सिन्डरैला को बुलाया और कहा — "तुम हमारे बालों में कंघी करो, हमारे जूते पालिश करो और हमारी पोशाक के बटन लगाओ। हम राजा के किले में होने वाले उत्सव में जा रहे हैं।"

सिन्डरैला ने उनका कहना मान तो लिया पर उसको रोना भी आ गया क्योंकि वह भी उनके साथ उस नाच में जाना चाहती थी पर उसको कोई जाने के लिये नहीं कह रहा था।

उसने अपनी सौतेली मॉ से बहुत प्रार्थना की कि वह उसको भी उनके साथ जाने दे पर सौतेली मॉ ने उसको झिड़का — "तुम सिन्डरैला तुम? तुम धूल से भरी और गन्दी? और तुम उस उत्सव में जाना चाहती हो? नहीं नहीं तुम वहॉ नहीं जा सकतीं।"

सिन्डरैला बेचारी अपनी मॉ से जिद करती रही तो आखिर मॉ ने कहा — "मैंने मसूर राख में बिखेर दी है अगर तुम उसको दो घंटे में चुन लो तो तुम हमारे साथ जा सकती हो।"

सिन्डरैला अपने घर के पीछे के दरवाजे से निकल कर बाहर बागीचे में पहुॅची और बोली — "ओ मेरे पालतू कबूतरों, फाख्ताओं और आसमान के नीचे उड़ने वाली सारी चिड़ियों, आओ और मेरी सहायता करो।"

अच्छी अच्छी बरतन में जाओ, और खराब वाली खेत में जाओ

तभी दो सफेद कबूतर रसोईघर की खिड़की से अन्दर रसोईघर में आये। उनके बाद फाख्ताऐं और फिर बहुत सारी चिड़ियॉ वहॉ पड़ी राख के चारों तरफ इकट्ठा हो गयीं। उन सबने मिल कर मसूर के सब अच्छे दाने राख में से बीन कर बरतन में डाल दिये।

एक घंटे से पहले पहले ही उन्होंने अपना काम खत्म कर दिया। काम खत्म करने के बाद वे सब चिड़ियें वहॉ से उड़ कर बाहर चली गयीं।

सिन्डरैला वह बरतन उठा कर अपनी सौतेली मॉ के पास यह सोचते हुए ले गयी कि शायद अब उसकी मॉ उसको जाने देगी।

पर उसकी मॉ ने कहा — "नहीं सिन्डरैला नहीं। तुम्हारे पास तो वहॉ जाने के लायक ठीक से कपड़े भी नहीं हैं और फिर तुमको नाचना भी तो नहीं आता। वहॉ हर कोई तुम पर हॅसेगा। नहीं नहीं तुम वहॉ नहीं जा सकतीं।"

यह सुन कर सिन्डरैला रोने लगी। यह देख कर उसकी मॉ यह सोच कर कि वह यह काम तो कभी पूरा नहीं कर पायेगी बोली — "ठीक है तुम वहॉ जा सकती हो अगर तुम एक घंटे में राख में से दो बरतन मसूर चुन दोगी तो।"

यह सुन कर सिन्डरैला जाने की खुशी में फिर से बाहर बागीचे में भागी गयी और पहले की तरह से चिड़ियों को बुलाया — "ओ मेरे पालतू कबूतरों, फाख्ताओं और आसमान के नीचे उड़ने वाली सारी चिड़ियों, आओ और मेरी सहायता करो।"

अच्छी अच्छी बरतन में जाओ, और खराब वाली खेत में जाओ

तभी दो सफेद कबूतर फिर रसोईघर की खिड़की से अन्दर रसोईघर में आये और उनके बाद फाख्ताऐं और फिर बहुत सारी चिड़ियॉ वहॉ पड़ी राख के चारों तरफ इकट्ठा हो गयीं। उन सबने मिल कर फिर से मसूर के सब अच्छे दाने बरतन में डाल दिये।

एक घंटे से पहले ही उन्होंने अपना काम खत्म कर दिया। काम खत्म करने के बाद वे सब चिड़ियें वहॉ से उड़ कर बाहर चली गयीं।

वह लड़की बेचारी यह सोचते हुए खुशी खुशी फिर से वे बरतन अपनी मॉ के पास ले कर गयी कि शायद अब उसकी मॉ उसको उत्सव में जाने की इजाज़त दे देगी।

पर उसकी सौतेली मॉ ने कहा — "नहीं नहीं, इस सबसे कोई फायदा नहीं। तुम हमारे साथ नहीं चल रही हो। क्योंकि तुम्हारे पास तो वहॉ पहनने के लायक कपड़े ही नहीं हैं और तुमको नाचना भी नहीं आता। अगर तुम जाओगी तो तुम्हारी वजह से हमें बड़ी शरमिन्दगी उठानी पड़ेगी।"

यह कह कर उसने सिन्डरैला की तरफ से मुँह फेरा और अपनी दोनों बेटियों को ले कर राजा के यहॉ उत्सव में चली गयी।

अब घर पर सिन्डरैला अकेली थी सो वह अपनी मॉ की कब्र पर गयी और हैज़ल नट के पेड़ के नीचे बैठ कर रोने लगी। वह बोली —

ओ पेड़ तुम हिलो और मुझे सोना और चॉदी नीचे फेंको

तभी वहॉ पर वह सफेद चिड़िया आयी और उसने एक सुनहरी और रुपहली पोशाक नीचे फेंक दी। वह एक जोड़ी जूते भी लायी थी जो चॉदी के तारों और रेशम से कढ़े हुए थे। सिन्डरैला ने वह पोशाक और जूते उठाये और उनको पहन कर राजा के यहॉ उत्सव में चली गयी।

उसकी सौतेली मॉ और बहिनों ने उसको पहचाना नहीं। उन्होंने सोचा कि यह लड़की शायद किसी दूसरे देश की राजकुमारी है क्योंकि वह उस सुनहरी पोशाक में बहुत सुन्दर लग रही थी। उनके दिमाग में यह एक बार भी नहीं आया कि वह सिन्डरैला हो सकती है।

वे तो बस यही सोच रही थीं कि सिन्डरैला तो घर में अपनी मैली कुचैली पोशाक पहने राख में से मसूर के दाने ढूँढ रही होगी।

राजकुमार उसके पास आया और उसका हाथ पकड़ कर ले गया और उसके साथ नाचना शुरू कर दिया। और जब उसके साथ उसने नाचना शुरू किया तो वह फिर किसी और के साथ नाचने के लिये तैयार ही नहीं हुआ।

उसने फिर उसका हाथ ही नहीं छोड़ा। अगर कोई दूसरा उसके संग नाचने के लिये आया भी तो उसने उसको यही कहा कि "आज यही मेरे नाच की साथी है।"

वे दोनों रात गये तक नाचते रहे। जब काफी रात हो गयी तो लड़की बोली कि अब वह घर जाना चाहती है।

राजकुमार बोला — "चलो मैं तुम्हारे साथ चल कर तुमको तुम्हारे घर छोड़ आता हूँ।" असल में वह यह जानना चाहता था कि वह कहाँ रहती है और किसकी बेटी है।

पर सिन्डरैला उसको धोखा दे कर पास में बने कबूतर के घर में कूद पड़ी। राजकुमार वहाँ तब तक इन्तजार करता रहा जब तक उस लड़की का पिता उसको ढूँढता हुआ वहाँ आया।

वह तो उस लड़की को ढूँढने में राजकुमार की सहायता करने आया था। जब वह वहाँ आया तो राजकुमार ने उसको बताया कि एक अनजानी लड़की कबूतर के घर में कूद तो गयी है पर उसके बाद से उसका पता नहीं है।

उस आदमी ने सोचा "क्या वह सिन्डरैला हो सकती है?"

उसने राजकुमार से एक कुल्हाड़ी मँगवायी ताकि वह उस कबूतर के घर को तोड़ सके। कुल्हाड़ी आ गयी और उसने कबूतर का घर तोड़ भी दिया पर वहाँ तो कोई भी नहीं था।

जब वे सब घर लौटे तो उन्होंने देखा कि सिन्डरैला तो रसोईघर में अपने मैले कुचैले कपड़े पहन कर आग के पास राख में पड़ी है और अंगीठी पर रखा एक लैम्प बहुत ही धीमे धीमे जल रहा है।

असल में सिन्डरैला जैसे ही कबूतर के घर पर कूदी थी वैसे ही वह वहॉ से अपने हैज़ल नट के पेड़ की तरफ भाग गयी। वहॉ पहुँच कर उसने अपने बढ़िया वाले कपड़े उतारे और कब्र पर रख दिये।

वे अच्छे कपड़े वह चिड़िया वहॉ से उठा कर ले गयी और सिन्डरैला अपने पुराने वाले कपड़े पहन कर घर चली आयी।

अगले दिन राजमहल में उत्सव फिर से शुरू हुआ। उसके माता पिता और उसकी सौतेली बहिनें फिर से वहॉ गयीं तो सिन्डरैला फिर से अपने हैज़ल नट के पेड़ के पास पहुँच गयी और बोली —

ओ पेड़ हिलो, और मुझे सोना और चॉदी नीचे फेंको

तभी वहॉ पर वह सफेद चिड़िया फिर से आयी और उसने पिछले दिन से भी सुन्दर एक और पोशाक नीचे फेंक दी। सिन्डरैला ने तुरन्त वह पोशाक पहनी और उत्सव में भाग गयी।

जैसे ही लोगों ने सिन्डरैला को उस सुन्दर पोशाक में देखा तो सब उसकी सुन्दरता की तारीफ करने लगे। राजकुमार भी बस जैसे उसके आने का इन्तजार ही कर रहा था। उसके आते ही उसने सिन्डरैला का हाथ पकड़ा और उसके साथ नाचना शुरू कर दिया।

उस रात भी उसने फिर उसका हाथ नहीं छोड़ा। अगर कोई दूसरा उसके संग नाचने के लिये आया भी तो उसने उसको यही कहा कि "आज यही मेरे नाच की साथी है।"

जब रात हो आयी तो सिन्डरैला ने कहा कि वह अब घर जाना चाहती है। राजकुमार यह देखने के लिये फिर उसके पीछे पीछे चला कि वह किस घर में जाती है। पर वह जल्दी से वहॉ से घर के पीछे वाले बागीचे में भाग गयी।

बगीचे में नाशपाती का एक ऊँचा सा पेड़ खड़ा था जिस पर बहुत ही सुन्दर नाशपाती लगी हुई थीं। सिन्डरैला उस पेड़ पर एक गिलहरी की तरह से चढ़ गयी और उस पेड़ की शाखों में छिप गयी।

राजकुमार को पता भी नहीं चला कि वह लड़की कहॉ गयी। सिन्डरैला का पिता एक बार फिर राजकुमार की सहायता के लिये आया और जब वह वहॉ आया तो राजकुमार ने उससे कहा "इस बार भी वह हमको धोखा दे गयी। पर मुझे लगता है कि वह इस नाशपाती के पेड़ पर चढ़ गयी है।"

पिता ने फिर सोचा "क्या यह सिन्डरैला हो सकती है?"

अबकी बार वह कुल्हाड़ी अपने साथ लाया था सो उसने उस कुल्हाड़ी से वह पेड़ काट डाला पर वहॉ तो कोई भी नहीं था।

जब वे सब घर लौट कर आये तो सबने फिर देखा कि सिन्डरैला तो वहीं रसोई घर में अपने मैले कुचैले कपड़े पहन कर

राख में पड़ी है और एक लैम्प अंगीठी पर बहुत ही धीमे धीमे जल रहा है।

क्योंकि जैसे ही सिन्डरैला पेड़ पर चढ़ी थी वह तुरन्त ही पेड़ के दूसरी तरफ नीचे उतर गयी। दौड़ी दौड़ी वह फिर अपनी मॉ की कब्र पर गयी, चिड़िया को अच्छी वाली पोशाक वापस की और अपनी पुरानी पोशाक पहन कर घर वापस आ कर अपनी जगह लेट गयी।

तीसरे दिन फिर जब उसके माता पिता और बहिनें उस उत्सव में चले गये तो तो सिन्डरैला फिर से अपने हैज़ल नट के पेड़ के पास पहुॅच गयी और बोली —

ओ पेड़ हिलो, और मुझे सोना और चॉदी नीचे फेंको

तभी वह सफेद चिड़िया वहॉ पर फिर से आयी और उसने पिछले दो दिनों से भी ज़्यादा सुन्दर एक पोशाक नीचे फेंक दी। अब की बार वह जो जूते ले कर आयी थी वे खालिस सोने के थे। सिन्डरैला ने तुरन्त वह पोशाक और जूते पहने और उत्सव में भाग लेने के लिये भाग गयी।

जब रात होने लगी तो सिन्डरैला फिर से अपने घर जाना चाहती थी तो राजकुमार ने फिर से उसके साथ जाना चाहा पर वह वहॉ से फिर से इतनी तेज़ी से भाग गयी कि राजकुमार उसका पीछा ही नहीं कर सका।

पर राजकुमार ने अबकी बार उसको पकड़ने के लिये एक जाल बिछा रखा था। उसने अपनी सीढ़ियों पर गोंद लगा दिया था ताकि जब वह लड़की वहॉ से भागे तो वह वहीं की वहीं चिपक जाये सो जब सिन्डरैला वहॉ से भागी तो उसके बॉये पैर का जूता उस गोंद से चिपक गया।

वह अपना जूता उस गोंद से छुड़ा ही नहीं सकी सो उसको अपना वह जूता वहीं छोड़ना पड़ा और केवल एक ही जूता पहन कर वहॉ से भाग जाना पड़ा।

राजकुमार ने उसका वह चिपका हुआ जूता उठा लिया। वह जूता छोटा था, सुन्दर था और खालिस सोने का बना था।

अगले दिन वह उस आदमी के पास गया जो उस लड़की ढूँढने में उसकी सहायता करने आया था और उसको वह जूता दिखा कर बोला — "जिस लड़की के पैर में यह जूता आ जायेगा वही लड़की मेरी पत्नी बनेगी।"

सिन्डरैला की दोनों सौतेली बहिनें यह सुन कर बहुत खुश हुईं क्योंकि उनके पैर बहुत सुन्दर थे।

बड़ी बेटी उस जूते को अपने सोने वाले कमरे में ले गयी और उसमें अपना पैर घुसाने की कोशिश करने लगी तो उसमें तो उसके पैर का अँगूठा भी नहीं घुसा।

जब वह जूता पहनने की कोशिश कर रही थी तो उसकी मॉ भी उसके पास ही खड़ी थी। उसने देखा कि वह जूता तो उसके लिये बहुत ही छोटा था।

यह देख कर मॉ ने एक चाकू निकाल कर उसको देते हुए कहा — "लो यह चाकू लो और अपना अँगूठा काट दो क्योंकि जब तुम रानी बन जाओगी तब तुमको पैदल चलने की तो जरूरत ही नहीं पड़ेगी।"

मॉ की बात मान कर लड़की ने अपना अँगूठा काट दिया और दर्द सहते हुए अपने पैर को उस जूते में ठूँस दिया। जूता पहन कर वह राजकुमार को दिखाने के लिये उसके पास गयी।

राजकुमार ने देखा कि जूता उसके पैर में आ गया था सो उसने उस लड़की को अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल ले चला।

जाते समय उनको सिन्डरैला की मॉ की कब्र के पास से गुजरना पड़ा। उस कब्र के पास लगे हैज़ल नट के पेड़ के ऊपर दो कबूतर बैठे थे वे चिल्लाये —

गुटर गूँ गुटर गूँ, जूते में खून है
जूता बहुत कसा हुआ है, यह दुलहिन ठीक नहीं है

यह सुन कर राजकुमार ने उस लड़की का पैर देखा तो देखा कि सचमुच ही उस लड़की के पैर से तो खून निकल रहा था। उसने

अपना घोड़ा मोड़ लिया और उसको यह कह कर उसके घर छोड़ दिया कि वह उसके लायक दुलहिन नहीं थी।

तब उसने दूसरी बहिन को वह जूता पहन कर देखने के लिये कहा। वह भी उस जूते को अपने सोने वाले कमरे में ले गयी और उसको पहनने की कोशिश करने लगी पर उसकी एड़ी बहुत बड़ी थी सो वह भी उसको नहीं पहन सकी।

यह देख कर उसकी मॉ ने उसको भी एक चाकू दिया और उससे अपनी एड़ी काटने के लिये कहा कि रानी बनने के बाद तो उसको पैदल चलने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

लड़की ने अपनी एड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा काट दिया और किसी तरह से अपना पैर उस जूते के अन्दर घुसा दिया।

जब वह बाहर राजकुमार को जूता दिखाने आयी तो राजकुमार ने देखा कि उसके पैर में तो वह जूता आ गया है तो उसने उसको अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल ले चला।

वह फिर से सिन्डरैला की मॉ की कब्र के पास से गुजरा तो हैज़ल नट के पेड़ पर बैठे दो कबूतर फिर चिल्लाये —

गुटर गूँ गुटर गूँ, जूते में खून है
जूता बहुत कसा हुआ है, यह दुलहिन ठीक नहीं है

यह सुन कर राजकुमार ने उस लड़की का पैर देखा तो देखा कि सचमुच ही उसके पैर से खून निकल रहा था। उस खून से उसका सफेद मोजा लाल हो गया था।

राजकुमार ने अपना घोड़ा फिर मोड़ लिया और उस लड़की को यह कह कर उसके घर छोड़ दिया कि वह उसके लायक दुलहिन नहीं थी।

फिर उसने उनके पिता से पूछा — "क्या आपके कोई और बेटी भी है?"

उनका पिता बोला — "नहीं। पर हॉ मेरी एक बेटी है जो मेरी पहली पत्नी से है पर वह तुम्हारी पत्नी बनने के लायक नहीं है।"

राजकुमार ने उससे कहा कि वह उसको वहॉ बुला दे।

पर मॉ बोली — "पर वह तो बहुत गन्दी है। उसको तो तुम देखना भी पसन्द नहीं करोगे।"

पर राजकुमार ने जिद की कि उनको उस लड़की को बुलाना ही होगा। सो उनको सिन्डरैला को बुलाना ही पड़ा। सिन्डरैला ने अपने हाथ और चेहरा धो कर साफ किया। फिर राजकुमार के सामने जा कर सिर झुका कर खड़ी हो गयी।

राजकुमार ने उसको वह सोने का जूता पहनने के लिये दिया। वह एक नीचे स्टूल पर बैठ गयी और अपना बॉया पैर अपने भारी लकड़ी के जूते से बाहर निकाला। फिर उसने वह सोने का जूता पहना तो वह तो उसके पैर में बिल्कुल ठीक आ गया।

जब वह जूता पहन कर खड़ी हुई तो राजकुमार ने उसके चेहरे की तरफ देखा तो उसको पहचान लिया कि यह तो वही लड़की थी जिसके साथ उसने नाच किया था।

उसकी सौतेली मॉ और सौतेली बहिनें यह देख कर डर गयीं और गुस्से से लाल पीली हो गयीं। पर राजकुमार ने सिन्डरैला को अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल ले चला।

जब वह हैज़ल नट के पेड़ के पास से गुजरा तो उस पेड़ पर बैठे दोनों सफेद कबूतर चिल्लाये —

गुटर गूँ गुटर गूँ, जूते में कोई खून नहीं है
जूता भी बहुत कसा हुआ नहीं है और दुलहिन भी ठीक है।

यह कह कर वे उड़े और सिन्डरैला के दोनों कन्धों पर जा कर बैठ गये – एक बॉये कन्धे पर और दूसरा दॉये कन्धे पर और तब तक वहीं बैठे रहे जब तक वह राजमहल पहुँची।

जब राजकुमार की शादी सिन्डरैला से हुई तो उसकी दोनों सौतेली बहिनें भी आयीं ताकि वे सिन्डरैला से उसकी कुछ दया ले सकें और उससे कुछ पैसे ले सकें।

जब राजकुमार और सिन्डरैला शादी के लिये चर्च में अन्दर गये तो उसकी बड़ी बहिन उसके दॉयी तरफ चली और उसकी छोटी बहिन उसके बॉयी तरफ चली। तो सिन्डरैला के कन्धों पर बैठे दोनों कबूतरों ने उन दोनों बहिनों की एक एक ऑख निकाल ली।

बाद में जब वे चर्च से बाहर आये तब बड़ी वाली बहिन सिन्डरैला के बॉयी तरफ थी और छोटी वाली बहिन दॉयी तरफ। कबूतरों ने उस समय भी उन दोनों बहिनों की एक एक ऑख निकाल ली।

इस तरह उन दोनों नीच बहिनों को अपने किये का फल मिला और वे सारी ज़िन्दगी अन्धी ही रहीं।

2 ओवन साफ करने वाली[13]

सिन्डरैला जैसी कहानियों के इस कहानी संग्रह में यह कहानी यूरोप महाद्वीप के बेल्जियम देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि ब्रसैल्स[14] में एक राजा रहता था। उसके तीन बेटियॉ थीं। एक दिन उसने यह जॉचने की कोशिश की कि उन तीनों में से उसे सबसे ज़्यादा प्यार कौन करता है।

जब उसने यह सवाल अपनी तीनों बेटियों से पूछा तो उसकी सबसे बड़ी बेटी ने जवाब दिया कि वह उसको अपनी ऑखों की पुतली की तरह से प्यार करती है।

उसकी बीच वाली बेटी ने कहा कि वह उसे अपनी जान की तरह से प्यार करती है। उसकी छोटी बेटी अपने दूध के दलिये में नमक डाल रही थी सो वह बोली वह उसको नमक की तरह प्यार करती है।

यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हो गया और उसको उसने घर से बाहर निकाल दिया। उसे अपने साथ केवल तीन पोशाक और तीन जोड़ी जूते ले जाने की इजाज़त दी गयी। उसने एक पोशाक नीली साटिन की ली एक पोशाक लाल साटिन की ली और एक पोशाक सफेद साटिन की ली और चल दी।

---

[13] Vuitji-Vegt-Den-Oven (She Sweeps the Oven). A Cinderella story from Brussels, Belgium. 1868. From Cox, MR. (1893/2011) p 306.

[14] Brussells is the capital of Belgium

वह चलती रही चलती रही जब तक वह थक नहीं गयी। फिर वह एक खोखले पेड़ में आराम करने बैठ गयी। बैठते ही वह सो गयी।

सुबह उसको एक किसान की बेटी मिली। उसने अपनी वह पोशाक जो वह पहन कर यात्रा कर रही थी उसको दे कर उसका फटी हुई पोशाक ले ली। अपनी पोशाकें उसने पेड़ के खोखले में छिपा दीं।

उसके बाद वह पास वाले किले में गयी और वहॉ जा कर काम मॉगा। वहॉ उसको रसोईघर में एक जगह दे दी गयी और उसको बहुत सारे नीचे काम करने के लिये दे दिये गये।

जब रविवार आया तो उसने चर्च जाने के लिये इजाज़त मॉगी तो रसोइया बोला कि वह चर्च जा सकती है इस शर्त पर कि वह कि वह किसी ऐसे कोने में चर्च में घुटने टेक कर बैठे जहॉ उसे कोई देख न सके।

अब तक लड़की "ओवन साफ करने वाली" के नाम से जानी जाने लग गयी थी। वह तुरन्त ही उस पेड़ के खोखले की तरफ भागी गयी जहॉ उसने अपनी पोशाकें छिपायी थीं। वहॉ पहुँच कर उसने अपना नीली पोशाक और नीले जूते पहने और चर्च चली गयी।

वहॉ जा कर वह एक ऐसी जगह बैठ गयी जहॉ उसके पास ही "किले का बेटा" बैठा हुआ था।

जब चर्च की पूजा खत्म हो गयी ओवन साफ करने वाली वहॉ से चल दी पर उसका एक जूता वहीं रह गया। राजकुमार बड़ा निराश हुआ उसने वह छोटा सा जूता अपने हाथ में ले लिया और सारे घर को दिखाया पर वह किसी के पैर नहीं आया।

फिर उसने उसे नौकरानियों को पहनने को दिया सो जब ओवन साफ करने की बारी आयी तो वह तो उसके पैर में बड़े अच्छे से आ गया। रानी मॉ बोलीं — "अरे ओवन साफ करने वाली तुम्हारे पैर तो बहुत सुन्दर हैं।"

अगले रविवार को लोग फिर से चर्च जाने के लिये तैयार हुए। इस बार ओवन साफ करने वाली ने लाल साटिन की पोशाक पहनी और वैसे ही दस्ताने पहने। इस बार जब पूजा खत्म हो गयी तो वह फिर वहॉ से भागी पर जल्दी में एक दस्ताना गिरा आयी।

राजकुमार ने फिर से सबको उस दस्ताने को पहनने के लिये कहा। चर्च की सब स्त्रियों ने उसको पहनने की कोशिश की पर वह किसी के नहीं आया। सो एक बार फिर से नौकरानियों को उसे पहनने के लिये कहा गया।

जब ओवन साफ करने वाली की बारी आयी तो वह दस्ताना उसके हाथ में बिल्कुल ठीक आ गया। अब दस्ताना तो उसी का था न।

रानी मॉ ने कहा — "ओवन साफ करने वाली तुम्हारे हाथ बहुत सुन्दर हैं।"

अगले रविवार को फिर सब लोग चर्च जाने के लिये तैयार हुए। ओवन साफ करने वाली भी तैयार हुई। इस बार उसने सफेद साटिन की पोशाक पहनी और अपनी हर उँगली में हीरे की अँगूठी पहनी।

पूजा खत्म होने के बाद जब वह वहाँ से चली तो राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ लिया। वह उसकी उँगली से एक अंगूठी खींचने में सफल हो जाता है। जब वह उस अँगूठी को अपने घर की स्त्रियों को पहनने के लिये देता है पर वह उनमें से किसी की उँगली में ठीक से नहीं आती।

पहले की तरह उन सबके बाद वह अँगूठी नौकरानियों को पहनने के लिये दी जाती है तो वह ओवन साफ करने वाली की उँगली में आ जाती है। राजकुमार ने सोचा कि क्या वह उस अजनबी लड़की को जानता है जो चर्च आती है।

ओवन साफ करने वाली कहती है कि वह उस लड़की को जानती है और यह भी जानती है कि वह कहाँ रहती है। कह कर वह अपने पेड़ की तरफ भाग गयी। वहाँ वह तैयार हुई और एक गाड़ी में सवार हो कर किले की तरफ भागती है।

इस बीच राजकुमार अपनी माँ से इजाज़त माँग लेता है कि वह उस चर्च वाली लड़की से शादी करना चाहता है अगर वह मिल जाये तो। उसकी माँ राजी हो जाती है। तभी ओवन साफ करने वाली लड़की अपने साटिन की पोशाक पहने आती है।

राजकुमार उसे तुरन्त ही पहचान गया और दोनों की शादी हो जाती है। तब वह उसे बताती है कि वह भी वास्तव में एक राजा की बेटी है। बस उसको वहॉ से निकाल दिया गया है।

वे दोनों लड़की के पिता के महल जाते हैं तो देखते हैं कि वह तो बहुत गरीब हो गया है। उसकी अपनी बड़ी बहिनों ने उसको जानबूझ कर उसको महल से निकलवाया था। अब वे भी वहॉ से चली गयी थीं।

तब ओवन साफ करने वाली अपने पति के साथ अपने पिता के महल में आ कर रहती है। फिर वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे जब तक राजा मर नहीं गया। राजकुमार और उसकी पत्नी जो अब ओवन साफ नहीं करती थी उस देश में बहुत दिनों तक राज करते रहे।

3 तीन सन्तरे[15]

सिन्डरैला जैसी कहानियों के इस संग्रह में य्ह कहानी कोर्सिका टापू की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि कोर्सिका टापू पर एक लावारिस लड़की रहती थी। उसका नाम इसाबैल था। उसकी मॉ बहुत साल पहले ही मर गयी थी और उसका पिता कुछ ही साल पहले मरा था।

मरने से पहले उसने एक और शादी की थी। उसकी दूसरी पत्नी अपने साथ एक लड़की ले कर आयी थी जो देखने भालने और स्वभाव में अपनी मॉ जैसी थी और अफसोस उसकी मॉ इन दोनों बातों में ही अच्छी नहीं थी।

उसकी बेटी एक बहुत ही बिगड़ी हुई बच्ची की तरह से बड़ी हुई थी और यह बात उसके चेहरे से ही पता चलती थी। इन दोनों मॉ बेटी के पास एक चीज़ ऐसी थी जो उस लड़की इसाबैल के पास नहीं थी और वह था सुनहरा फल।

---

[15] The Three Oranges. A Cinderella folktale from Corsica. 1883. Corsica Island is a part of France. From: Cox, MR. Story Number 245. Identified as from “Les Contes Populaire de l'Ile de Corse”, Ortoli, JB Frederic. 1883. Paris.
Notes: This story parallels closely another recent one, “The Princess of the Third Pumpkin”. In that tale as well, a young prince and three fruits are involved. There, it is the prince who is sent into the garden to pick three pumpkins off of the same vine. As he cuts each one off, a naked girl jumps out and begs for a drink of water. Here, the story does not specify what it is that each of the "tiny people" are wearing. The similarities between oranges and pumpkins are superficial but significant: both are orange spheres.

अपने मरने से पहले उसका पिता फल का व्यापारी था। उसके बागीचे में बहुत सारे खट्टे फल होते थे जिनकी सानी का कोई फल नहीं था।

इससे उसकी पत्नी और उसकी बेटी आराम से रह सकते थे। पर उसकी अपनी बेटी नहीं। जैसे ही इसाबैल इतनी बड़ी हुई कि वह एक बालटी बिना उसमें रखी चीज़ को गिराये हुए उठा कर ले जा सके उसको काम पर लगा दिया।

हालॉकि उसकी मॉ के हाथ की पोशाक को बनाये हुए **20** साल बीत चुके थे पर फिर भी उसके पास पहनने के लिये कोई और कपड़ा नहीं था।

जाड़े के दिनों में उसके पैर लकड़ी के जूतों में ठंड से नीले पड़े रहते और वह रसोईघर का सब काम जल्दी जल्दी करती इधर उधर आग के पास दौड़ती रहती।

वह हमेशा कॉपती रहती सो उसको अपने पैर हमेशा राख के पास रखना ही अच्छा लगता जो लकड़ी में से गिरती रहती थी। यह उसका काम था कि वह जंगल से लकड़ी ला कर रखे और यह देखे कि रसोईघर में आग जलती रहे।

हर शाम वह अपना ऐप्रन लकड़ियों से भरती और घर ले कर आती। उनको भट्टी के पास रख कर वह बिल्ली की तरह से अपने आपको फैला कर लेट जाती। उसके हाथ और उसका ऐप्रन दोनों राख से भर जाते।

एक दिन ऐसा हुआ कि उसकी सौतेली मॉ उस पर रोज से दोगुना ज़ोर से गुस्सा हुई। उस दिन वह लड़की बेचारी सारा दिन इधर से उधर भागती दौड़ती रही थी। उस दिन शाम को एक बहुत ही खास मेहमान खाना खाने आ रहा था – एक नौजवान राजकुमार।

उसने उनके सन्तरों के बारे बहुत सुना था सो वह खुद उनके सन्तरे खाने के लिये वहॉ आ रहा था। जब उसने फल खा लिये तो उसने उन पेड़ों को देखने की इच्छा प्रगट की। अब वह स्त्री तो एक व्यापारी थी उसने उसको पेड़ों के साथ साथ उसको एक फूल और दिखाने का सुझाव दिया।

वास्तव में इसी लिये उसने उसको खाना खाने की दावत दी थी। उसने यह भी सोच रखा था कि उस शाम उसकी अपनी बेटी एक फूल सी खिली दिखायी दे। इसाबैल की सौतेली मॉ ने उसके लिये भी कुछ सोच रख था।

जैसे ही लड़की ने अपना रोज का काम खत्म कर लिया उसकी सौतेली मॉ को पता था कि वह अब भट्टी के पास जा कर बैठ जायेगी सो उसने तय किया "आज नहीं। आज की रात मैं उसे अपनी ऑखों से दूर रखूँगी।"

उसने उसको नीचे वाले कमरे में से सन्तरे लाने के लिये भेज दिया। जैसे ही वह अन्दर गयी उसने उसका दरवाजा धड़ाम से बन्द

कर दिया और चाभी घर में फेंक दी। वह लड़की बेचारी चिल्लाती रह गयी।

उसकी चिल्लाहट रसोईघर से साफ सुनी जा सकती थी पर रसोईघर में तो राजकुमार जाने वाला था नहीं।

खाना ठीक से निबट गया। राजकुमार का पेट बढ़िया स्वादिष्ट खाने से भर गया और ऑखें दूसरी पत्नी की बेटी को देखती देखती भर गयीं।

जब ऊपर सूप परसा जा रहा था तो इसाबैल नीचे चीख रही थी। और जब ऊपर सन्तरे का शर्बत परसा जा रहा था तो नीचे कुछ असाधारण हुआ। इसाबैल नीचे वाले कमरे में बैठी बैठी अपनी किस्मत को कोस रही थी। अब उसे भूख भी लग आयी थी।

उसने तीन सन्तरे उठाये और उनमें से एक को छीलना शुरू किया। जैसे ही उसने एक सन्तरे का छिलका तोड़ा तो उसमें से से सन्तरे के बीज के बराबर छोटी से एक स्त्री निकली और उसने उससे पीने के लिये पानी मॉगा।

इसाबैल ने उसको बताया कि वह तो नीचे वाले कमरे में बन्द थी कि इतने में ही कमरे का दरवाजा खुला और वह छोटी स्त्री उसको कमरे के बाहर ले गयी। इसाबैल उसको एक कुॅए के पास ले कर गयी। उस छोटी स्त्री ने सारा कुॅआ सुखा दिया।

उस स्त्री ने इसाबैल से कहा कि वह अब दूसरा सन्तरा भी तोड़ ले इस तरह उसमें से उसकी बहिन बाहर आयेगी। यह कह कर वह गायब हो गयी।

अब इसाबैल ने दूसरा सन्तरा भी छील दिया। जैसे ही उसने उसकी पहली पट्टी छीली कि एक दूसरी छाटी सी स्त्री उसमें से बाहर निकल आयी और बाहर निकलते ही उसने उससे पानी मॉगा। इसाबैल उसको नदी के किनारे ले कर गयी। उसने केवल एक घूँट पानी ही पिया होगा कि वह नदी भी सूख गयी।

उसने इसाबैल से फिर तीसरा सन्तरा तोड़ने और अपनी बहिन को आजाद करने के लिये कहा।

इसाबैला ने ऐप्रन में से तीसरा सन्तरा निकाला और उसको भी वह छीलने ही वाली थी कि खाने के कमरे की खिड़की खुली और टमाटर जैसे एक चेहरे ने अन्दर झॉका। यह उसकी सौतेली मॉ थी।

उस स्त्री के मुँह से लगातार कुछ ऐसे शब्द निकलने शुरू हो गये जिन्हें सुन कर इसाबैल तो बस शर्म से मर ही गयी। दूसरी बार उसकी सौतेली बहिन ने ऐसा किया जब उसने उसे बागीचे में देखा।

राजकुमार ने देखा कि दो स्त्रियॉ एक लड़की को इस तरह गालियॉ दे रही थीं। यह देख कर उसकी तो भूख ही गायब हो गयी। वह देख रहा था कि अब तक जो दो स्त्रियॉ उससे इतने मीठी मीठी बातें कर रही थीं अब इस लड़की पर कौओं की तरह से जहर उगल रही थीं।

अब इसाबैल ने तीसरा सन्तरा छीला। एक बहुत ही छोटी स्त्री जो एक सन्तरे से भी बड़ी नहीं थी उसमें से निकल पड़ी और पानी माँगा।

राजकुमार अपने घोड़े पर चढ़ा और अपने नौकर को सन्तरे लाने के लिये छोड़ कर इसाबैल के पीछे पीछे चल दिया। वह और उसकी वह छोटी स्त्री दोनों घोड़े की जीन पर बैठ गयीं। वे सब समुद्र की तरफ दौड़ चले।

वहाँ पहुँच कर तीसरी परी झुकी और उसने पानी पिया। वह पानी पीती गयी पीती गयी। जब वह पानी पी चुकी तो बोली "बहुत बहुत धन्यवाद। तुमने मेरी पहली बहिन की प्यास कुँए के पानी से बुझायी। तुमने मेरी दूसरी बहिन की प्यास नदी के पानी से बुझायी और अब मेरी प्यास समुद्र के पानी से बुझायी।

अब क्योंकि मेरी प्यास बुझ चुकी है और पानी अभी भी बाकी है तो मैं तुम्हें एक वरदान देती हूँ।"

इसाबैल मुस्कुरायी पर बोली कुछ नहीं। परी भी मुस्कुरायी और समुद्र में गायब हो गयी। राजकुमार और इसाबैल दोनों ने अपने आपको एक बहुत ही इतने सुन्दर महल के सामने पाया जैसा कभी किसी ने देखा न था।

उसका बागीचा सन्तरे के पेड़ों से भरा हुआ था। वहाँ की हवा फूलों की खुशबू से भरी हुई थी।

इसाबैल के फटे कपड़े नीचे गिर पड़े और वह सन्तरे के फूलों के रंग की पोशाक में सज गयी। राजकुमार ने तुरन्त ही उससे शादी कर ली। उसके बाद वे दोनों खुश खुश रहे।

4 हरा नाइट[16]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी यूरोप के डेनमार्क देश में कही सुनी जाती है। डेनमार्क देश यूरोप महाद्वीप के नौरडिक या नोर्स या स्कैन्डिनेवियन देशों में आता है। नोर्स देशों में पॉच देश हैं जो यूरोप के सुदूर उत्तर में स्थित हैं – फ़िनलैंड, स्वीडन, नौर्वे, आइसलैंड और डेनमार्क।

एक बार की बात है कि डेनमार्क में एक राजा और रानी अपनी बेटी के साथ रहते थे। उनकी बेटी अभी छोटी ही थी कि रानी बहुत बीमार पड़ गयी और उसी बीमारी में वह चल बसी।

जब रानी को यह पता चला कि अब वह ज़्यादा दिन ज़िन्दा नहीं रहने वाली तो उसने राजा को बुलाया और उससे कहा — "प्रिये, ताकि मैं शान्ति से मर सकूँ इसके लिये तुम मुझसे एक वायदा करो। कि मेरी बेटी जो कुछ भी मॉगेगी अगर वह तुम उसको दे सकते होगे तो वह चीज़ उसको जरूर दोगे। किसी चीज़ के लिये मना नहीं करोगे।"

इस वायदे के लेने के कुछ समय बाद ही रानी चल बसी। रानी के जाने के बाद राजा का दिल टूट गया क्योंकि वह अपनी रानी को

[16] The Green Knight – a fairy tale from Denmark, Europe.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/greenknight.html
edited by DL Ashliman.
DL Ashliman took it from, Danish Fairy Tales, by Svendt Grundtvig, translated by J Grant Cramer. Boston, Richard G Badger. 1912. pp. 22-37.

बहुत प्यार करता था। वह अपनी बेटी को भी बहुत प्यार करता था सो वह केवल अपनी बेटी को देख कर ही ज़िन्दा था।

राजकुमारी अपनी मॉ के लिये हुए वायदे के साथ बड़ी होने लगी। राजा के लिये बेटी की मॉ के साथ किये हुए वायदे को निभाना कोई मुश्किल काम नहीं था।

पर इस वायदे को निभाने ने उसकी बेटी को थोड़ा बिगाड़ दिया था नहीं तो वह एक बहुत अच्छी बच्ची थी जिसको एक मॉ की जरूरत थी जो उसको प्यार कर सके। इस प्यार की कमी की वजह से वह कभी कभी उदास हो जाती और कभी बेकार में ही गुस्सा भी हो जाती।

उसको दूसरे बच्चों की तरह से खेलना अच्छा नहीं लगता बल्कि वह अकेली बागीचों और जंगलों में घूमती रहती। उसको फूलों और चिड़ियों से बहुत प्यार था और उसको कहानियॉ और कविताऐं पढ़ने का भी बहुत शौक था।

महल के पास ही एक काउन्ट[17] की पत्नी रहती थी। काउन्ट तो मर गया था पर उसके एक बेटी थी जो राजकुमारी से थोड़ी सी बड़ी थी। वह अब उसी के साथ रहती थी।

काउन्टैस की वह नौजवान बेटी कोई बहुत अच्छी लड़की नहीं थी। वह एक बहुत ही बेकार, स्वार्थी और बहुत ही पत्थर दिल

[17] Count – Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

लड़की थी। पर अपनी मॉ की तरह वह चतुर बहुत थी और जब भी वह देखती कि कहीं उसका कोई काम बनने वाला है तो वह अपने विचारों को छिपा भी लेती थी।

बड़ी काउन्टैस ने ऐसे ऐसे तरीके निकाल रखे थे जिससे कि उसकी अपनी बेटी राजकुमारी के साथ ही रहे इसलिये मॉ और बेटी दोनों ही राजकुमारी को खुश रखने में लगी रहतीं।

उन दोनों के बस में जो कुछ भी होता वे उसको खुश रखने के लिये उसके लिये किसी भी तकलीफ को उठा कर करतीं। उसकी परेशानी को दूर करने के लिये उन दोनों में से जल्दी ही उसके पास कोई न कोई पहुँच जाता।

बड़ी काउन्टैस तो यही चाहती थी और इसके लिये वह मेहनत भी बहुत कर रही थी ताकि समय आने पर वह अपनी बात पर आ सके।

सो जब वह समय आ गया तो एक दिन बड़ी काउन्टैस ने अपनी बेटी से राजकुमारी से रोते हुए यह कहने के लिये कहा कि अब वे दोनों अलग हो जायेंगी क्योंकि वह अपनी मॉ के साथ किसी दूसरे देश जा रही है।

यह सुनते ही छोटी राजकुमारी बड़ी काउन्टैस के पास भागी गयी और बोली कि उसको अपनी बेटी को साथ ले कर वहॉ से नहीं जाना चाहिये।

छोटी राजकुमारी की बात सुन कर काउन्टैस ने उसके साथ बहुत सहानुभूति का बहाना किया और उससे कहा कि उसके वहाँ उस देश में रुकने का अब केवल एक ही तरीका है और वह यह कि राजा उससे शादी कर ले। उसके बाद दोनों माँ बेटी उसके पास हमेशा के लिये रह सकती थीं।

फिर उन्होंने उसको सब्ज़ बाग दिखाये कि जब वे वहाँ रहेंगी तो वे उसी की हो कर रहेंगी।

यह सुन कर राजकुमारी अपने पिता के पास गयी और उनसे उसने बड़ी काउन्टैस से शादी करने की प्रार्थना की। क्योंकि अगर उसने उससे शादी नहीं की तो वह अपनी बेटी के साथ चली जायेगी और उसकी अपनी बेटी की अकेली दोस्त भी चली जायेगी और उस दोस्त के बिना वह तो मर ही जायेगी।

राजा उसको समझाते हुए बोला — "अगर मैंने ऐसा किया तो बेटी यह कर के तुम बहुत पछताओगी। और साथ में मैं भी। क्योंकि मेरी शादी करने की कोई इच्छा नहीं है और मुझे उस धोखेबाज काउन्टैस और उसकी धोखेबाज बेटी का कोई भरोसा भी नहीं है।"

पर राजकुमारी का रोना नहीं रुका। वह उससे जिद करती ही रही जब तक कि वह काउन्टैस से शादी करने पर राजी नहीं हो गया और उसने राजकुमारी की इच्छा पूरी नहीं की।

राजा ने काउन्टैस से शादी करने के लिये पूछा तो काउन्टैस तो पहले से ही तैयार बैठी थी वह तुरन्त ही राजी हो गयी। जल्दी ही उन दोनों की शादी हो गयी। अब काउन्टैस रानी बन गयी और छोटी राजकुमारी की सौतेली मॉ बन गयी।

पर जैसे ही काउन्टैस रानी बन कर महल में आयी सब कुछ बदल गया। रानी ने अपनी सौतेली बेटी यानी राजकुमारी को बजाय प्यार से रखने के उसको चिढ़ाना और तंग करना शुरू कर दिया। उसकी ज़िन्दगी दूभर करने के लिये वह जो कुछ कर सकती थी अब वह उसने सब करना शुरू कर दिया था।

राजा ने भी यह सब देखा। वह इस सबसे बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था।

एक दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "ओह मेरी प्यारी बेटी, तुम्हारी ज़िन्दगी तो बहुत ही खराब हो गयी। तुम भी यह सोच कर पछताती तो होगी कि तुमने मुझसे क्या मॉगा। देखो जैसा मैंने तुमसे पहले कहा था वैसा ही हुआ। पर अब तो हम दोनों की बदकिस्मती से बहुत देर हो चुकी है।

मुझे लगता है कि तुमको अब हमको कुछ दिनों के लिये छोड़ देना चाहिये। तुम ऐसा करो कि टापू पर बने मेरे गरमी वाले महल में चली जाओ। वहॉ तुम कम से कम शान्ति से तो रह सकोगी।"

हालॉकि उन दोनों के लिये अलग होना बहुत मुश्किल था फिर भी राजकुमारी पिता की बात मान गयी।

यह बहुत जरूरी भी था क्योंकि वह अपनी नीच सौतेली मॉ और अपनी नीच सौतेली बहिन के बुरे व्यवहार को और ज़्यादा नहीं सह सकती थी।

उसने अपने साथ अपनी दो दासियॉ लीं और अपने पिता के गरमी वाले महल में टापू पर रहने चली गयी। उसका पिता कभी कभी उससे मिलने के लिये वहॉ आ जाता था।

वहॉ आ कर वह देखता कि उसकी बेटी सौतेली मॉ के साथ घर में रहने की बजाय इस महल में रह कर ज़्यादा खुश थी।

इस तरह से वह एक बहुत सुन्दर, दयावान, भोलीभाली और दूसरों के बारे में सोचने वाली लड़की की तरह बड़ी होती रही। वह आदमियों और जानवरों सब पर दया करती।

पर वह सचमुच में खुश नहीं थी। वह हमेशा ही उदास रहती। उसके दिल में हमेशा ही यह इच्छा रहती कि उसके पास जो कुछ भी इस समय है उसको इससे कुछ ज़्यादा अच्छा मिल सकता है।

एक दिन उसका पिता उससे विदा लेने के लिये आया क्योंकि उसको किसी लम्बी यात्रा पर जाना था।

वहॉ उसको राजाओं और कुलीन लोगों की एक मीटिंग में हिस्सा लेना था जो कई देशों से आने वाले थे और वह मीटिंग काफी दिनों तक चलने वाली थी सो वह काफी दिनों तक लौटने वाला नहीं था।

राजा अपनी बेटी को खुश करने के लिये बोला कि वहाँ वह उसके लिये अगर कोई अच्छा राजकुमार मिलेगा तो ढूँढेगा जिससे वह उसकी शादी कर सके।

तो राजकुमारी ने जवाब दिया — "पिता जी, इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद। पर अगर आपको कहीं हरा नाइट[18] मिल जाये तो उसको मेरी तरफ से नमस्ते कहियेगा और उससे कहियेगा कि मैं उसको बहुत चाहती हूँ और उसका इन्तजार कर रही हूँ। क्योंकि केवल वही मुझे मेरे इस दुख से छुटकारा दिला सकता है और दूसरा कोई नहीं।"

जब राजकुमारी ने यह कहा तो वह चर्च के हरे ऑगन के बारे में सोच रही थी जिसमें बहुत सारे हरे हरे मिट्टी के ढेर[19] खड़े हुए थे क्योंकि उस समय वह मौत के बारे में सोच रही थी।

पर राजा यह बात नहीं समझ सका। उसको अपनी बेटी का इस अजीब से नाइट के लिये अजीब सा सन्देश सुन कर बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि उसने तो ऐसे नाइट का नाम पहले कभी नहीं सुना था।

---

[18] Green Knight - A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

[19] Translated for the words "Green Mounds" – small soil mounds on which grass was growing. Infact they were the graves.

पर क्योंकि वह अपनी बेटी की हर इच्छा पूरी करने का आदी था इसलिये उसने अपनी बेटी से कहा कि अगर उसको हरा नाइट कहीं मिल गया तो वह उसका सन्देश उसको जरूर दे देगा।

फिर उसने अपनी बेटी को विदा कहा और राजाओं की मीटिंग मे हिस्सा लेने के लिये अपनी यात्रा पर चल दिया।

उस मीटिंग में उसको बहुत सारे राजकुमार मिले, नौजवान कुलीन लोग और नाइट मिले पर हरा नाइट उसे कहीं नहीं मिला। इसलिये राजा अपनी बेटी का सन्देश भी उसको नहीं दे सका।

मीटिंग खत्म हो गयी थी सो राजा घर लौटने लगा। उसको ऊँचे ऊँचे पहाड़ पार करने थे, चौड़ी चौड़ी नदियॉ पार करनी थीं और घने जंगल पार करने थे।

एक दिन जब राजा अपने लोगों के साथ एक घने जंगल से गुजर रहा था तो वे सब एक बड़ी सी खुली जगह में आ गये जहॉ हजारों सूअर चर रहे थे। ये सूअर जंगली नहीं थे बल्कि पालतू थे। उनके साथ उनका चराने वाला भी था।

वह सूअर चराने वाला एक शिकारी की पोशाक पहने अपने कुत्तों से घिरा हुआ एक छोटे से टीले पर बैठा हुआ था। उसके हाथ में एक पाइप था जिसको वह बजा रहा था। सारे जानवर उसके संगीत को सुन रहे थे और उसका कहना मान रहे थे।

राजा को पालतू सूअरों के इस झुंड पर बड़ा आश्चर्य हुआ तो उसने अपना एक आदमी उस सूअरों के रखवाले के पास यह जानने के लिये भेजा कि वे सारे सूअर किसके थे।

उस रखवाले ने जवाब दिया कि वे सारे सूअर हरे नाइट के थे। यह सुन कर राजा को अपनी बेटी की बात याद आ गयी सो वह खुद उस आदमी के पास गया और उससे पूछा कि क्या वह हरा नाइट कहीं पास में ही रहता था।

उस सूअर चराने वाले ने जवाब दिया "नहीं, वह पास में तो नहीं रहता। वह तो वहॉ से बहुत दूर पूर्व की तरफ रहता था।"

अगर राजा उस दिशा की तरफ चला जाये तो उसको जानवरों के दूसरे झुंड चराने वाले मिलेंगे वे उसको उस हरे नाइट के किले का रास्ता बता देंगे।

राजा यह सुन कर अपने आदमियों के साथ पूर्व की तरफ चल दिया। वह उधर की तरफ जंगल में हो कर तीन दिन तक चलता रहा। वह फिर से एक मैदान में आ निकला जिसके चारों तरफ जंगल ही जंगल था। वहॉ मूज़[20] और जंगली बैलों के बहुत बड़े बड़े झुंड चर

[20] The moose (North America) or elk (Eurasia) is the largest extant species in the deer family. Moose are distinguished by the palmate antlers of the males; other members of the family have antlers with a "twig-like" configuration. Moose typically inhabit in forests of the Northern Hemisphere in temperate to subarctic climates. See its picture above.

रहे थे। यहॉ भी उन जानवरों को चराने वाला शिकारी की पोशाक पहने था और उसके साथ भी कुत्ते थे।

राजा अपने घोड़े पर सवार उस रखवाले के पास गया और उससे पूछा कि वे जानवर किसके थे। उसने जवाब दिया कि वे हरे नाइट के थे जो पूर्व की तरफ और आगे की तरफ रहता था।

राजा फिर से पूर्व की तरफ तीन दिनों तक चला और फिर से एक मैदान में निकल आया जहॉ उसको बहुत सारे नर और मादा बारहसिंगा[21] चरते नजर आये। उनका रखवाला भी उनके साथ था।

जब राजा ने उससे पूछा कि वे जानवर किसके हैं तो उसने भी यही कहा कि वे जानवर हरे नाइट के हैं।

राजा ने पूछा कि हरे नाइट का किला कहॉ है तो उसने बताया कि वह वहॉ से पूर्व की तरफ ही एक दिन की दूरी पर है।

राजा वहॉ से हरे हरे जंगलों में से हो कर जा रहे हरे हरे रास्तों पर फिर पूर्व की तरफ चला तो एक दिन में ही एक बड़े से किले तक आ पहुॅचा। वह किला भी हरा था क्योंकि वह सारा किला बहुत सारी बेलों से ढका हुआ था।

जब राजा और उसके आदमी सब उस किले के पास तक पहुॅचे तो उस किले में से बहुत सारे आदमी शिकारियों की हरे रंग की

[21] Translated for the word “Stag”. It is a kind of deer (male) and doe (female) with a different horn structure. See its picture above.

पोशाक पहने बाहर आये और उनको किले के अन्दर ले गये। अन्दर जा कर उन्होंने घोषणा की कि फलॉ फलॉ राज्य के राजा आये हैं और वह वहॉ के राजा से मिलना चाहते हैं।

यह सुन कर उस किले का मालिक बाहर आया – एक लम्बा सुन्दर नौजवान हरे कपड़े पहने हुए। उसने अपने मेहमान का स्वागत किया और उसकी शाही तरीके से आवभगत की।

राजा बोला — "आप बहुत दूर रहते हैं और आपका राज्य भी बहुत बड़ा है। मुझको अपनी बेटी की इच्छा पूरी करने के लिये बहुत दूर तक चलना पड़ा।

जब मैं राजाओं की मीटिंग में हिस्सा लेने के लिये चला था तो मेरी बेटी ने मुझसे कहा था कि मैं उसकी तरफ से हरे नाइट को नमस्ते करूँ।

और यह भी कहा था कि मैं उसको कहूँ कि वह उसको कितना चाहती है और वह उसका इन्तजार कर रही है क्योंकि केवल वही एक उसको उसके दुखों से छुटकारा दिला सकता है।

मैं अपनी बेटी का यह एक बहुत ही अजीब सा काम ले कर चला था, क्योंकि मुझे तो यह काम कम से कम अजीब सा ही लगा पर मेरी बेटी जानती थी कि वह क्या कह रही थी।

इसके अलावा जब उसकी मॉ मर रही थी तब मैंने उसकी मॉ से यह वायदा किया था कि मैं उसकी बेटी की हर इच्छा पूरी करूँगा।

इसलिये भी मैं अपनी रानी से किया गया अपना वायदा निभाने के लिये और उसका सन्देश देने के लिये यहाँ आया हूँ।"

यह सुन कर हरा नाइट बोला — "आपकी बेटी ने जब आपसे यह सब कहा तब वह बहुत दुखी थी और यह मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि जिस समय उसने आपको यह सन्देश दिया वह मेरे बारे में नहीं सोच रही थी। क्योंकि मेरे बारे में तो वह सोच ही नहीं सकती थी।

शायद वह चर्च के आँगन में जो मिट्टी के हरे ढेर बने रहते हैं उनके बारे में सोच रही थी जहाँ वह खुद अकेले आराम करना चाहती थी। पर शायद मैं उसको उसके दुख को कम करने के लिये उसके लिये आपको कुछ दे सकता हूँ।

आप यह छोटी सी किताब ले जाइये और जा कर राजकुमारी को दे दीजियेगा। और उससे कहियेगा कि जब भी वह दुखी हो या उसका दिल भारी हो तो वह अपनी पूर्व की तरफ की खिड़की खोले और यह किताब पढ़े। मुझे यकीन है कि इस किताब को पढ़ कर उसका दिल जरूर खुश होगा।"

यह कह कर उस हरे नाइट ने राजा को एक छोटी सी हरी किताब थमा दी। राजा ने उस किताब को खोल कर देखा तो वह उसको पढ़ नहीं सका क्योंकि वह उसमें इस्तेमाल किये गये अक्षरों को ही नहीं पहचान सका जिसमें उसमें लिखे शब्द लिखे गये थे।

फिर भी उसने हरे नाइट से वह किताब ले ली और उसको उसके स्वागत और उसकी आवभगत के लिये धन्यवाद दिया। उसने नाइट को विश्वास दिलाया कि उसको वाकई बहुत अफसोस था कि उसने इस तरह आ कर उसको परेशान किया। राजकुमारी का ऐसी कोई इरादा नहीं था।"

हरे नाइट ने राजा से किले में रात भर ठहरने के लिये प्रार्थना की कि वह सुबह होते ही अपने राज्य चला जाये। असल में तो वह राजा को और ज़्यादा समय के लिये भी रखना चाहता था पर राजा ने उससे कहा कि वह और ज़्यादा नहीं रुक सकता था क्योंकि अगले दिन तो उसको जाना ही था।

सो अगले दिन सुबह राजा ने अपने मेज़बान को विदा कहा और उसी रास्ते से वापस चल दिया जिससे वह आया था। वह वहॉ तक आ गया जहॉ उसने सबसे पहले सूअर देखे था फिर वहॉ से वह सीधे अपने घर आ गया।

घर आ कर सबसे पहले वह उस टापू पर गया जिस पर उसकी बेटी रहती थी। वह वहॉ गया और जा कर राजकुमारी को वह हरी किताब दी।

जब राजा ने राजकुमारी को हरे नाइट के बारे में बताया और उसकी नमस्ते और हरी किताब दी तो उसका मुँह तो आश्चर्य से खुला का खुला रह गया क्योंकि उसने तो कभी यह सोचा ही नहीं

था कि हरा नाइट नाम का कोई आदमी भी होगा। और आदमी होना तो दूर वह इस धरती पर भी कहीं होगा।

उसी शाम जब उसके पिता चले गये तो उसने पूर्व की तरफ की खिड़की खोली और वह किताब पढ़नी शुरू की हालॉकि वह किताब उसकी अपनी भाषा में नहीं लिखी थी। उस किताब में बहुत सारी कविताऐं थीं और उनकी भाषा बहुत सुन्दर थी। सबसे पहले जो उसने पढ़ा वह यह था —

समुद्र पर हवा चल निकली है,
वह खेतों पर और मैदानों पर बहती है,
और जब धरती पर शान्त रात छाती है,
नाइट के साथ कौन उसका विश्वास बॉधेगा?

जब वह इस पहली कविता की पहली लाइन पढ़ रही थी तो उसको साफ साफ लगा कि समुद्र पर हवा चलने लगी थी। जब उसने उस कविता की दूसरी लाइन पढ़ी तो उसने पेड़ों की पत्तियों के हिलने की आवाज सुनी।

जब उसने उस कविता की तीसरी लाइन पढ़ी तो उसकी जो दासियॉ थीं और जो भी किले के आस पास थे सब गहरी नींद में सो गये। और जब उसने कविता की चौथी लाइन पढ़ी तो वह हरा नाइट खुद चिड़िया का रूप रख कर खिड़की में से अन्दर आ गया।

अन्दर आ कर वह आदमी के रूप में आ गया और राजकुमारी को बहुत ही नम्रता से नमस्ते की। उसने राजकुमारी से कहा कि वह डरे नहीं।

उसने उससे यह भी कहा कि वह वही हरा नाइट था जिसके पास उसके पिता मिलने के लिये आये थे और जिसकी दी हुई किताब वह पढ़ रही थी।

उस कविता को पढ़ कर उसने उसको खुद ही वहॉ बुलाया था। वह उससे बेहिचक बात कर सकती थी। उससे बात करने से उसका दुख कुछ कम होगा।

यह सुन कर राजकुमारी को हरे नाइट के ऊपर कुछ विश्वास पैदा हुआ तो उसने उस हरे नाइट से अपने मन की सब बातें कह दीं।

उधर उस हरे नाइट ने भी उसके साथ इतनी सहानुभूति और प्यार से बातें कीं कि वह उसकी बातें सुन कर बहुत खुश हो गयी। इससे पहले वह इतनी खुश कभी नहीं थी।

बाद में हरा नाइट बोला कि जब भी वह किताब खोलेगी और वह पहली कविता पढ़ेगी तो वैसा ही होगा जैसा कि आज शाम को हुआ है।

राजकुमारी के सिवा टापू पर सारे लोग सो जायेंगे और वह वहॉ तुरन्त ही आ जायेगा जबकि वह वहॉ से बहुत दूर रहता था। राजकुमार ने कहा कि अगर वह उससे वाकई मिलना चाहेगी वह

उसके पास खुशी से आयेगा। अब वह उस किताब को बन्द कर के रख दे और जा कर आराम करे।

उसी समय राजकुमारी ने किताब बन्द कर दी। किताब बन्द करते ही वह हरा नाइट भी वहॉ से गायब हो गया और टापू वाले सारे लोग जो सो गये थे वे सभी जाग गये। फिर राजकुमारी भी सोने चली गयी।

रात को सपने में भी वह हरे नाइट को ही देखती रही और जो कुछ उसने उससे कहा था वही उसके सपने में भी आता रहा। जब वह सुबह को उठी तो उसका दिल बहुत हल्का था और वह बहुत खुश थी। इतनी खुश वह पहले कभी नहीं हुई थी।

अब वह पहले से ज़्यादा तन्दुरुस्त रहने लगी थी। उसके गालों का रंग गुलाबी हो गया था और अब वह बात बात पर हॅसती और मजाक करती थी।

उसमें यह बदलाव देख कर उसके आस पास के लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ कि राजकुमारी को यह क्या हो गया है। राजा ने कहा कि शाम की हवा और उस छोटी सी हरी किताब ने उसकी ज़िन्दगी में यह बदलाव ला दिया है। राजकुमारी ने कहा कि वह ठीक कह रहा है।

पर यह बात कोई नहीं जानता था कि हर शाम राजकुमारी वह छोटी हरी किताब पढ़ती और हर शाम वह हरा नाइट उसके पास

आता और फिर वे दोनों बहुत देर तक बातें करते रहते और यही उसकी खुशी का भेद था।

तीसरे दिन हरे नाइट ने उसको एक सोने की अँगूठी दी और उन दोनों ने अपनी शादी पक्की कर ली पर तीन महीने से पहले वह उसका हाथ माँगने के लिये उसके पिता के पास नहीं जा सका। उसके बाद ही वह अपनी प्रिय पत्नी को अपने घर ले जा सकता था।

इस बीच राजकुमारी की सौतेली माँ को पता चला कि राजकुमारी की तन्दुरुस्ती तो बहुत अच्छी हो रही है और वह बहुत सुन्दर भी होती जा रही है। वह पहले से कहीं ज़्यादा खुश है।

रानी को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उदास हो गयी क्योंकि वह तो हमेशा से ही यह उम्मीद करती थी कि वह धीरे धीरे दुबली हो जायेगी और फिर मर जायेगी। उसके बाद उसकी अपनी बेटी राजकुमारी बन जायेगी और राज्य की वारिस बन जायेगी।

सो एक दिन उसने अपने दरबार की एक दासी को उस टापू पर राजकुमारी के पास भेजा और उसको कहा कि वह राजकुमारी की इस तन्दुरुस्ती और खुश रहने का भेद पता लगा कर लाये।

अगले दिन वह दासी लौट आयी और उसने आ कर रानी को बताया कि यह सब इसलिये हो रहा था कि राजकुमारी रोज शाम को

अपनी खिड़की खोल कर बैठ जाती थी और एक किताब पढ़ती थी जो उसको किसी अजीब से राजकुमार ने दी थी।

फिर शाम की हवा ने उसको गहरी नींद में सुला दिया और यह हर शाम उसके दरबार की सब स्त्रियों के साथ होता था कि वे सब शाम को इसी तरीके से सो जाती थीं।

उन्होंने उससे यह शिकायत भी की कि यह सब हालात उनको बीमार बना रहे थे जबकि वे ही हालात राजकुमारी की हालत अच्छी कर रहे थे।

अगले दिन रानी ने अपनी बेटी को राजकुमारी के ऊपर जासूसी करने के लिये भेजा और उसको कहा कि वह उसकी सारी हरकतों पर नजर रखे और आ कर उसे बताये।

उसने यह भी कहा कि "इस खिड़की में ही शायद कोई भेद छिपा है। शायद कोई आदमी इसमें से आता है। सो उस खिड़की पर ध्यान रखना।"

उसकी बेटी भी अगले दिन लौट आयी पर वह भी रानी को उससे ज़्यादा कुछ नहीं बता सकी जो उसकी दासी ने उसको बताया था। क्योंकि जैसे ही राजकुमारी ने अपनी खिड़की खोली और अपनी वह छोटी किताब पढ़नी शुरू की तो वह सो गयी।

यह सुन कर तीसरे दिन रानी खुद उससे मिलने के लिये गयी। वह राजकुमारी से बहुत ही मीठा व्यवहार कर रही थी। उसने

उसको दिखाया कि वह उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी देख कर कितनी खुश थी।

रानी ने उससे उतने सवाल पूछे जितने वह उससे पूछने की हिम्मत कर सकती थी। पर वह भी जितना उसको मालूम था उससे ज़्यादा और कुछ मालूम नहीं कर सकी।

उसके बाद वह उसकी पूर्व की खिड़की के पास गयी जहॉ वह राजकुमारी हर शाम बैठती थी और अपनी किताब पढ़ती थी। उस खिड़की की अच्छी तरह से जॉच की पर वहॉ भी उसको कोई ऐसी खास चीज़ नहीं मिली जिससे उसकी गुत्थी कुछ सुलझती।

वह खिड़की जमीन से काफी ऊपर थी और उसके आस पास बहुत सारी बेलें लगी हुई थीं जिससे उस पर किसी भी आदमी का चढ़ना नामुमकिन था।

सो रानी ने एक कैंची ली, उसकी नोकों में जहर लगाया और उसको उसकी नोकों को ऊपर कर के खिड़की में अटका दिया पर उसने उसको ऐसे अटकाया कि वह वहॉ किसी को दिखायी न दे।

जब शाम हुई तो रोज की तरह से राजकुमारी अपने हाथ में वह हरी किताब ले कर उस खिड़की के पास बैठी तो रानी ने सोचा कि वह ध्यान रखेगी कि वह किसी तरह भी सोने न पाये जैसा कि पहले दूसरे लोग कर चुके थे पर जब राजकुमारी ने वह किताब पढ़नी शुरू की तो उसके इरादे ने उसकी कोई सहायता नहीं की।

जैसे ही राजकुमारी ने वह किताब पढ़ना शुरू किया तो रानी की पलकें अपने आप ही झुकने लगीं और सबके साथ साथ वह भी गहरी नींद सो गयी।

उसी समय हरा नाइट एक चिड़िया के रूप में वहॉ आया। उस के आने का किसी को पता नहीं चला सिवाय राजकुमारी के। फिर दोनों ने इस बारे में खूब बातें कीं कि बस अब हरे नाइट के राजा के पास जाने का केवल एक हफ्ता ही बचा था।

फिर वह नाइट राजा के दरबार में जा कर उससे राजकुमारी से शादी के लिये उसका हाथ मॉग लेगा। शादी कर के वह उसे अपने घर ले जायेगा और फिर वह उसके हरे किले में हमेशा उसके पास रहेगी।

उसका यह हरा किला भी हरे हरे जंगलों के बीच में बना हुआ था जहॉ से उसका सारा राज्य दिखायी देता था और जिसके बारे में उसने राजकुमारी से कई बार बात की है। बात करने के बाद में हरे नाइट ने उस विदा ली, चिड़िया बना और खिड़की के बाहर उड़ गया।

पर उस समय वह इत्तफाक से उस खिड़की के ऊपर से इतना नीचे उड़ा कि रानी ने जो कैंची खिड़की में लगायी थी उसकी नोक से उससे उसकी एक टॉग में खरोंच आ गयी। उसके मुँह से एक चीख निकली पर फिर वह जल्दी ही वहॉ से उड़ गया।

राजकुमारी ने जब हरे नाइट की चीख सुनी तो वह कूद कर वहॉ गयी। इस कूदने में उसके हाथ से वह किताब नीचे फर्श पर गिर गयी और बन्द हो गयी। उसके मुॅह से भी एक चीख निकली और रानी और सबकी ऑख खुल गयी।

राजकुमारी की चीख की आवाज सुन कर सब राजकुमारी की तरफ दौड़े गये कि उसको क्या हुआ। उसने उनको बताया कि उसको कुछ नहीं हुआ था और वह ठीक थी। बस उसकी ज़रा सी ऑख लग गयी थी तो उसी में उसने एक बुरा सपना देख लिया।

पर उसी समय से हरे नाइट को बुखार आ गया और उसको बिस्तर पर लिटा दिया गया।

इसी बीच रानी खिड़की में से अपनी कैंची निकालने के लिये खिड़की तरफ खिसक गयी। वहॉ जा कर उसने देखा कि उसकी कैंची की नोक पर तो खून लगा है। उसने उसको तुरन्त ही वहॉ से निकाल कर अपने कपड़ों में छिपा लिया और अपने घर ले गयी।

उधर राजकुमारी सारी रात सो नहीं पायी और दूसरे दिन भी बहुत परेशान रही। फिर भी वह कुछ ताजा हवा लेने के लिये खिड़की के पास जा बैठी।

उसने अपनी पूर्व वाली खिड़की खोली अपनी किताब खोली और रोज की तरह से उसमें से पढ़ने लगी।

समुद्र पर हवा चल निकली है,
वह खेतों पर और मैदानों पर बहती है,

और जब धरती पर शान्त रात छाती है,
नाइट के साथ कौन उसका विश्वास बॉधेगा?

और हवा पेड़ों के बीच से बह निकली, पेड़ों की पत्तियॉ की सरसराहट भी सुनायी दी, राजकुमारी के सिवा उस टापू के सभी लोग सो गये पर हरा नाइट नहीं आया।

इस तरह कई दिन निकल गये। राजकुमारी रोज उस खिड़की को खोल कर बैठती, रोज अपनी किताब पढ़ती, रोज हवा की आवाज सुनती, रोज हवा से होती पत्तों की सरसराहट सुनती पर हरा नाइट नहीं आता।

उसके लाल गाल फिर से पीले पड़ने लगे और उसका दिल फिर से दुखी और नाखुश हो गया। वह फिर से दुबली होने लगी। उसके पिता को यह देख कर बहुत चिन्ता हो गयी कि उसकी हॅसती खेलती बेटी को क्या हो गया पर उसकी सौतेली मॉ को इस बात से बहुत खुशी हुई।

एक दिन राजकुमारी अपने टापू के किले के बागीचे में उदास घूम रही थी। घूमते घूमते वह थक गयी सो थक कर वह एक बहुत ऊॅचे पेड़ के नीचे पड़ी बैन्च पर बैठ गयी।

वहाँ वह बैठी बैठी बहुत देर तक अपने उदास विचारों में खोयी रही कि वहाँ दो रैवन[22] आये और उसके सिर के ऊपर की एक शाख पर आ कर बैठ गये और आपस में बात करने लगे।

एक बोला — "यह कितने दुख की बात है कि हमारी राजकुमारी अपने प्रेमी के दुख में जान देने को भी तैयार है।"

दूसरा रैवन बोला — "और जबकि केवल वह ही उसका वह घाव ठीक कर सकती है जो हरे नाइट को रानी की जहरीली कैंची से हुआ है।"

पहले रैवन ने पूछा — "वह कैसे?"

दूसरे रैवन ने जवाब दिया — "एक सी चीज़ें एक दूसरे को ठीक करती हैं। राजकुमारी के पिता राजा के ऑगन में, उसकी घुड़साल के पश्चिम की तरफ एक पत्थर के नीचे एक छेद में एक ज़हरीली सॉपिन अपने नौ बच्चों के साथ रहती है।

अगर राजकुमारी को उसके ये नौ बच्चे मिल जायें तो वह उनको पका ले और उसके तीन बच्चे रोज राजकुमार को खिलाये तो वह ठीक हो जायेगा नहीं तो उसका कोई और इलाज नहीं है।"

इतना कह कर वे वहाँ से उड़ गये। जैसे ही रात हुई तो राजकुमारी अपने किले से छिप कर निकल ली और समुद्र के किनारे

[22] Raven is a black crow-like bird. See its picture above.

जा पहुँची। वहाँ उसको एक नाव मिल गयी। उस नाव को खे कर वह अपने पिता के महल जा पहुँची।

वहाँ वह सीधी महल के आँगन में पत्थर के पास पहुँची। वह पत्थर बहुत भारी था फिर भी उसने उसको हटाया। वहाँ उसको नौ साँप के बच्चे मिल गये।

उसने उन बच्चों को अपने ऐप्रन में बाँध लिया और उसी रास्ते पर चल दी जो उसके पिता ने जब वह राजाओं की मीटिंग में गया था लिया था।

सो वह महीनों तक पैदल चलती हुई ऊँचे पहाड़ों पर और घने जंगलों में होती हुई वहीं आ गयी जहाँ उसके पिता को सूअरों को झुंड मिला था।

उसने राजकुमारी को जंगलों में से हो कर उस तरफ जाने के लिये इशारा कर दिया जिधर दूसरा चराने वाला था। दूसरे चराने वाले के पास पहुँचने पर उस दूसरे चराने वाले ने उसको तीसरे चराने वाले के पास भेज दिया।

आखिर वह हरे नाइट के महल तक आ पहुँची। वहाँ हरा नाइट जहर से बीमार और बुखार में पड़ा हुआ था। वह इतना बीमार था कि वह किसी को पहचान भी नहीं रहा था। उसको उस घाव की वजह से इतना दर्द था कि वह बिस्तर में भी बहुत बेचैन था।

दुनियॉ के कोने कोने से डाक्टर बुलाये गये थे पर किसी भी डाक्टर का कोई इलाज उसको ज़रा सा भी आराम नहीं दे पाया था।

राजकुमारी हरे नाइट के रसोईघर में गयी और वहॉ रसोइये से पूछा अगर वह उसको शाही रसोई में कुछ काम दे सकता। वह बरतन धो सकती थी या फिर कुछ और जो काम भी वह उसको देना चाहता हो। बस उसको रहने की जगह चाहिये थी। रसोइये ने उसको वहॉ रहने की इजाज़त दे दी।

क्योंकि वह बहुत साफ रहती थी, काम बहुत जल्दी करती थी और कोई भी काम करने के लिये तैयार रहती थी रसोइये को वह राजकुमारी बहुत अच्छी लगी। उसने उसको वहॉ का काम करने में उसको काफी आजादी दे दी।

रसोइये का यह विश्वास जीतने के बाद राजकुमारी ने रसोइये से कहा — "आज मुझे राजा के लिये सूप तैयार करने दो। मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि उनके लिये सूप कैसे तैयार करना है। मैं उस सूप को अकेले ही तैयार करना चाहती हूँ। कोई भी मेरे बरतन में झॉके नहीं।"

रसोइया मान गया सो उसने नाइट के लिये उन नौ सॉपों के बच्चों में से तीन सॉप के बच्चों का सूप बना दिया। वह उस सूप को ले कर हरे नाइट के पास ले गयी और वह सूप उसको पिला दिया।

सूप पी कर उसका बुखार इतना उतर गया कि वह अब अपने होश में आ गया, अपने चारों तरफ के सब लोगों को पहचानने लगा और ठीक से बातें करने लगा।

उसने अपने रसोइये को बुलाया और उससे पूछा — "यह सूप क्या तुमने पकाया था जिसने मुझे इतना फायदा किया?"

रसोइये ने जवाब दिया — "जी हॉ मैंने ही बनाया था क्योंकि कोई और दूसरा तो आपके लिये सूप बना ही नहीं सकता था।" तब हरे नाइट ने उसको अगले दिन वैसा ही सूप और बनाने के लिये कहा।

अब रसोइये की बारी थी राजकुमारी के पास जाने की और उससे कहने की कि वह नाइट के लिये कल जैसा ही सूप बना दे।

सो उसने उस दिन भी तीन सॉप के बच्चे लिये, उनका सूप बनाया और उनका सूप बना कर हरे नाइट के पास ले गयी और उसको पिलाया। अबकी बार उस सूप को पी कर हरे नाइट को इतना अच्छा लगा कि वह बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया।

यह देख कर तो डाक्टर लोग हैरान रह गये। वे समझ ही नहीं सके कि यह सब कैसे हो गया। पर उनको यकीन था कि अब तक वे जो दवाऐं हरे नाइट को दे रहे थे वे अब असर कर रही थीं।

तीसरे दिन रसोईघर की नौकरानी को फिर से वह सूप तैयार करना पड़ा। इस सूप में उसने वे आखिरी तीन सॉप के बच्चे डाल

दिये और वह सूप फिर हरे नाइट के पास ले कर गयी। उस सूप को पीने के बाद तो हरा नाइट बिल्कुल ही ठीक हो गया।

वह कूदा और रसोईघर में रसोइये को खुद धन्यवाद देने के लिये गया क्योंकि वही तो उसका असली डाक्टर था जिसने उसको ठीक किया था।

अब हुआ क्या कि जैसे ही वह रसोईघर में पहुँचा तो वहाँ तो एक नौकरानी के अलावा और कोई था नहीं और वह नौकरानी भी उस समय बरतन पोंछ रही थी।

जैसे ही उसने उसको देखा तो वह उसको पहचान गया। तुरन्त ही उसको लगा कि उस लड़की ने उसके लिये क्या किया है। उसने उस लड़की को अपनी बाँहों मे ले लिया और बोला —

"ओह तो वह तुम हो जिसने मेरा इलाज किया है। मेरी जान बचायी है। और मेरे शरीर के अन्दर जो जहर घुस गया था उससे छुटकारा दिलाया है। यह जहर मेरे शरीर में तब घुसा था जब मेरे खिड़की में रखी कैंची की खरोंच लगी जो रानी ने वहाँ रखी थी।"

राजकुमारी इस बात से मना नहीं कर सकी। वह बहुत खुश थी और साथ में हरा नाइट भी।

दोनों की शादी उस हरे किले में ही हो गयी और फिर दोनों ने वहाँ के हरे जंगलों मे रहने वालों पर बहुत सालों तक राज किया। और शायद अभी भी वहाँ राज कर रहे होंगे।

5 टूटा घड़ा[23]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी यूरोप के इंगलैंड देश से ली गयी है। यह कहानी पहली बार **1895** में छपी थी। यह कहानी बिल्कुल सिन्डरैला जैसी तो नहीं है पर... ।

एक बार की बात है कि दो बहिनें थीं। एक का नाम था सन्तरा और दूसरी का नाम था नीबू।[24] उनकी मॉ नीबू को सन्तरे से ज़्यादा प्यार करती थी और सन्तरे से घर का सारा मुश्किल काम करवाती थी। वह रोज कुॅए से पानी भरने भी जाती थी। खाना भी बनाती थी। घर की सफाई भी करती थी।

एक दिन रोज की तरह सन्तरा अपना घड़ा ले कर पानी भरने गयी तो जैसे ही उसने अपने घड़े को पानी भरने के लिये पानी में डुबोया तो उसका वह घड़ा उसके हाथ से फिसल कर कुॅए में गिर गया और टूट गया।

यह देख कर सन्तरा बहुत दुखी हुई और उसकी घर जाने की हिम्मत ही नहीं हुई। वह वहीं घास पर बैठ गयी और रोने लगी।

---

[23] The Broken Pitcher – a fairy tale from England, Europe. Taken from the book : Household Tales with Other Traditional Remains: Collected in the Counties of York, Lincoln, Derby, and Nottingham by Sidney Oldall Addy, 1895, story no. 29, pp. 29-30.
Addy has taken it from "From Sheffield." Translated and edited by DL Ashliman.
This story can be read in English at the Web Site :
http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault

[24] Orange and Lemon

कुछ देर तक रोने के बाद उसने अपना सिर उठा कर जमीन की तरफ देखा तो उसने देखा कि उसके पास तो एक बहुत सुन्दर परी खड़ी हुई है।

परी ने पूछा — "ओ छोटी सन्तरा, तुम क्यों रो रही हो?"

सन्तरा बोली — "क्योंकि मेरा घड़ा टूट गया है और अब मेरी मॉ मुझे मारेगी।"

परी बोली — "रोओ नहीं। और देखो मैं इस कुँए में रहती हूँ और तुम्हारे बारे में सब कुछ जानती हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करूँगी क्योंकि तुम बहुत ही अच्छी छोटी सी बच्ची हो और तुम्हारी मॉ तुम्हारे साथ इतना बुरा बरताव करती है।"

तब परी ने जमीन को मारा और सन्तरे का घड़ा उसमें से पूरा का पूरा साबुत ऐसा निकल आया जैसा वह पहले था। सिवाय इसके कि अब उस घड़े के बॉहें और पैर भी थे।

परी बोली — "देखो यह छोटा घड़ा हमेशा ही तुम्हारा दोस्त रहेगा। यह तुम्हारे साथ तुम्हारे घर जायेगा और यह पानी भी अपने आप ही भर कर ले जायेगा।

अब तुम घर जाओ और देखो यह बात किसी से कहना नहीं। अच्छी लड़की बन कर रहना।" यह कह कर वह परी उस कुँए में गायब हो गयी।

इसके बाद सन्तरे ने अपने ऑसू पोंछे, घड़े का हाथ पकड़ा और घड़ा उसके साथ साथ उसके घर चल दिया।

पर जब वे सन्तरे की माँ के घर के दरवाजे पर पहुँचे तो घड़े की बाँहें और पैर दोनों गायब हो गये। सन्तरे ने उस घड़े को अपने सिर पर रखा और घर के अन्दर चली गयी।

जैसा कि परी ने सन्तरे से कहा था उसने कुँए पर जो कुछ भी उसके साथ हुआ था उसके बारे में उसने किसी से कुछ नहीं कहा।

अगले दिन सन्तरा रोज की तरह ही बहुत जल्दी उठी और अपने आपसे बोली — "उफ़, रात होने से पहले पहले मैं आज कितनी थक जाऊँगी क्योंकि घर में मुझे कितना सारा काम करना है।"

और यह कहते हुए वह बिस्तर से उठ गयी। पर जब वह नीचे आयी तो उसने देखा कि उसके घड़े की बाँहें और पैर फिर से आ गये हैं और वह रसोईघर का फर्श साफ कर रहा है।

अब वह घर में सन्तरा का घर का सारा मुश्किल काम करता था और तब से वह घड़ा सन्तरे का बहुत अच्छा दोस्त रहा।

6 रशैन कोटी[25]

सिन्डरैला जैसी कहानियों में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इंगलैंड देश की कहानियों से ली है।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे। पर उसकी रानी अपनी एक बहुत ही सुन्दर सी बेटी को छोड़ कर चल बसी।

मरते समय उसने अपनी बेटी से कहा — "मेरी प्यारी बिटिया। जब मैं चली जाऊँगी तो तुम्हारे पास एक लाल बछड़ा आयेगा। तो जब भी तुम्हें कुछ भी चाहिये तो तुम उससे कह देना वह तुमको दे देगा।" और यह कह कर वह मर गयी।

कुछ दिनों बाद राजा ने दूसरी शादी कर ली। उसकी यह दूसरी पत्नी बहुत ही खराब स्वभाव की थी। वह अपने साथ अपनी तीन बदसूरत बेटियॉ भी ले कर आयी थी।

वे सब राजा की बेटी को बहुत नफरत करती थीं क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी। रानी की तीनों लड़कियों ने उसके सारे अच्छे कपड़े ले लिये और उसको पहनने के लिये बस एक फटे कपड़े का कोट दे दिया।

अब वे सब उसको रशैन कोटी नाम से बुलाने लगे।

---

[25] Rushen Coatie – a fairy tale from England, Europe.
This story is taken from the Web Site :
http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/stories/rushen.html
Appeared in the book : English Fairy Tales. By Joseph Jacobs. London: David Nutt. 1890.

वे उसको रसोईघर में ही रखते जहॉ वह राख के पास ही बैठी रहती। जब शाम को खाना खाने का समय होता तो उसकी सौतेली मॉ बस उसको एक चम्मच मॉस का पानी[26], एक जौ का दाना, एक धागे जितना बड़ा मॉस का टुकडा और एक टुकड़ा रोटी का भेज देती।

लेकिन जब वह यह सब खा चुकती तभी भी वह उतनी ही भूखी रहती जितनी भूखी वह पहले होती थी। वह अपने आप से कहती "काश मेरे पास कुछ खाने को होता।"

तभी वहॉ सोचो तो कौन आया? एक लाल बछड़ा।

वह बोला — "अपनी उॅगलियॉ मेरे बॉये कान में रखो।"

उसने ऐसा ही किया तो उसको तो वहॉ बहुत अच्छी रोटी मिली। उसके बाद बछड़े ने उससे अपने दॉये कान में उगलियॉ रखने के लिये कहा। उसने फिर वैसा ही किया तो वहॉ उसको कुछ चीज़[27] मिली। सो उसने रोटी और चीज़ का बहुत अच्छा खाना खाया।

और बस फिर रोज ऐसा ही होने लगा।

असल में राजा की पत्नी ने सोचा था कि अगर उसने रशैन कोटी को बहुत कम खाना दिया तो वह जल्दी ही मर जायेगी पर

[26] Translated for the word "Broth"

[27] Cheese is processed Paneer of India. It is a very popular and staple food of western world.

वह तो यह देख कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गयी कि वह तो अभी भी पहले जैसी ही तन्दुरुस्त थी।

सो उसने अपनी एक बदसूरत बेटी को उसके खाने के समय उसके पास यह देखने के लिये भेजा कि वह उस समय क्या खाती है जिसकी वजह से वह इतनी तन्दुरुस्त दिखायी दे रही थी।

उस लड़की को जल्दी ही पता चल गया कि एक लाल बछड़ा रशैन कोटी को खाना खिलाता था। उसने यह जा कर अपनी मॉ को बताया।

उसकी मॉ राजा के पास गयी और उससे कहा कि उसको लाल बछड़े का मॉस खाने की इच्छा हो रही है। राजा ने एक कसाई को बुलाया और उस छोटे बछड़े को मरवा दिया। रशैन कोटी ने जब यह सुना तो वह उसके पास बैठ कर बहुत रोयी।

पर वह मरा हुआ बछड़ा बोला —

मेरी सारी हड्डियॉ उठा लो और उनको पास वाले पत्थर के नीचे रख दो
फिर जब भी तुम्हें कुछ चाहिये मुझसे कहना मैं तुमको दे दूँगा

उसने वही किया पर उसको उसकी एक बॉह की हड्डी नहीं मिली।

अगले रविवार को चर्च में यूलटाइड[28] था तो सब लोग अपने सबसे अच्छे कपड़ों में जाने के लिये तैयार हो रहे थे। रशैन कोटी बोली — "ओह मैं भी चर्च जाना चाहती हूँ।"

पर उसकी तीनों बदसूरत बहिनें बोलीं — "तुम चर्च जा कर क्या करोगी ओ बेकार की चीज़? तुम घर पर ही रहो और शाम का खाना बनाओ।"

राजा की पत्नी ने कहा — "तुमको इसका सूप तो जरूर बनाना चाहिये – एक चम्मच मॉस का पानी, एक जौ का दाना, एक धागे जितना बड़ा मॉस का टुकडा और एक टुकड़ा रोटी का।"

जब वे सब चर्च चली गयीं तो रशैन कोटी बैठ कर रोने लगी। एकाएक उसने ऊपर देखा तो उसने क्या देखा कि लॅगड़ाता हुआ केवल एक बॉह की हड्डी वाला लाल बछड़ा खड़ा था।

लाल बछड़ा बोला — "तुम वहॉ रोती हुई मत बैठी रहो। लो उठो। यह लो ये कपड़े लो और इन्हें पहन लो। और यह शीशे के जूते भी पहन लो। और जाओ चर्च चली जाओ।"

रशैन कोटी ने पूछा — "और शाम के खाने का क्या होगा?"

लाल बछड़ा बोला — "तुम उसकी चिन्ता न करो। तुमको तो बस आग से यह कहना है —

[28] Yuletide - Yule is used in the Nordic countries for Christmas with its religious rites, but also for the holidays of this season. Today Yule is also used to a lesser extent in the English-speaking world as a synonym for Christmas.

एक कोयला दूसरे को जलाओ एक चिमटे से दूसरे को पलटो
हर बरतन एक दूसरे के साथ खेलो जब तक मैं इस यूल के दिन चर्च से वापस आती हूँ

और बस अब तुम चर्च चली जाओ। पर हॉ इस बात का ध्यान रखना कि तुम वहॉ से सबसे पहले आ जाना – पूजा खत्म होने से भी पहले।"

सो रशैन कोटी ने कपड़े पहने अपने शीशे के जूते पहने और चर्च चली गयी। वह तो वहॉ सबसे ज़्यादा सुन्दर और शानदार लग रही थी।

वहॉ एक राजकुमार भी आया हुआ था। तो वह तो उसको देखते ही प्यार करने लगा था। पर वह चर्च की पूजा खत्म होने से पहले ही आ गयी और इस तरह सबसे पहले ही घर आ गयी।

घर आते ही उसने अपने बढ़िया कपड़े उतार दिये और अपना फटे कपड़ों का कोट पहन लिया। उसने देखा कि मेज पर खाना तैयार लगा रखा है और बछड़े ने उसको ढक रखा है। जब सब लोग घर आये तो बाकी चीज़ें भी सब ठीकठाक रखी हुई थीं।

उसकी तीनों बहिनें बोलीं — "ओह, ओ लड़की, काश अगर तूने चर्च में उस सुन्दर लड़की को देखा होता। वह नौजवान राजकुमार तो उसके प्यार में ही पड़ गया।"

रशैन कोटी बोली — "काश तुम मुझे कल चर्च जाने दो तो।"

क्योंकि इस मौके पर वे लोग तीन दिन तक लगातार चर्च जाते थे। वे फिर बोलीं — "तू वहाँ जा कर क्या करेगी तेरे लिये तो यह रसोईघर का कोना ही ठीक है।"

सो अगले दिन वे सब फिर से चर्च चली गयीं और रशैन कोटी घर में ही रह गयी – एक चम्मच मॉस का पानी, एक जौ का दाना, एक धागे जितना बड़ा मॉस का टुकडा और एक टुकड़ा रोटी का सूप बनाने के लिये।

पर लाल बछड़ा फिर से उसकी सहायता के लिये आया। इस बार उसने उसको पिछले दिन से और ज़्यादा बढ़िया कपड़े दिये। वह उनको पहन कर फिर चर्च चली गयी।

वहाँ फिर से सभी लोग उसको देख रहे थे और सोच रहे थे कि यह इतनी सुन्दर लड़की कहाँ से आयी है। राजकुमार तो उसके प्यार में और ज़्यादा पड़ गया था।

पर इस बार भी वह और सबसे पहले चर्च से उठ कर चली आयी। राजकुमार ने यह देखने के लिये उसका पीछा किया कि वह किधर जाती है पर वह उससे कहीं ज़्यादा तेज़ थी। वह उससे बच कर भाग आयी।

वह और सबसे भी पहले घर आ गयी थी। लाल बछड़े ने उस दिन भी शाम का खाना बना कर रखा हुआ था और खाने की मेज पर उसे लगा कर रखा हुआ था। मेज ढकी हुई थी। बाकी चीज़ें भी सब ठीकठाक से लगी रखी थीं।

अगले दिन भी जब सब चर्च चले गये तो लाल बछड़े ने उसको पहले दो दिनों से भी ज़्यादा बढ़िया कपड़े दिये। उस दिन वह उनको पहन कर चर्च गयी।

वह नौजवान राजकुमार वहॉ फिर मौजूद था। इस बार उसने उसके लिये दरवाजे पर एक चौकीदार खड़ा किया हुआ था पर इस बार तो उसने एक ऐसी कूद मारी कि वह उनके सिरों के ऊपर से हो कर निकल गयी।

पर जब उसने ऐसा किया तो उसका एक शीशे का जूता उसके पैर से निकल गया। अब उसको उठाने के लिये वह रुक तो नहीं सकती थी सो वह उसको वहीं छोड़ कर जितनी तेज़ी से अपने घर भाग सकती थी भाग गयी।

लाल बछड़े ने उस दिन भी घर में सब कुछ तैयार कर के रखा हुआ था।

नौजवान राजकुमार ने वह शीशे का जूता उठा लिया और सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जिस किसी के पैर में वह जूता आ जायेगा वही उसकी पत्नी बनेगी।

सब लड़कियों और स्त्रियों ने उस जूते को पहन कर देखा पर वह जूता तो उनमें से किसी के नहीं आया क्योंकि वह तो उन सबके पैरों के लिये बहुत ही छोटा था।

यह देख कर राजकुमार ने फिर अपना एक दूत उस जूते को ले कर अपने सारे राज्य में भेजा कि वह उस शीशे के जूते की मालकिन को ढूँढ कर लाये।

वह बेचारा उस जूते को ले कर सारे राज्य में घूमा। वहाँ उसने सारी स्त्रियों को उस जूते को पहनवा कर दिखलाया पर वह तो किसी के आया ही नहीं।

हर एक लड़की चाहती थी कि वह जूता उसके पैर में आ जाये तो वह उस राज्य की रानी बन जायेगी पर जब वह उसके पैर में नहीं आता तो बहुत सारी स्त्रियाँ तो बहुत रोयीं कि अब वह रानी नहीं बन पायेंगी।

वह दूत आखिर उन तीन बदसूरत लड़कियों के घर आ पहुँचा। वहाँ दोनों बड़ी लड़कियों ने उस जूते को पहन कर देखा पर वह उनको भी नहीं आया।

रानी तो यह देख कर कुछ पागल सी हो गयी तो उसने अपनी तीसरी बेटी की उँगलियाँ और एड़ी काट दीं। अब उसके वह जूता आ गया तो राजकुमार ने उसको शादी के लिये बुलवा लिया क्योंकि उसको तो अपना वायदा पूरा करना था।

वह लड़की अपनी सबसे अच्छी पोशाक में सजी और राजकुमार के पीछे घोड़े पर बैठ कर राजकुमार के साथ चल दी। वे सब वहाँ से शान से चले। पर घमंड कहीं न कहीं तो टूटता ही है।

जब वे सब इस तरह जा रहे थे तो एक झाड़ी में से एक रैवन[29] ने गाया —

इसकी एड़ी भी कटी हुई है और उँगलियाँ भी कटी हुई हैं
यह जो राजकुमार के पीछे सवार है
पर सुन्दर और छोटे पैरों वाली तो बड़े पतीले के पीछे बैठी हुई है

राजकुमार ने पूछा — "यह चिड़िया क्या गा रही है?"

उसकी दूसरी बहिन बोली — "उसकी बातों पर ध्यान मत दो वह तो ऐसे ही कुछ कुछ बोलती रहती है।"

पर राजकुमार को विश्वास नहीं हुआ तो उसने नीचे देखा तो उसने देखा कि उस लड़की जूते में से तो खून टपक रहा है। वह उसको ले कर वापस उसके घर गया उसको नीचे उतारा और बोला — "यहाँ कोई और होना चाहिये जिसने यह जूता पहन कर नहीं देखा है।"

उसकी दोनों बहिनें एक साथ बोलीं — "नही नहीं। यहाँ और कोई नहीं है सिवाय एक गन्दी लड़की के जो रसोईघर के कोने में बैठी रहती है और फटे कपड़ों का कोट पहनती है।"

पर राजकुमार तो उसको भी यह जूता पहना कर देखना था सो उसने उसको बुलवाया पर वह तो उस पत्थर की तरफ भाग गयी जहाँ उसने लाल बछड़े की हड्डियाँ दबायी थीं। वहाँ लाल बछड़े ने

[29] Raven is a crow like bird. See its picture above.

उसको बहुत बढ़िया कपड़े पहनाये और वह उनको पहन कर राजकुमार के पास गयी।

आश्चर्य। वह जूता तो राजकुमार की जेब से निकल कर अपने आप ही उसके पैर में आ गया। उसको अपनी एड़ी या उँगलियों को काटने की जरूरत ही नहीं पड़ी। वह तो उसी का जूता था न। राजकुमार ने उसी दिन उससे शादी कर ली और उसके बाद वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

7 सिन्डरैला या शीशे के छोटे जूते[30]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली है। यह कहानी भी बहुत पुरानी है, **1697** की, और वहाँ बहुत समय से कही सुनी जाती है।

एक बार एक आदमी था जिसकी पत्नी अपनी एक बेटी को छोड़ कर मर गयी थी। उसके मरने के बाद उसने दूसरी शादी कर ली।

उसकी यह दूसरी पत्नी बहुत ही ज़्यादा घमंडी और ताकतवर थी। उसके अपने पहले पति से दो बेटियाँ थीं जो हर तरीके से उसी की तरह थीं। वह उनको अपने साथ ले कर आयी थी।

इधर उस आदमी की अपनी पहली पत्नी से जो बेटी थी वह इतनी अच्छी और मीठे स्वभाव वाली थी कि उसका अपने अच्छेपन और मीठे स्वभाव में कोई सानी नहीं था। यह अच्छापन और मीठा स्वभाव उसको अपनी माँ से मिला था जो दुनियाँ की सबसे अच्छी स्त्री थी।

---

[30] Cinderella or Little Glass Slipper – a fairy tale from France, Europe. Written by Charles Perrault in 1697. This story is taken from "The Blue Fairy Book", by Andrew Lang, 5th ed, 1891.
Andrew Lang took it from, "Histoires ou contes du temps passé, avec des moralités", by Charles Perrault 1697. 7th ed in 1857. Its English version may be read at the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault Translated by DL Ashliman.

जैसे ही शादी की सब रस्में खत्म हुईं कि सौतेली मॉ ने अपने असली रंग दिखाने शुरू कर दिये। वह अपनी इस सौतेली लड़की के अच्छे गुणों को ज़रा भी सहन नहीं कर सकती थी।

ऐसा इसलिये भी था क्योंकि यह सब उसकी अपनी बेटियों को लोगों की नजरों में नीचे गिराता था।

वह अपनी उस सौतेली लड़की से घर के सारे छोटे से छोटे काम कराती। वह लड़की बेचारी सारे घर के बरतन मॉजती, अपनी सौतेली मॉ और उसकी बेटियों के कमरे साफ करती और फिर एक गन्दी सी जगह में तिनकों के बिस्तर पर सो जाती जबकि उसकी बहिनें अच्छे अच्छे कमरों में सोतीं।

वह बेचारी लड़की यह सब चुपचाप सहती पर अपने पिता से कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर पाती क्योंकि वह उसको डॉट देता क्योंकि वह अपनी पत्नी के कहने में चलता था।

जब वह लड़की अपना काम खत्म कर लेती तो वह चिमनी वाले कोने में चली जाती और वहॉ की धूल और कोयलों में जा कर बैठ जाती। इसी से उसका नाम सिन्डरवैन्च[31] पड़ गया।

उसकी दो सौतेली बहिनों में से उसकी केवल छोटी वाली बहिन ही उसको सिन्डरैला[32] कह कर पुकारती। वह अपनी बड़ी बहिन की तरह से बहुत बुरे व्यवहार वाली नहीं थी

[31] Cinderwench – a woman who rakes for the cinders in ashes

[32] Cinderella

सिन्डरैला अपने खराब कपड़ों को छोड़ कर अपनी दोनों बहिनों से सैंकड़ों गुना सुन्दर थी हालॉकि वे दोनों तो हमेशा ही बहुत अमीरों वाले कपड़े पहने रहतीं पर इससे वे सुन्दर तो नहीं हो जाती थीं।

एक दिन ऐसा हुआ कि फ्रांस के राजा के बेटे ने एक बहुत बड़े नाच का इन्तजाम किया और उस नाच में उसने सब तरह के लोगों को बुलाया। इस नाच के बाद वह राजकुमार उन लड़कियों में से अपने लिये एक दुलहिन भी चुनने वाला था।

इस नाच में उस आदमी की वे दोनों बेटियॉ भी बुलायी गयी थीं जो उसकी दूसरी पत्नी से थीं क्योंकि वे समाज में बहुत ऊॅचे ओहदे की समझी जाती थीं।

वे दोनों इस बुलावे से बहुत खुश थीं और सारा समय अपने गाउन, पैटीकोट, बाल बनाने के ढंग आदि का चुनाव करने में ही बिताती रहीं कि जब वे नाच में जायेंगी तो उन पर क्या अच्छा लगेगा।

पर सिन्डरैला के सामने यह कोई मुश्किल नहीं थी क्योंकि वही उन दोनों की चादरें इस्तरी करती थी और उन चादरों की झालर ठीक करती थी। पर उसकी बहिनें सारा दिन यही बात करती रहती थीं कि वे उस दिन क्या पहनेंगी।

बड़ी लड़की बोली — "मैं तो अपना लाल मखमल का सूट जिसमें फ्रैन्च झालर लगी है वही पहनूॅगी।"

छोटी वाली बोली — "मैं तो अपना रोज वाला पैटीकोट पहनूँगी और उसको और अच्छा दिखाने के लिये उसके ऊपर सुनहरी फूलों वाला क्लोक[33] पहनूँगी और अपनी हीरे की तिकोनी पेटी बाँधूँगी जो दुनियाँ में सबसे सुन्दर है।"

उन्होंने फिर जो भी उनको सबसे अच्छा बाल बनाने वाला मिल सकता था उसको बुलवाया और अपने बाल बनवाये। मैम पौश[34] के यहाँ से लाल ब्रश लिये गये।

इन सब मामलों में उन्होंने सिन्डरैला की भी सलाह ली क्योंकि वह इन सब बातों के बारे में बहुत कुछ जानती थी और उसकी सलाह बहुत काम करती थी। सिन्डरैला ने उनके बाल बनाने में सहायता करने के लिये भी कहा जो उन्होंने बड़ी खुशी से मान ली।

जब वह उनके बाल बना रही थी तो उन दोनों ने उससे पूछा — "सिन्डरैला क्या तुम हमारे साथ नाच में नहीं चलोगी?"

सिन्डरैला बोली — "अफसोस, तुम लोग मुझसे मजाक कर रही हो। मैं ऐसी जगह जाने लायक नहीं हूँ।"

वे बोलीं — "तुम ठीक कहती हो। एक सिन्डरवैन्च को नाच में देख कर तो लोग हँसेंगे ही न।"

---

[33] Cloak – a fashionable rich or plain cloth worn over the dress to cover or to keep oneself warm. It may be short up to the waist or long up to the ankle. See its picture above.

[34] Madam Posche

अगर कोई दूसरा होता तो इस समय शायद उनके बाल खराब कर देता पर सिन्डरैला बहुत अच्छी थी। उसने उनको बहुत अच्छी तरह से तैयार किया।

वे दोनों इतनी खुश थीं कि उन्होंने दो दिन तक कुछ नहीं खाया। उन्होंने दर्जन भर से ज़्यादा लेसेज़[35] तोड़ीं ताकि वह अपने शरीर को पतला दिखाने के लिये उसे ज़्यादा से ज़्यादा कस सकें। वे हमेशा ही अपने आपको शीशे में देखती रहतीं कि वे कैसी लग रही थीं।

आखिर वह खुशी का दिन भी आ गया जब उनको नाच में जाना था। वे गाड़ी में बैठ कर नाच में चली गयीं और सिन्डरैला उनको वहॉ से जाते हुए देखती रही। जब वे ऑखों से ओझल हो गयीं तो वह रो पड़ी।

उसको रोते देख कर उसकी गौडमदर[36] ने उससे पूछा — "क्या बात है बेटी तुम क्यों रो रही हो?"

रोते रोते सिन्डरैला बोली — "काश मैं भी इस नाच में जा सकती, काश मैं भी इस नाच में जा सकती।" इससे आगे उसके मुॅह से शब्द ही नहीं निकले बस वह तो रोती और सुबकती ही रही।

---

[35] Laces – a kind of dress which is worn to keep one's body tight to look thinner from the waist up for women. It is to be tied by strings at the back. See the picture above.

[36] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents

उसकी गौडमदर एक परी थी वह बोली — "तुम यह चाहती हो न कि तुम भी उस नाच में जा सकतीं। है न?"

सिन्डरैला एक लम्बी साँस ले कर बोली — "हाँ।"

परी फिर बोली — "अच्छा देखो तुम वहाँ एक अच्छी लड़की बन कर रहना तो मैं देखती हूँ कि तुम वहाँ उस नाच में जाओ।"

कह कर वह उसको अपने कमरे में ले गयी और उससे कहा — "जाओ और जा कर बागीचे में से एक काशीफल[37] तोड़ लाओ।" सिन्डरैला तुरन्त उसके कमरे के पीछे के बागीचे में गयी और उसका सबसे अच्छा काशीफल तोड़ लायी।

सिन्डरैला को तो यही समझ में नहीं आ रहा था कि वह काशीफल उसको नाच में जाने में कैसे सहायता करेगा।

उसकी गौडमदर ने उस काशीफल में से खुरच खुरच कर उस का सारा गूदा निकाल दिया और अब उसका केवल ऊपर का खोल बच गया। उस खोल पर उसने अपनी जादू की छड़ी मारी तो वह तो एक बहुत सुन्दर गाड़ी बन गयी जो सारी सोने से ढकी हुई थी।

फिर वह गौडमदर अपना चूहे पकड़ने वाला जाल देखने गयी तो वहाँ उसको छह चूहे मिल गये। वे सब ज़िन्दा थे।

[37] Translated for the word "Pumpkin". See its picture above.

उसने सिन्डरैला से कहा कि वह उस चूहे पकड़ने वाले जाल का दरवाजा थोड़ा सा खोल दे। सिन्डरैला ने वह भी कर दिया।

जैसे ही उसने चूहे पकड़ने के जाल का दरवाजा ज़रा सा खोला तो सारे चूहे उसमें से निकल कर भागना शुरू हो गये।

जैसे जैसे वे चूहे भागते जाते थे गौडमदर उनको अपनी जादू की छड़ी से मारती जाती थी। जादू की छड़ी लगते ही वे एक बहुत बढ़िया घोड़े में बदलते जाते थे। इससे वहाँ भूरे रंग के चूहों की जगह छह सुन्दर घोड़े खड़े हो गये।

गाड़ी भी खड़ी थी और छह सुन्दर घोड़े भी खड़े थे। बस अब एक गाड़ीवान की कमी थी। यह देख कर सिन्डरैला बोली — "मैं जा कर देखती हूँ अगर मुझको एक चूहा और उस चूहा पकड़ने वाले जाल में मिल जाता है तो, जिसको कि हम गाड़ीवान में बदल सकें।"

गौडमदर बोली — "तुम ठीक कहती हो। जाओ और जा कर देखो।" सिन्डरैला गयी और उसका चूहा पकड़ने वाला जाल उठा लायी। उसमें तो तीन बहुत बड़े बड़े चूहे फँसे पड़े थे।

गौडमदर ने उन तीन चूहों में से वह वाला चूहा चुना जिसकी सबसे ज़्यादा लम्बी दाढ़ी थी और उसको अपनी जादू की छड़ी से छुआ तो वह एक मोटे खुश खुश गाड़ीवान में बदल गया।

उस गाड़ीवान की तो मूँछें भी इतनी बढ़िया थीं कि ऐसी बढ़िया मूँछें कभी किसी ने कहीं देखी नहीं होंगी।

फिर गौडमदर ने सिन्डरैला से कहा — "तुम एक बार फिर से बागीचे में जाओ और देखना वहॉ तुमको बागीचे में पानी देने के बरतन के पीछे छह गिरगिट[38] मिल जायेंगे। उनको मेरे पास ले आओ।"

सिन्डरैला तुरन्त बागीचे में गयी और वहॉ से छह गिरगिट ले आयी। गौडमदर ने उनको अपनी जादू की छड़ी छुआ कर छह नौकरों[39] में बदल दिया।

वे छहों नौकर तुरन्त ही जा कर गाड़ी के पीछे खड़े हो गये। उनकी सजावट की सारी चीज़ें सोने और चॉदी की बनी थीं। वे गाड़ी के पीछे लाइन बना कर ऐसे एक दूसरे से सटे खड़े थे जैसे उन्होंने ज़िन्दगी में कभी कोई काम ही न किया हो।

गौडमदर ने सिन्डरैला से कहा — "तुम देख रही हो न कि तुम्हारे पास नाच में जाने के लिये पूरा सामान है। क्या तुम इस सब से खुश नहीं हो?"

सिन्डरैला खुशी से चिल्ला कर बोली — "हॉ हूँ मैं बहुत खुश हूँ। पर क्या मैं इन चीथड़ों में जाऊँ?"

यह सुन कर गौडमदर ने उसको अपनी जादू की छड़ी से छुआ तो उसके सब कपड़े सुनहरे और रुपहले हो गये जिनमें कीमती पत्थर

[38] Translated for the word "Lizard".

[39] Translated for the word "Footmen". A footman is a male servant who lets visitors into a house and serves food at the dinner table. Here he is meant to stand at the back of the carriage to take care of the passenger of the carriage.

जड़े थे। यह कर के गौडमदर ने उसको शीशे के जूते दिये जो दुनियॉ भर में सबसे सुन्दर जूते थे।

जूते पहन कर सिन्डरैला तुरन्त ही गाड़ी में सवार हो गयी। जब उसकी गाड़ी चलने लगी तो उसकी गौडमदर ने उसको होशियार किया कि वह इस बात का ध्यान रखे कि वह वहॉ आधी रात के बाद न ठहरे।

उसने उससे यह भी कहा कि अगर वह वहॉ आधी रात से एक पल भी ज़्यादा ठहरी तो उसकी गाड़ी काशीफल में, उसके घोड़े चूहों में, उसका गाड़ीवान बड़े चूहे में, उसकी गाड़ी के पीछे खड़े होने वाले आदमी गिरगिटों में और उसके कपड़े फिर से उन्हीं चीथड़ों में बदल जायेंगे।

सिन्डरैला ने गौडमदर से वायदा किया कि वह यकीनन आधी रात से पहले ही वहॉ से लौट आयेगी। वह इतनी खुश थी कि उसकी खुशी उससे छिपाये नहीं छिप रही थी।

वह जब राजकुमार के महल पहुॅची तो उसके चौकीदारों ने राजकुमार को बताया कि एक बहुत सुन्दर राजकुमारी जिसको कि वे जानते भी नहीं थे अन्दर आने की इजाज़त मॉग रही थी। यह सुनते ही राजकुमार उसको लेने के लिये दौड़ा।

राजकुमार ने अपना हाथ दे कर उसे गाड़ी से उतारा और नाच के उस कमरे में ले गया जहॉ और सब लोग भी मौजूद थे और नाच

रहे थे। उस लड़की को देख कर वहाँ एक पल के लिये तो बिल्कुल चुप्पी छा गयी।

सबने नाचना बन्द कर दिया। वायलिनें[40] बजनी बन्द हो गयीं। सब लोग उस अनजान नयी आने वाली लड़की की सुन्दरता को देख कर चकित रह गये थे। उस समय वहाँ कुछ सुनायी नहीं पड़ रहा था सिवाय इस फुसफुसाहट के कि "यह कितनी सुन्दर है, यह कितनी सुन्दर है।"

राजा भी जो कि काफी बूढ़ा था उसकी तरफ देखे बिना न रह सका। उसने अपनी रानी से कहा — "आज मैंने बहुत दिनों बाद इतनी सुन्दर कोई लड़की देखी है।"

वहाँ बैठी सारी स्त्रियाँ अपने अपने कपड़े और अपने अपने सिरों पर पहनी चीज़ें[41] इस उम्मीद में देखने लगीं कि शायद अगली बार वे उसी तरह की सिर पर पहनने वाली चीज़ अपने लिये भी बनवायें अगर उनको उस तरह का बढ़िया सामान और बढ़िया बनाने वाला मिल जाये तो।

राजा का बेटा सिन्डरैला को सबसे ज़्यादा इज़्ज़तदार सीट पर ले गया फिर उसको बाहर अपने साथ नाचने के लिये ले गया। वह राजकुमार के साथ इतना अच्छा नाची कि वहाँ बैठे सब लोग अब उसकी और भी ज़्यादा तारीफ करने लगे।

---

[40] A string musical instrument. See its picture above.

[41] Translated for the word "Headdress" – means caps, hats etc anything whatever can be worn on head.

नाच के बाद बहुत बढ़िया खाना लगाया गया पर राजकुमार तो उस खाने का एक कौर भी न खा सका क्योंकि वह तो सारे समय केवल उसी को देखता रहा।

खाना खा कर सिन्डरैला अपनी बहिनों के साथ जा कर बैठ गयी और वहॉ जा कर अपने तौर तरीकों का प्रदर्शन करने लगी। वहॉ उसने उनको उन सन्तरों और मौसमियों की छिली हुई फॉकें दीं जो राजकुमार ने उसको दी थीं।

यह देख कर तो वे बड़े आश्चर्य में पड़ गयीं क्योंकि वे तो उसको जानती भी नहीं थीं और वह उनको सन्तरा और मौसमी खिला रही थी।

जब सिन्डरैला अपनी बहिनों के साथ इस तरह की हॅसी कर रही थी तो उसने घड़ी के घंटे को पौने **12** बजाते सुना। उसने तुरन्त ही पास बैठे लोगों से माफी मॉगी और वहॉ से वह जितनी जल्दी हो सकती थी उतनी जल्दी भाग ली।

घर लौट कर आने पर वह सीधी अपनी गौडमदर के पास गयी। वहॉ उसने उसको धन्यवाद दिया और कहा कि वह उसको दिल से धन्यवाद देगी अगर वह उसको अगले दिन भी वहॉ जाने दे क्योंकि राजा के बेटे ने उसको बुलाया है।

जब वह बड़ी उत्सुकता से अपनी गौडमदर को यह बता रही थी कि राजा के बेटे के महल में नाच में क्या हुआ था तभी उसकी दोनों बड़ी बहिनों ने दरवाजा खटखटाया।

वह वहॉ से ऐसे दौड़ी और जैसे वह सो रही हो और दरवाजा खोलते हुए बोली — "अरे तुम लोग तो वहॉ बहुत देर तक रहीं।"

उनमें से उसकी एक बहिन बोली — "ओह, अगर तुम उस नाच में होतीं तो तुम तो वहॉ थकती ही नहीं। वहॉ पर तो आज एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी आयी हुई थी। और वह तो इतनी सुन्दर थी कि किसी ने इतनी सुन्दर राजकुमारी पहले कभी देखी ही नहीं होगी।

इसके अलावा उसका तो व्यवहार भी बहुत अच्छा था। उसने हमको सन्तरे और मौसमी भी खाने के लिये दिये।"

सिन्डरैला ने उसकी इन बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। पर उसने उस राजकुमारी का नाम पूछा तो उन्होंने कहा कि उनको उसका नाम नहीं मालूम।

पर राजकुमार उस राजकुमारी से मिल कर इतना खुश था कि वह उसको दुनियॉ की हर चीज़ दे देना चाहता था और सारे समय वह यही जानना चाहता रहा कि वह राजकुमारी कौन थी।

इस पर सिन्डरैला मुस्कुराते हुए बोली — "तब तो वह वाकई बहुत ही सुन्दर होगी। तुम भी कितनी खुश हो। ओह अफसोस मैं उसको नहीं देख सकी। ओ प्यारी चारलौट[42], तुम मुझे अपनी वह पीली पाशाक ही उधार दे दो न जो तुम रोज पहनती हो ताकि मैं भी राजकुमार के उस नाच में जा सकूॅ।"

[42] Charlotte – name of the elder stepsister of Cinderella

"हॉ हॉ क्यों नहीं। मुझे तो बहुत खुशी होगी न एक सिन्डरवैन्च को अपने कपड़े उधार देने में। तुमने मुझे क्या बेवकूफ समझ रखा है?"

सिन्डरैला ने अपनी बहिन से ऐसे ही जवाब की उम्मीद की थी और वह उससे यही जवाब सुनना भी चाहती थी।

वह उसके मुँह से अपने मन का जवाब सुन कर बहुत ही खुश हुई क्योंकि अगर वह उसको अपनी वह पोशाक उधार दे देती जो उसने उनसे मजाक में मॉगी थी तो उसको अगले दिन दुखी मन से वहॉ उसी पोशाक को पहन कर जाना पड़ता जो वह जाना नहीं चाहती थी।

अगले दिन वे दोनों बहिनें फिर से नाच में गयीं और सिन्डरैला भी गयी पर दूसरे दिन वह पहले दिन से और भी ज़्यादा सुन्दर लग रही थी।

राजा का बेटा सारी शाम बराबर उसके साथ था और बराबर उसकी तारीफ करता रहा और बराबर ही उससे बहुत नम्रता से बात करता रहा।

राजा के बेटे के इस तरह के व्यवहार ने सिन्डरैला को इतना खुश किया कि उसकी गौडमदर ने उसको क्या होशियारी बरतने के लिये कहा था यह तो वह बिल्कुल भूल ही गयी।

उसको लगा कि अभी तो **11** ही बजे हैं पर जब उसने घड़ी के घंटे गिने तो घड़ी ने **12** बजाये। घड़ी के **12** घंटे सुनते ही वह कूद पड़ी और हिरन की तरह वहॉ से भाग ली।

राजकुमार उसके पीछे भागा पर उसको पकड़ नहीं सका। इस भागा दौड़ी में उसके पैर से उसका एक शीशे का जूता निकल गया जिसे राजकुमार ने बड़ी सावधानी से उठा लिया।

अब वह घर तो पहुॅच गयी पर उसकी सॉस उखड़ी हुई थी। वह अपने पुराने कपड़ों में थी और उसकी सारी वे चीज़ें जो उसकी गौडमदर ने दी थीं वह सब गायब हो चुकी थीं सिवाय एक शीशे के जूते के क्योंकि दूसरा जूता अभी भी उसी के पैर में था।[43]

राजकुमार ने महल के दरवाजे पर जो चौकीदार खड़े थे उनसे पूछा कि क्या उन्होंने किसी राजकुमारी को उधर से जाते हुए देखा था।

उन्होंने जवाब दिया कि उन्होंने किसी राजकुमारी को तो उधर से जाते हुए नहीं देखा पर हॉ एक छोटी लड़की उधर से जरूर गयी थी जिसने बहुत ही मैले कुचैले कपड़े पहन रखे थे। वह तो किसी कुलीन घर की भी नहीं लगती थी बल्कि किसी गरीब घर की लगती थी।

[43] [My Note: This is ridiculous that she still had one glass shoe on her foot, while other things like clothes which were also on her body like shoes, were changed to her old clothes. Well this is a story…]

जब दोनों लड़कियॉ नाच से लौटीं तो सिन्डरैला ने उनसे पूछा कि "आज वहॉ कैसा रहा? क्या वहॉ उनका ठीक से स्वागत हुआ? वह पहले दिन वाली लड़की भी वहॉ थी या नहीं?" आदि आदि।

उन्होंने कहा हॉ उनका ठीक से स्वागत हुआ और वह पहले दिन वाली लड़की भी वहॉ मौजूद थी पर जैसे ही **12** बजे वह वहॉ से इतनी जल्दी भाग ली कि उसके पैर से उसका एक शीशे का जूता निकल गया जो बहुत ही सुन्दर था। उस जूते को राजा के बेटे ने उठा लिया।

राजा का बेटा सारे नाच के समय में उसी लड़की को देखता रहा। यकीनन वह उस शीशे के जूते वाली लड़की से प्यार करने लगा था।

जो कुछ उन्होंने कहा वह सब सच था क्योंकि कुछ ही दिनों के बाद राजकुमार ने बिगुल बजवा कर यह घोषणा करवा दी कि वह उसी लड़की के साथ शादी करेगा जिसके पैर में वह शीशे का जूता आ जायेगा।

उस शीशे के जूते को बहुत सारी लड़कियॉ और डचैस[44] को पहना कर देखने के लिये भेजा गया पर वह जूता किसी के पैर में भी नहीं आया।

वह जूता सिन्डरैला की दोनों बहिनों के पास भी पहनने के लिये लाया गया। उन्होंने भी उस जूते में अपना पैर घुसाने की काफी

[44] Duchess – the wife or widow of a Duke, such as the Duchess of Cambridge (Kate Middleton)

कोशिश की पर वे किसी तरह भी अपना पैर उस जूते में नहीं घुसा सकीं।

सिन्डरैला देख रही थी और उसको मालूम था कि वह उसका जूता है सो वह मुस्कुरा कर बोली — "मैं भी इसको पहन कर देखती हूँ शायद यह मेरे आ जाये।"

यह सुन कर उसकी बहिनें बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं। वह आदमी जो उस जूते को ले कर भेजा गया था उसने सिन्डरैला की तरफ इस तरह से देखा क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी जैसे वह उससे कह रहा हो कि "हाँ हाँ तुम भी इसको पहन कर देखो।"

उसने सिन्डरैला को बिठाया और उसके पैर में वह जूता पहनाया तो वह तो उसके पैर में इतनी आसानी से आ गया जैसे वह मोम का बना हो।

यह देख कर उसकी दोनों बहिनें तो आश्चर्यचकित रह गयीं। उनको यह देख कर तो और भी ज़्यादा आश्चर्य हुआ जब सिन्डरैला ने अपनी जेब से वैसा ही दूसरा जूता निकाल कर अपने दूसरे पैर में पहन लिया।

तब उसकी गौडमदर वहाँ आयी और उसके कपड़ों को अपनी जादू की छड़ी से छुआ तो उसके वे पुराने कपड़े इतने ज़्यादा अच्छे कपड़ों में बदल गये जितने अच्छे कपड़े तो पहले उसने कभी पहने ही नहीं थे।

उसकी दोनों बहिनों ने भी उसको उस लड़की के रूप में पहचान लिया जिसको उन्होंने राजकुमार के साथ में नाच में देखा था।

वे उसके पैरों पर गिर कर अपने बुरे व्यवहार के लिये उससे क्षमा माँगने लगीं जो वे उसके साथ अब तक करती रही थीं।

सिन्डरैला ने उनको ऊपर उठा लिया और गले से लगा लिया। उसने उन दोनों को क्षमा कर दिया और कहा कि वह तो बस यही चाहती है कि वे उसको हमेशा प्यार करती रहें।

वह आदमी सिन्डरैला को उन्हीं कपड़ों में राजकुमार के पास ले गया। राजकुमार को लग रहा था कि आज वह पहले से भी ज़्यादा सुन्दर लग रही थी। कुछ दिन बाद उसने सिन्डरैला से शादी कर ली।

सिन्डरैला केवल सुन्दर ही नहीं दिल की भी बहुत अच्छी थी। शादी के बाद उसने अपनी दोनों बहिनों को भी महल में रहने के लिये बुला लिया।

और उसी दिन उसने दरबार के दो अच्छे लौर्ड देख कर अपनी बहिनों की शादी भी उनसे करा दी।

8 फ़िने सिन्ड्रौन[45]

सिन्डरैला जैसी कहानियों में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की कहानियों से ली है।

एक बार की बात है कि एक राजा और एक रानी ने अपने हालात बहुत बिगाड़ लिये सो उनको उनके राज्य से बाहर निकाल दिया गया।

अब उनके पास खाना खाने के लिये भी कुछ नहीं था। सो उसके लिये सबसे पहले उनको अपना ताज बेचना पड़ा फिर अपने कपड़े बेचने पड़े फिर अपनी चादरें लेसेज़ फर्नीचर आदि बेचने पड़े।

पुरानी चीज़ें खरीदने वाले भी ऐसी सब चीज़ें खरीदते खरीदते थक गये था क्योंकि रोज ही उनके पास कुछ न कुछ नया बेचने के लिये आ जाता।

आखीर में जब वे अपने पास की आखिरी चीज़ भी बेच चुके तो राजा ने रानी से कहा — "अब तो हम अपने राज्य से बाहर निकाल दिये गये हैं और अब हमारे पास ज़िन्दा रहने के लिये भी कुछ नहीं है तो हमको अपने अपने आप ही अपने और अपने बच्चों के लिये रोटी कमानी चाहिये।

---

[45] Finette Cendron – a fairy tale from France, Europe. This story is taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/stories/finettecendron.html
There it is taken from the book : "The Fairy Tales of Madame D'Aulnoy", translated by Miss Annie Macdonell and Miss Lee. London: Lawrence and Bullen, 1892.
[This story is too elaborative to be called a story. It seems like a short novel instead of a story.]

ज़रा सोचो कि हम लोगों को क्या करना चाहिये। क्योंकि अब तक तो मैं केवल राजा बन कर ही जिया हूँ जो बहुत आसान था। पर अब हम क्या करें।"

रानी बहुत होशियार थी। उसने कहा — "इस मामले पर सोचने के लिये आप मुझे आठ दिन का समय दें।"

"ठीक है।"

आठ दिन कोई बहुत ज़्यादा दिन तो नहीं होते सो आठ दिन भी जल्दी ही बीत गये। आठ दिन के बाद रानी ने राजा से कहा — "योर मैजेस्टी, मेरी समझ में नहीं आता कि हम लोगों को इतना बदकिस्मत क्यों होना चाहिये।

आपको तो बस इतना करना है कि जंगल में चिड़ियें पकड़ने का और समुद्र में मछलियाँ पकड़ने का जाल बनाना है। और जब उन जालों की रस्सियाँ टूटने लगेंगीं तो मैं आपके लिये दूसरे जाल बना दूँगी।

जहाँ तक हमारी तीन बेटियों का सवाल है वे सब आलसी हैं फिर भी अपने आपको बहुत बड़ा समझती हैं और हमेशा खेलती ही रहती हैं।

हमको उनको बहुत दूर कहीं ऐसी जगह भेज देना चाहिये जहाँ से वे हमारे पास फिर कभी वापस न आ सकें। क्योंकि अब हम उनको उतने अच्छे तरीके से नहीं रख पायेंगे जैसा कि वे चाहती हैं।"

राजा यह सुन कर रो पड़ा। वह तो अपने बच्चों से अलग होने के ख्याल से ही कॉप गया क्योंकि वह अपनी बेटियों को बहुत प्यार करता था। वह एक बहुत ही प्यारा पिता था पर रानी...।

उसको रानी की सारी बातें माननी पड़ी क्योंकि उसके पास और कोई चारा ही नहीं था।

उसने रानी से कहा — "कल सुबह तुम जल्दी उठना और अपनी तीनों बेटियों को जहॉ तुम ठीक समझो वहॉ ले जाना।"

वे लोग जब ऐसा प्लान बना रहे थे तो उनकी सबसे छोटी बेटी फिने[46] चाभी के छेद में से यह सब सुन रही थी। जब उसने अपने माता पिता के इरादे सुने तो वह वहॉ से जितनी तेज़ी से भाग सकती थी एक छोटी गुफा की तरफ भाग गयी। वहॉ उसकी गौडमदर परी मरलूश[47] रहती थी।

उसने अपनी गौडमदर के लिये केक बनाने के लिये अपने साथ दो पौंड ताजा मक्खन कुछ अंडे दूध और कुछ आटा ले लिया ताकि उसका उसकी गौडमदर के घर में अच्छा स्वागत हो सके।

खुशी खुशी वह अपनी यात्रा पर चल दी। पर जैसे जैसे वह आगे बढ़ती गयी वह और ज़्यादा थकती गयी।

---

[46] Finett – pronounced as Finey

[47] Godmother Fairy Merluche – a Godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

उसके जूते के तले घिसते गये और उसके सुन्दर छोटे पैरों की हालत इतनी खराब हो गयी कि उनको देख कर दया आती थी। आखिर वह रुक गयी और वहीं घास पर बैठ कर रोने लगी।

तभी वहॉ से एक सुन्दर सी स्पेन का घोड़ा गुजरा जिस पर बहुत सुन्दर साज सजा हुआ था। उसके साज पर इतने सारे हीरे लगे हुए थे कि उनसे तीन से भी ज़्यादा शहर खरीदे जा सकते थे।

उसने राजकुमारी को वहॉ देख कर उसके बराबर खड़े हो कर अपने घुटने झुका कर उसको खाना खिलाया। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह उसके सामने झुक रहा हो।

राजकुमारी ने घोड़े की लगाम पकड़ कर कहा — "ओ सुन्दर घोड़े, क्या तुम मुझको मेरी गौडमदर परी के पास ले चलोगे? अगर तुम मुझे वहॉ ले जाओगे तो मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ होऊँगी। क्योंकि मैं इतनी थक गयी हूँ कि मैं तो बस अब मरने वाली हो रही हूँ।

और अगर तुम अब मेरी सहायता करोगे तो मैं तुमको खाने के लिये बहुत बढ़िया ओट्स[48] और भूसा और लेटने के लिये ताजा घास दूँगी।"

घोड़ा यह सुन कर उसके सामने करीब करीब लेट गया और फ़िने कूद कर उसकी पीठ पर चढ़ गयी। वह घोड़ा उसको ले कर एक चिड़िया की तरह उड़ चला।

[48] Oats is a kind of grain. See its picture above.

गुफा के दरवाजे पर आ कर वह रुक गया जैसे कि वह जानता हो कि उसको कहाँ आना था। असल में वह सचमुच जानता था कि उसको कहाँ आना था।

क्यों? क्योंकि वह तो मरलूश खुद ही थी जिसने यह मालूम होने पर कि उसकी गौडडौटर उससे मिलने आ रही थी इस घोड़े को उसको लेने के लिये भेजा था।

राजकुमारी ने अन्दर आ कर अपनी गौडमदर की पोशाक के नीचे वाले किनारे को पकड़ कर तीन बार झुक कर नमस्ते की और बोली — "गुड डे गौडमदर, आप कैसी हैं? यह लीजिये यह आपके लिये मैं वैसा ही एक केक बनाने के लिये थोड़ा सा मक्खन अंडे आटा और दूध लायी हूँ जैसा कि हम घर में बनाते हैं।"

परी बोली — "आओ फ़िने आओ मेरे पास आओ। मैं तुमको एक बार चूम लूँ।" ऐसा कहते हुए उसने फ़िने को दो बार चूमा। फ़िने तो उसका प्यार पा कर बहुत खुश हो गयी क्योंकि मैम मरलूश कोई मामूली परी नहीं थी।

उसने फ़िने से फिर कहा — "मैं चाहती हूँ कि तुम मेरी अपनी दासी बन जाओ। लो यह कंघी लो और मेरे बालों में कंघी कर दो।"

राजकुमारी ने उसके बाल खोले और उससे उनमें जितने अच्छे तरीके से कंघी हो सकती थी कंघी की।

मरलूश फिर बोली — "मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि तुम यहॉ क्यों आयी हो। तुमने राजा और रानी की बातें सुन ली हैं कि वे तुमको घर से बाहर निकालना चाहते हैं और तुम यह नहीं चाहती थीं कि तुम्हारे साथ ऐसा कुछ हो।

इसके लिये तुमको बस यह करना है कि धागे का एक गोला लेना है और उस धागे के सहारे घर आ जाना है। लो धागे का यह गोला लो। यह धागा कभी नहीं टूटेगा। इस गोले के धागे का एक सिरा तुम अपने दरवाजे से बॉध देना और गोला अपने हाथ में रखना।

जब रानी तुमको छोड़ दे जहॉ उसको तुम्हें छोड़ना है तो बस तुम उस धागे के सहारे सहारे घर वापस आ जाना।"

कर कर परी ने उसको उस गोले के साथ साथ एक थैला भर कर सोने चॉदी के तारों से बनी पोशाकें भी दीं और उसको चूम कर घोड़े पर बिठा दिया।

राजकुमारी ने परी को धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दी। दो तीन मिनट में ही वह अपने पिता के घर पर आ पहुॅची।

फ़िने ने घोड़े से कहा — "ओ मेरे छोटे दोस्त, तुम बहुत सुन्दर हो, बहुत अच्छे हो। तुम तो सूरज से भी तेज़ भागते हो। तुमको इतनी परेशानी उठाने के लिये धन्यवाद। अब तुम वहीं चले जाओ जहॉ से तुम आये थे।"

घोड़े से यह कह कर वह घर में घुसी। बिना कोई आवाज किये उसने अपना थैला अपने तकिये के नीचे छिपाया और सोने चली गयी जैसे कुछ हुआ ही न हो।

अगले दिन जैसे ही दिन निकला तो राजा ने रानी को उठाया और कहा — "उठो चलो चलने के लिये तैयार हो जाओ।"

रानी उठी और तुरन्त ही तैयार हो गयी। उसने एक छोटा सा स्कर्ट पहना उसके ऊपर एक सफेद कमीज पहनी और हाथ में एक डंडी ली।

फिर सबसे पहले उसने अपनी सबसे बड़ी बेटी फ़्लूर डीअमूर[49] को बुलाया फिर दूसरी बेटी को बुलाया और फिर फ़िने को बुलाया जैसे कि उसको सबसे आखीर में बुलाया जाता था।

जब उसकी तीनों बेटियॉ वहॉ आ गयीं तो उसने उनसे कहा — "कल रात मैंने सपने में देखा कि हम सबको मेरी बहिन को मिलने जाना चाहिये। वह हम लोगों को ठीक से रखेगी और हम सब वहॉ आनन्द करेंगे।"

फ्लूर डीअमूर जो यहॉ इस तरह के अकेले रहने से तंग आ गयी थी मॉ से बोली — "ठीक है मॉ, जहॉ आप कहेंगी हम वहीं चलेंगे। बस मुझे तो यहॉ से निकलना है फिर हम कहीं भी जायें।"

दोनों दूसरी बहिनों ने भी यही कहा और राजा को गुड बाई कह कर चारों वहॉ से चल दीं।

---

[49] Fleur d'Amour – name of the eldest sister

वे लोग वहॉ से इतनी दूर चलीं कि फ़िने ओरील[50] को तो डर ही लगने लगा कि कहीं ऐसा न कि उसके पास उसका धागा ही कम पड़ जाये क्योंकि वे लोग कम से कम एक हजार लीग[51] तो चली ही होंगी। वह हमेशा ही अपनी बहिनों के पीछे ही चलती रही और अपना धागा झाड़ियों में छिपा कर डालती रही।

जब रानी ने देखा कि उसकी बेटियॉ अब घर का रास्ता वापस नहीं ढूँढ पायेंगी तब वह एक बड़े से जंगल की तरफ चली गयी और बोली — "मेरे प्यारे बच्चों आओ और थोड़ी देर के लिये यहॉ सो कर आराम कर लो। मैं उसी तरह तुम्हारी रक्षा करूँगी जैसे कोई चरवाहा भेड़िये से अपनी भेड़ों की रक्षा करता है।"

सो सब लड़कियॉ वहॉ लेट गयीं और सो गयीं। जब वे सब सो गयीं तो रानी वहॉ से उठी और यह सोचते हुए वहॉ से चल दी कि अब वह उनको कभी नहीं देखेगी।

पर फ़िने ने केवल अपनी ऑखें ही बन्द कर रखी थीं। वह सोयी नहीं थी।

उसने सोचा — "अगर मैं कोई बुरी लड़की होती तो मैं अपनी बहिनों को यहॉ मरने के लिये छोड़ कर तुरन्त ही चली जाती क्योंकि वे मुझे मारती हैं और तब तक मारती रहती हैं जब तक मेरे शरीर से

[50] Fine-Oreille – as Finett Cendron was called at home

[51] A league is a unit of length. Now it is no longer an official unit in any nation. The word originally meant the distance a person could walk in an hour. On land, the league was most commonly defined as three miles, though the length of a mile could vary from place to place and depending on the era. [It seems some exaggeration.]

खून नहीं निकल आता। फिर भी उनकी इतनी बेरहमी के बाद भी मैं उनको यहॉ अकेला छोड़ कर नहीं जाऊॅगी।"

सो अपनी मॉ के वहॉ से जाने के बाद उसने अपनी बहिनों को जगाया और उनको सारी कहानी बतायी। यह सब सुन कर उन्होंने तो रोना शुरू कर दिया और उससे अपने साथ ले जाने के लिये कहा।

उन्होंने उससे यह भी कहा कि अगर वह उनको अपने साथ ले गयी वे उसको सुन्दर सुन्दर गुड़ियें देंगीं और अपना चॉदी का गुड़ियों का घर भी देंगीं और और भी बहुत सारे खिलौने देंगीं।

फ़िने बोली — "मुझे मालूम है कि तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगी पर फिर भी मैं तुम्हारी अच्छी बहिन बनूॅगी। चलो।"

कह कर वह उठी और अपने धागे के पीछे पीछे चल दी। उसकी बहिनें उसके पीछे पीछे चल दीं। वे तीनों भी करीब करीब रानी के साथ साथ ही घर पहुॅच गयीं।

जब वे दरवाजे पर पहुॅचीं तो उन्होंने सुना कि राजा रानी से कह रहा था — "तुमको यहॉ अकेला आते देख कर मेरा दिल बहुत रो रहा है।"

रानी बोली — "पर हम नहीं जानते कि हम अपनी बेटियों का क्या करते।"

राजा दुखी हो कर बोला — "काश तुम मेरी फ़िने को वापस ला सकतीं। मुझे अपनी दूसरी बेटियों की इतनी चिन्ता नहीं है क्योंकि वे तो किसी की परवाह ही नहीं करतीं।"

तभी दरवाजे पर खटखट हुई।

राजा ने पूछा — "कौन है?"

राजा की तीनों बेटियॉ एक साथ बोलीं — "पिता जी हम हैं फ्लूर डीअमूर, बैले डीनुइ और फ़िने ओरील[52] आपकी तीनों बेटियॉ।"

यह सुन कर रानी तो कॉप गयी। उसने राजा से कहा — "दरवाजा नहीं खोलना। मुझे पूरा यकीन है कि वे जरूर उनके भूत होंगे क्योंकि वे अपने आप तो यहॉ तक आ ही नहीं आ सकतीं।"

और राजा जो अपनी पत्नी जैसा ही डरपोक था वहीं से बोला — "तुम लोग मुझे धोखा दे रही हो। तुम मेरी बेटियॉ नहीं हो।"

पर फ़िने ओरील जो बड़ी हाजिरजवाब लड़की थी बोली — "पिता जी मुझे देखिये, मैं बिल्ली के आने के रास्ते तक झुक रही हूॅ आप ज़रा मुझे देखिये तो। और अगर मैं आपको फ़िने ओरील न दिखायी दूॅ तो आप मेरी पिटायी कर सकते हैं।"

राजा ने बिल्ली के आने के रास्ते तक नीचे झुक कर देखा तो उसने देखा कि वहॉ तो उसकी फ़िने खड़ी थी। उसको देखते ही उसने घर का दरवाजा खोल दिया।

---

[52] Fleur d'Amour, Belle-de-Nuit, and Fine-Oreille – names of the three daughters of the King.

रानी ने बहाना किया कि वह उनको वहॉ देख कर बहुत खुश थी और बोली कि वह घर में कुछ भूल गयी थी वह उसी को लेने के लिये वहॉ आयी थी। पर अब वह बहुत खुश थी कि उसके बच्चे अब घर वापस आ गये थे।

बच्चों ने भी उसको ऐसा दिखाया जैसे उन्होंने उसका विश्वास कर लिया हो और अपने अपने सोने की जगह चले गये।

वहॉ जा कर फ़िने बोली — "देखो बहिनों तुम लोगों ने मुझे गुड़िया देने का वायदा किया था सो अब तुम मुझे वह दो।"

उसकी बड़ी बहिनें बोलीं — "और तुम हमसे यह उम्मीद करती हो कि हम तुम्हें वह दे देंगे? ओ छोटी बॅदरिया। यह तो केवल तुम्हारी वजह से ही है कि पिता जी हमको प्यार नहीं करते।"

कह कर उन्होंने अपने अपने अटेरन[53] उठाये और उनसे उसको बड़ी बेरहमी से मारना शुरू कर दिया। जब उन्होंने उसको खूब पीट लिया तब वह बेचारी सोने चली गयी।

उसका शरीर सूज गया था और उस पर पिटायी के बहुत सारे निशान भी थे सो वह रात को सो ही नहीं सकी।

सो रात में उसने फिर रानी को कहते सुना — "अबकी बार मैं इनको दूसरी तरफ और पहले से भी ज़्यादा दूर ले जाऊॅगी। मुझे

[53] Translated for the word "Distaff" – see its picture above.

पूरा यकीन है कि इस बार वे वहॉ से कभी वापस नहीं आ पायेंगी।"

जब फ़िने ने उसका यह प्लान सुना तो वह फिर से चुपचाप उठी और उसने अपनी गौडमदर के पास जाने की सोची। वह अपने मुर्गीखाने में गयी और वहॉ से उसने दो मुर्गी के बच्चे और एक बहुत ही बढ़िया वाला मुर्गा लिया और उन सबकी गरदनें तोड़ दीं।

फिर उसने दो छोटे छोटे खरगोश उठाये जिनको रानी अगली दावत के लिये बन्द गोभी खिला खिला कर बड़ा कर रही थी। उन सबको एक थैले में रखा और चल दी।

पर अबकी बार वह एक लीग भी नहीं गयी थी कि स्पेन का वही सुन्दर घोड़ा उसके सामने आ खड़ा हुआ और हिनहिनाने लगा। पहले तो उसको देख कर वह डर गयी। उसको लगा कि बहुत सारे सिपाही आ गये हैं और बस अब वह पकड़ी गयी।

पर फिर उसने देखा कि वह घोड़ा तो वही घोड़ा था जो उसको पहले उसको उसकी गौडमदर के घर ले गया था और अकेला ही था तो वह उस पर चढ़ गयी और आराम से उस पर बैठ कर उसके साथ चल दी। बहुत जल्दी ही वह अपनी गौडमदर के घर पहुॅच गयी।

नमस्ते कर के उसने गौडमदर परी मरलूश को वह मुर्गी के बच्चे, मुर्गा और खरगोश दिया और उससे उसको अपनी सहायता

करने की प्रार्थना की। उसने उसको यह भी बताया कि किस तरह रानी उसको दुनियॉ के दूसरे कोने पर छोड़ने के लिये तुली हुई थी।

परी मरलूश ने उसको तसल्ली दी कि वह उसकी बिल्कुल चिन्ता न करे। फिर उसने उसको एक थैला भर कर राख दी और कहा — "लो राख से भरा यह थैला लो। जब तुम्हारी मॉ तुमको ले कर जाये तो तुम इसको अपने सामने रख कर लेती जाना और जाते समय बस इसको हिलाती जाना।

इस तरह से तुम उस राख पर चलती जाओगी जो उस थैले के हिलाने से नीचे गिरेगी और जब तुमको वापस आना होगा तो बस अपने पैरों के निशान देखती हुई वापस चली आना।

पर इस बार अपनी बहिनों को साथ मत लाना। वे बहुत बुरी हैं। अगर तुम उनको साथ लायीं तो मैं तुमसे फिर कभी नहीं मिलूँगी।"

परी मरलूश ने उसको एक छोटे से बक्से में **30–40** मिलियन हीरे भी दिये। उस राख के थैले और हीरों के बक्से को ले कर फ़िने ने उससे विदा ली और अपने उसी घोड़े पर सवार हो कर अपने घर आ गयी।

अगले दिन सुबह जब दिन निकला तो रानी ने अपनी सब बेटियों को बुलाया और जब वे आ गयीं तो उनसे कहा — "राजा की तबियत कल रात ठीक नहीं थी।

कल रात मैंने सपने में देखा कि अगर हमें राजा को ठीक करना है तो हमें फलॉ देश में फूल और जड़ी बूटी लाने के लिये जाना चाहिये। वहॉ वे बहुत अच्छे उगते हैं। उनसे राजा की तन्दुरुस्ती और अच्छी हो जायेगी। चलो तैयार हो जाओ चलते हैं।"

फ्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ को तो यह विश्वास ही नहीं हुआ कि उनकी मॉ उनको फिर से छोड़ आने के लिये इतनी बेताब है इसलिये वे दोनों यह सुन कर बहुत दुखी हुईं।

खैर फिर भी उनको उसके साथ जाना पड़ा। इस बार वे इतनी दूर चले कि इतनी लम्बी यात्रा उन्होंने पहले कभी नहीं की थी।

इस सारे रास्ते फिने कुछ नहीं बोली और अपनी राख बिखराते हुए उन सबके पीछे चलती रही। रानी ने भी यह पक्का कर लिया कि अबकी बार वह इनको इतनी दूर छोड़ कर आयेगी कि वे फिर कभी वापस लौट कर नहीं आ पायेंगी। सो वह उनको बहुत दूर ले गयी।

एक दिन रानी ने देखा कि उसकी तीनों बेटियॉ बहुत ज़ोर से सो रही थी। बस उसने उनके इस सोने का फायदा उठाया और उनको वहीं सोता छोड़ कर वह वापस अपने घर आ गयी।

जब सुबह हुई तो फ़िने ने देखा कि उनकी मॉ तो वहॉ नहीं है। तो उसने अपनी बहिनों को जगाया और उनसे कहा —"हम अकेले हैं। रानी तो यहॉ से चली गयी।"

फ्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ ने तो यह सुन कर फिर से रोना शुरू कर दिया अपने बाल नोचने शुरू कर दिये और अपने चेहरों पर घूँसे मारने शुरू कर दिये।

"उफ़ अब हम क्या करें।"

फ़िने दुनियॉ की बहुत ही दयालु लड़की थी सो उसको अपनी बहिनों पर फिर से दया आ गयी।

उसने सोचा "मैं भी कितनी मुसीबत में फॅस गयी हूँ। क्योंकि जब मेरी गौडमदर ने मुझे वापस आने का रास्ता बताया था तब उन्होंने मुझे इनको रास्ता न बताने के लिये भी कहा था। और यह भी कहा था कि अगर मैंने उनका कहा नहीं माना तो वह मुझसे फिर कभी नहीं मिलेंगी। पर अब मैं क्या करूँ।"

उधर फ्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ दोनों फ़िने के गले से लिपट गयीं और उसकी कमर पर इतने प्यार से हाथ फेरा कि बस जल्दी ही फ़िने उन दोनों को अपने साथ ले कर अपने घर आ गयी।

राजा और रानी उनको फिर से वापस आया देख कर फिर से आश्चर्य में पड़ गये। वे सारी रात उनके बारे में बात करते रहे। उनकी सबसे छोटी बेटी ने जो बेकार में ही फ़िने ओरील[54] नहीं कहलाती थी फिर से उनका नया प्लान सुना कि अगले दिन वह उनको फिर से किसी रेगिस्तान में ले जायेगी।

[54] Meaning "Sharp ears"

वह तुरन्त अपनी बहिनों के पास गयी उनको जगाया और कहा — "हम लोग फिर परेशानी में पड़ गये हैं। रानी ने हम लोगों को फिर से छोड़ने का प्लान बनाया है। अबकी बार वह हमको किसी रेगिस्तान में छोड़ने वाली है।

यह सब तुम्हारी गलती है कि मेरी गौडमदर अब मुझसे नाराज है। और अब मैं उसके पास जा भी नहीं सकती जैसे मैं पहले जाती थी।"

अब वे सब मुश्किल में थीं। सब एक दूसरे से कह रही थीं "अब हम क्या करें, अब हम क्या करें।"

आखिर बैले डीनुइट बोली — "हमको अपने आपको बहुत ज़्यादा परेशान करने की जरूरत नहीं है। दुनियॉ भर में अकेली वह बुढ़िया मरलूश ही होशियार नहीं है।

हमको अपने साथ केवल मटर के दाने ले जाने हैं और उनको सड़क के किनारे किनारे बोते जाना है। उन्हीं के सहारे सहारे हम लोग वापस आ जायेंगे।"

फ़्लूर डीअमूर ने सोचा यह तो बहुत अच्छा तरीका है। सो उन दोनों ने बहुत सारे मटर के दाने ले कर अपनी जेबों में भर लिये। पर फ़िने ओरील ने मटर के दाने नहीं लिये।

उसने अपना कपड़ों का थैला लिया और हीरों का वह छोटा सा बक्सा लिया जो उसकी गौडमदर ने उसे दिया था और जब सुबह को

उनकी मॉ ने उनको चलने के लिये आवाज लगायी तो वे सब अपने अपने सामान के साथ चलने के लिये तैयार थीं।

रानी ने उस दिन उनसे कहा — "कल रात मैंने एक सपना देखा कि एक देश में जिसका नाम मुझे तुम्हें बताने की जरूरत नहीं है तीन राजकुमार हैं जो तुमसे शादी करना चाहते हैं। तो मैं तुम्हें तुमको वहॉ ले जाना चाहती हूॅ और देखना चाहती हूॅ कि मेरा सपना सच्चा निकलता है या नहीं।"

रानी आगे आगे चल दी और उसकी तीनों लड़कियॉ उसके पीछे पीछे चल दीं। उसकी दोनों बड़ी लड़कियॉ बिना किसी चिन्ता के मटर के दाने बोती हुई चली जा रही थीं।

उनके मन में इस बात का ज़रा सा भी कोई शक नहीं था कि वे उन मटर के दानों के सहारे घर वापस नहीं लौट पायेंगी।

इस बार रानी पिछले दो दिनों से भी ज़्यादा दूर गयी पर एक अॅधेरी रात को वह उनको वहीं छोड़ कर राजा के पास चली आयी। जब वह घर पहुॅची तो बहुत थकी हुई थी पर खुश थी कि अब उसके कन्धों पर उतने बड़े घर का बोझा नहीं था।

वे तीनों लड़कियॉ भी बहुत थक गयी थीं सो वे भी अगले दिन 11 बजे तक सोती रहीं। पर सबसे पहले फ़िने को यह पता चला कि रानी वहॉ नहीं थी।

हालॉकि यह उसको पता था कि वह उन सबको वहॉ अकेला छोड़ कर चली जायेगी पर फिर भी उसकी ऑखों से ऑसू बह निकले।

उसको अपनी गौडमदर की सहायता में ज़्यादा विश्वास था बजाय अपनी बहिनों की होशियारी के। डर में डूबी फ़िने ने उनको बताया कि रानी तो उनको वहॉ अकेला छोड़ कर वहॉ से जा चुकी है और अब उनको भी वहॉ से जल्दी से जल्दी चलना चाहिये।

फ़्लूर डीअमूर बोली — "ओ छोटी बॅदरिया ज़रा चुप तो रह। हम लोग जब भी चाहेंगे तभी घर जाने का रास्ता ढूॅढ लेंगे। तू हमारे बीच में दखल मत दे जब तक कि तुझसे कोई तेरी कोई राय न पूछे।"

यह सुनने के बाद फ़िने की उसकी इस बात का कोई जवाब देने की हिम्मत ही नहीं हुई।

पर जब उन्होंने घर का रास्ता ढूॅढने की कोशिश की तो उनको तो रास्ता मिला ही नहीं क्योंकि उस देश में बहुत सारे कबूतर रहते थे उन्होंने वे सारे मटर के दाने खा लिये थे।

यह देख कर तो वे दोनों राजकुमारियॉ रोने लगीं। उन्होंने दो दिन से कुछ खाया भी नहीं था सो उनको भूख भी बहुत लगी थी। फ्लूर डीअमूर ने बैले डीनुइ से पूछा "क्या तुम्हारे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है?"

"नहीं।"

यही सवाल उसने फ़िने से भी पूछा तो उसने भी यही जवाब दिया कि उसके पास भी खाने के लिये कुछ नहीं था। पर फिर वह बोली — "पर मुझे अभी अभी एक ओक का फल[55] मिल गया है।"

उसकी दोनों बहिनों में से एक बोली "मुझे दे वह फल।"

तभी दूसरी बहिन बोली "नहीं मुझे दे वह फल।"

इस तरह से वे दोनों ही झगड़ने लगीं।

फ़िने बोली "पर एक फल तीनों की भूख कैसे मिटायेगा। इसलिये हम इसको बो देते हैं तो दूसरा हमारे इस्तेमाल के लिये उसमें से उग आयेगा।"

सो वे तीनों राजी हो गयीं। हालॉकि वहॉ ऐसे देश मे उसके उग आने की आशा भी बहुत कम थी क्योंकि वहॉ तो चारों तरफ केवल बन्द गोभी और लैटस[56] ही उगते हुए दिखायी देते थे।

तीनों राजकुमारियॉ केवल यही खा रही थीं। पर अगर शायद वे बहुत ज़्यादा कोमल होतीं तब तो वे अब तक सौ बार मर चुकी होतीं।

[55] Fruit of the Oak tree is called Acorn. See its picture above.

[56] Lettuce is like cabbage head and is eaten as salad. See its picture above.

हर रात वे सितारों के नीचे लेटतीं और हर सुबह और हर शाम वे उस ओक के फल के बीज को यह कहते हुए पानी देतीं "ओ ओक के फल तू जल्दी जल्दी बड़ा हो जा।"

धीरे धीरे वह फल का बीज बढ़ता हुआ दिखायी देने लगा। जब वह पेड़ काफी बड़ा हो गया तो फ़्लूर डीअमूर ने उस पर चढ़ना चाहा पर तब तक वह पेड़ इतना मजबूत नहीं हुआ था कि वह उसका बोझ सह सकता।

सो जैसे ही उसको लगा कि वह पेड़ उसके बोझ से झुका जा रहा है तो वह उससे नीचे उतर आयी। यही हाल बैले डीनुइ का भी हुआ।

फ़िने सबसे छोटी थी सो वह सबसे हल्की थी। वह भी उस पेड़ पर चढ़ी। वह अपनी दोनों बहिनों से ज़्यादा देर तक ऊपर रही। उसकी दोनों बहिनों ने उससे पूछा कि क्या उसको वहॉ से कुछ दिखायी दे रहा था तो उसने जवाब दिया कि "नहीं मुझे तो यहॉ से अभी कुछ दिखायी नहीं दे रहा।"

फ़्लूर डीअमूर बोली — "ऐसा शायद इसलिये है कि यह पेड़ बहुत ऊॅचा नहीं है।"

सो उन्होंने उस पेड़ को यह कहते हुए पानी देना जारी रखा "बढ़ बढ़ मेरे ओक के पेड़ जल्दी जल्दी बढ़।"

पर फ़िने उस पेड़ पर दिन में दो बार चढ़ने से नहीं चूकती।

और एक सुबह जब फ़िने उस पेड़ पर चढ़ी हुई थी तो बैले डीनुइ ने फ़्लूर डीअमूर से कहा — "मुझे एक थैला मिला जो हमारी बहिन ने हमसे छिपा रखा था। इसमें क्या हो सकता है।"

फ़्लूर डीअमूर बोली — "फ़िने एक बार कह रही थी कि इसमें एक लेस है जिसकी वह मरम्मत कर रही थी।"

पर बैले डीनुइ बोली — "मुझे लगता है कि इसके अन्दर शुगर प्लम्स[57] हैं।" असल में बैले डीनुइ बहुत लालची थी सो वह जानना चाहती थी कि उस थैले के अन्दर क्या था।

उसने वह थैला खोल लिया। उसने उसमें राजा और रानी के लेस देखे पर वे तो केवल फ़िने के सुन्दर कपड़े और हीरों के बक्से को छिपाने के लिये इस्तेमाल किये गये थे।

उन्हें देखते ही वह चिल्लायी — "अरे क्या कभी ने ऐसा नीच आदमी भी देखा है जैसी यह हमारी बहिन है। चलो इन सबको उन्हीं की जगह रख देते हैं।"

और उन्होंने उन सबको उनकी जगह पर ही रख दिया।

जब फ़िने वापस आयी तो उसको पता ही नहीं चला कि उसकी बहिनों ने क्या किया था क्योंकि वह रेगिस्तान में हीरों के बारे में सोच ही नहीं सकी। इस समय तो वह केवल ओक के पेड़ को बारे में ही सोच रही थी जो बहुत सुन्दर तरीके से बढ़ रहा था।

[57] A kind of hard candy

एक बार फिर जब वह पेड़ पर चढ़ी हुई थी तो उसकी बहिनों ने उससे फिर पूछा कि क्या वहॉ से उसने कुछ देखा?

तो वह चिल्लायी — "हॉ मुझे एक बहुत बड़ा घर दिखायी दे रहा है। वह घर बहुत सुन्दर है जिसे मैं तुमको शब्दों में नहीं बता सकती।

उसकी दीवारें हीरों और लाल की बनी हैं। उसकी छतें हीरों की बनी हैं। और वह सारा का सारा घर सोने की घंटियों से ढका हुआ है। उसके ऊपर मौसम बताने वाले कई मुर्गे हवा से इधर उधर घूम रहे हैं।"

दोनों बहिनें बोली — "नहीं यह नहीं हो सकता। तू झूठ बोल रही है। वह मकान इतना सुन्दर नहीं हो सकता।"

फिने बोली — "मेरा विश्वास करो। मैं झूठ नहीं बोल रही। तुम लोग खुद यहॉ आ कर देख लो न क्योंकि मेरी ऑखें तो उसकी चमक से ही चकाचौंध हो रही हैं।"

सो फ़्लूर डीअमूर उस पेड़ पर चढ़ गयी और जब उसने उस किले को देखा वह तो उसके सिवा और किसी की बात ही नहीं कर सकी।

बैले डीनुइ जो उसको देखने के लिये बहुत उत्सुक थी। वह भी उन दोनों से पीछे रहना नहीं चाहती थी। सो वह भी उस पेड़ पर चढ़ गयी और उस किले को देख कर बहुत खुश हुई।

तीनों उस किले को देख कर बोलीं — "चलो हमें वहॉ तक चलना चाहिये। हो सकता है कि हमको वहॉ वे तीन राजकुमार मिल जायें जो हमसे शादी करना चाहते थे।"

सारी शाम वे उसी किले की ही बातें करती रहीं और अपने प्लान बनाती रहीं। फिर वे घास पर लेट गयीं और जब फ़िने सो गयी तो फ़्लूर डीअमूर ने बैले डीनुइ से कहा — "तुम्हें पता है कि हमको क्या करना चाहिये। हमको वे बढ़िया कपड़े पहन लेने चाहिये जो फ़िने ले कर आयी है।"

"तुम ठीक कहती हो।"

सो उन्होंने अपने बाल घुँघराले किये अपने चेहरे पर पाउडर लगाया और फिने के थैले में से निकाल कर सुनहरी और रुपहली गाउन पहन लिये जिन पर सारे में हीरे लगे हुए थे ओर उस किले की तरफ चल दीं। किसी ने पहले ऐसा दृश्य नहीं देखा होगा।

फ़िने को तो पता ही नहीं था कि उसकी नीच बहिनों ने उसको लूट लिया है। उसने भी तैयार होने के लिये अपना थैला उठाया तो वह तो यह देख कर बहुत दुखी हो गयी कि उसके थैले में तो पत्थर के टुकड़े भरे हुए थे। उसकी पोशाकें तो उसकी बहिनों ने ले ली थीं।

पर उसी समय उसने अपनी बहिनों को सूरज की तरह चमकते देखा। तो वह रो पड़ी और उनको इस तरह धोखा देने के लिये

बहुत बुरा भला कहने लगी। पर वे केवल उस पर हॅस दीं और उसका मजाक बनाने लगीं।

"क्या तुम लोग मुझे बिना अच्छी पोशाक और गहना पहनाये ही उस किले में ले जाओगी?"

फ़्लूर डीअमूर बोली — "हम लोग कोई ज़्यादा तो नहीं हैं। और अगर तूने इस बारे में हमसे ज़्यादा कुछ बात की तो हम तुझे बहुत पीटेंगे।"

फ़िने फिर बोली — "पर यह सब मेरी गौडमदर ने मुझको दिया है। इसमें तुम्हारा तो कुछ भी नहीं है।"

"अगर तूने एक शब्द भी और बोला न तो हम तुझे मार कर यहीं गाड़ देंगे। किसी को इस बारे में कुछ पता भी नहीं चलेगा।"

बेचारी फ़िने उनको नाराज करने से डरती थी सो वह उनके पीछे पीछे चुपचाप ऐसे चल दी जैसे कि वह उनकी नौकर हो। जैसे जैसे वे उस घर के पास आती गयीं वह घर उनको और भी ज़्यादा अच्छा लगता गया।

फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ बोलीं — "ओह यहॉ हमारा कितना अच्छा समय बीतेगा जब हम राजा की मेज पर बैठ कर खाना खायेंगे।

पर यह बेचारी फ़िने तो रसोईघर में केवल प्लेटें ही साफ करेगी और उनको धोयेगी क्योंकि वह तो केवल रसोईघर की नौकरानी की तरह ही काम करेगी।

और अगर कोई यह पूछेगा भी कि यह कौन है तो हम इसको अपनी बहिन भी नहीं बतायेंगे बल्कि कह देंगे कि यह गॉव की एक लड़की है।

फिने जो बहुत सुन्दर होने के साथ साथ अक्लमन्द भी थी अपनी बहिनों का अपने साथ ऐसा बरताव देख कर बहुत दुखी हुई।

जब वे उस किले के दरवाजे पर पहुँचीं और उन्होंने उसका दरवाजा खटखटाया तो पता नहीं कहॉ से एक बुढ़िया उसका दरवाजा खोलने वहॉ आ गयी।

उस बुढ़िया के केवल एक ही ऑख थी – उसके माथे के बीच में। पर उसकी वह ऑख चार पॉच मामूली ऑखों से भी ज़्यादा बड़ी थी। उसकी नाक चपटी थी। उसका रंग काला था।

और उसका मुँह तो इतना भयानक था कि कोई भी उसको देख कर डर जाये। वह कम से कम पन्द्रह फीट लम्बी थी और उसकी कमर की चौड़ाई भी कम से कम तेरह फीट थी। वे लोग तो उसको देख कर डर ही गयीं।

वह बुढ़िया बोली — "ओ दुखी बच्चियों, तुम यहॉ क्यों आयी हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि यह किला एक ओगरे[58] का है

[58] An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

और तुम सब मिला कर भी उसके नाश्ते के बराबर नहीं हो।

मैं उसकी पत्नी हूँ और अपने पति से अच्छी हूँ। तुम लोग अन्दर आ जाओ मैं तुम सब लोगों को एक साथ नहीं खाऊँगी। तुम लोग यहाँ दो तीन दिन आराम से रह सकती हो।"

जब उन्होंने ओगरे की पत्नी को इस तरह की बात करते सुना तो वे वहाँ से यह सोचते हुए भाग लीं कि वे उससे बच जायेंगी पर उसका एक पग तो उनके पचास पगों से भी बड़ा था।

वह उनके पीछे पीछे भागी और तुरन्त ही उसने उनको उनके बालों या गरदनों से पकड़ कर पकड़ लिया। उसने उनको अपनी बगल में दबा लिया और घर ले जा कर नीचे वाले तहखाने में डाल दिया जिसमें मेंढक ही मेंढक भरे पड़े थे। बाकी की जगह पर खा लिये गये मेंढकों की हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं।

फ़िने को देख कर वह बुढ़िया पहले उसको खाना चाहती थी सो वह नमक और सिरका लाने गयी ताकि वह उसको सलाद की तरह से खा सके।

पर उसी समय उसने ओगरे के आने की आवाज सुनी तो यह सोच कर कि सब राजकुमारियों की खाल सफेद और मुलायम है उसने उन सबको खुद ही खाने की सोची।

सो उसने उन तीनों को एक बड़े से टब में रख दिया जिसमें से वे केवल एक छोटे से छेद में से ही बाहर झाँक सकती थीं।

ओगरे अपनी पत्नी से छह गुने से भी ज़्यादा लम्बा था। जब वह बोलता था तो सारा घर हिल जाता था और जब वह खॉसता था तो बादल गरजने की सी आवाज होती थी।

इसके भी एक ही ऑख थी, बहुत ही बड़ी सी और बहुत ही बदसूरत दिखने वाली। इसके सारे बाल खड़े थे और यह एक लट्ठे के सहारे खड़ा था जिसको यह एक छड़ी की तरह इस्तेमाल कर रहा था।

इसके हाथ में एक बड़ी सी टोकरी थी जिसमें से उसने पन्द्रह बच्चे निकाले जो उसने सड़क पर से चुराये थे। उनको उसने ऐसे निगल लिया जैसे उसने पन्द्रह ताज़ा अंडे निगल लिये हों।

राजकुमारियों ने जब उसको टब के अन्दर से देखा तो वे तो डर के मारे कॉप गयीं। उनकी तो चीखने की भी हिम्मत नहीं हुई कि कहीं ऐसा न हो कि वह ओगरे उनकी चीख सुन ले।

पर उन्होंने बहुत ही धीमी आवाज में एक दूसरे से कहा कि यह ओगरे तो उनको भी इसी तरह से खा जायेगा। उससे कैसे बचा जाये।

इतने में ओगरे ने कहा — "मुझे तो ताजा मॉस की खुशबू आ रही है लाओ मुझे ताजा मॉस दो। कहॉ है वह?"

ओगरे की पत्नी बोली — "क्यों नहीं। तुमको तो हमेशा ही ताजा मॉस की खुशबू आती है। तुमको उन चार भेड़ों की खुशबू आयी होगी जो अभी अभी यहॉ से जा रही थीं।"

ओगरे बोला — "मैं गलती नहीं कर सकता मुझे ताजा मॉस की खुशबू आ रही है। अगर तुम मुझे नहीं बतातीं कि वह कहॉ है तो मैं खुद ही उसको सब जगह ढूँढ लेता हूँ।"

ओगरे की पत्नी बोली — "तुम्हारी इच्छा है तो ढूँढ लो पर तुम्हें कहीं कुछ मिलेगा नहीं।"

ओगरे बोला — "अगर मुझे कुछ मिल गया और तुमने कहीं कुछ छिपा कर रखा हुआ तो मैं तुम्हारा सिर काट कर अपने लिये खेलने के लिये उसकी गेंद बना लूँगा।"

ओगरे की पत्नी बोली — "ओ मेरे छोटे ओगरे, तुम इतने नाराज न हो। मैं तुम्हें सब सच सच बताती हूँ। आज तीन लड़कियॉ हमारे घर आयीं जिनको मैंने रख लिया है। पर उनको खाना ठीक नहीं है क्योंकि वे घर का सब काम करना जानती हैं।

मैं तो अब बूढ़ी हो गयी हूँ मुझे अब आराम की जरूरत है। हमारा इतना सुन्दर मकान है और इसकी हालत तो देखो कि कितनी खराब है। हमारी रोटी ठीक से नहीं पकती। मैं जो सूप बनाती हूँ वह तुमको पसन्द नहीं आता। मैं खुद तुमको अच्छी नहीं लगती। मैं तो काम कर कर के मरी जा रही हूँ।

तो अब वे तीनों मेरी नौकरानी की तरह से रहेंगी। इसलिये मैं तुमसे उनकी ज़िन्दगी की भीख मॉगती हूँ कि तुम उनको अभी मत खाओ। अगर तुम उनको फिर कभी खाना चाहो तो तुम उनके साथ जैसा चाहो वैसा कर सकते हो।"

ओगरे को उनको अभी न खाने का वायदा करना बहुत मुश्किल लगा सो वह बोला — "ठीक है मैं अपने तरीके से काम करूँगा। मैं इनमें से दो को अभी खा लेता हूँ।"

उसकी पत्नी बीच में ही बोली — "नहीं तुम उनमें से किसी को भी नहीं खाओगे।"

आखिरकार काफी झगड़े के बाद ओगरे इस बात पर राजी हो गया कि वह अभी किसी को भी नहीं खायेगा। उधर उसकी पत्नी ने सोचा कि जब वह शिकार के लिये चला जायेगा तब वह उनको खा लेगी और ओगरे से कह देगी कि वे भाग गयीं।

ओगरे तहखाने में से बाहर निकल आया और उसने उन लड़कियों को अपने सामने लाने का हुक्म दिया। बेचारी लड़कियॉ डर के मारे मरी सी हो रही थीं पर ओगरे की पत्नी ने उनको तसल्ली दी और उनको ओगरे के सामने ले आयी।

जब ओगरे ने उनको देखा तो उनसे पूछा कि वे क्या क्या कर सकती हैं। उन्होंने उसको बताया कि वे झाड़ू लगा सकती थीं सिलाई कर सकती थीं और सूत कात सकती थीं और ये तीनों काम वे बहुत अच्छे से कर सकती थीं।

इसके अलावा वे सूप भी इतना स्वादिष्ट बनाती थीं कि उसे खाने वाला सूप तो सूप उस बरतन को भी खा जाना चाहे जिसमें वह परसा गया है। और उनकी बनायी हुई डबल रोटी और केक खाने के लिये तो लोग बहुत दूर दूर से आया करते थे।

ओगरे तो बहुत लालची था सो वह बोला — "इन बढ़िया खाना बनाने वालियों को तुरन्त ही काम पर लगा दो।"

पर फ़िने की तरफ देखते हुए वह बोला — "जब तुम आग जला लो तो तुम यह कैसे पता करोगी कि ओवन[59] ठीक से गरम हो गया है।"

वह बोली — "मालिक, में उसमें मक्खन फेंकती हूँ और फिर उसे चखती हूँ।"

"बहुत अच्छे। तो ओवन में आग जलाओ।"

ओगरे का ओवन तो एक घुड़साल के बराबर बड़ा था क्योंकि ओगरे और उसकी पत्नी दोनों दो फौजों से भी ज़्यादा डबल रोटी खाते थे।

राजकुमारी ने उसमें एक बहुत बड़ी आग जलायी जो एक बहुत बड़ी भट्टी की तरह लग रही थी। ओगरे ने जो वहीं पास में ही खड़ा था जब तक ताजा डबल रोटी बने तब तक उसने सौ मेमने खाये और सौ सूअर के बच्चे खाये।

फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ दोनों ने आटा मला।

ओगरे बोला — "बहुत अच्छे। अब देख कर बताओ कि ओवन गरम हो गया कि नहीं।"

[59] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance, and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special-purpose ovens, used in pottery and metalworking, respectively.

फ़िने बोली — "मालिक आप अभी देखेंगे।" कह कर उसने एक हजार पौंड मक्खन उस ओवन में फेंक दिया।

वह फिर बोली — "अब मैं इसको चख कर देखती हूँ। पर मैं तो बहुत छोटी हूँ।"

ओगरे बोला — "पर मैं तो बहुत बड़ा हूँ।" कहते हुए वह ओवन के अन्दर इतनी दूर तक चला गया कि फिर वह बाहर निकल ही नहीं सका क्योंकि उसके अन्दर तो उसकी तो हड्डियाँ तक जल गयीं।

जब ओगरे की पत्नी ओवन के पास आयी तो ओगरे की बजाय वहाँ राख का एक बड़ा ढेर देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गयी।

फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ ने जब देखा कि ओगरे की पत्नी ओगरे की मौत पर बहुत दुखी है तो उन्होंने उसको तसल्ली देने की कोशिश की पर साथ में उनको यह भी डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि वह बहुत जल्दी शान्त हो जाये। और फिर उसकी भूख जाग जाये और वह उन सबको सलाद में मिला कर खा ले जैसा कि वह पहले कह रही थी।

सो वे उससे बोलीं — "मैम शान्त हो जाइये। हमें यकीन है कि आपको कोई राजा या मारकिस[60] जरूर मिल जायेगा जिसको आपसे शादी कर के बहुत खुशी होगी।"

[60] A Marquis is a nobleman of hereditary rank in various European peerages and in those of some of their former colonies.

यह सुन कर वह अपने दाँत दिखा कर थोड़ा मुस्कुरायी जो तुम्हारी उँगलियों से भी लम्बे थे।

जब उन लड़कियों ने देखा कि अब वह कुछ अच्छे मूड में आ गयी तब फ़िने बोली — "अगर आप हमें वह भयानक भालू की खालें न पहना कर कोई अच्छी सी फैशनेबिल पोशाक पहनने दें तो हम आपके बाल बहुत अच्छे से सँवार देंगे। तब आप एक सितारे जैसी लगेंगी।"

यह सुन कर तो ओगरे की पत्नी बहुत ही खुश हो गयी और बोली — "तब तुम लोग मेरे साथ आओ। मैं देखती हूँ कि तुम लोग मेरे लिये क्या करती हो।

लेकिन ध्यान रखना अगर मुझे कोई दूसरी स्त्री मुझसे ज़्यादा सुन्दर दिखायी दे गयी तो मैं तम्हें छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर फेंक दूँगी।"

"जी मैम।"

कह कर उन्होंने उसके सिर की टोपी उतारी और उसके सिर में कंघी करनी और उसके बालों को घुँघराले बनाना शुरू किया। इस बीच वे उसको अपनी बातों से हँसाती भी जाती थीं।

इस बीच फ़िने ने एक कुल्हाड़ी उठायी और एक ही वार में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया।

वे सब इससे पहले इतना खुश कभी नहीं थीं। आनन्द लेने के लिये वे सब उस मकान की छत पर चढ़ गयीं और उसमें लगी सोने की घंटियॉ बजाने लगीं।

फिर वे उसके सारे कमरों में दौड़ती रहीं जो मोती ओर हीरों के बने थे और इतनी अच्छी तरह से सजे हुए थे कि वे तो बस खुशी के मारे मर ही गयीं। वे हॅस रही थीं वे गा रही थीं वे नाच रही थीं।

वहॉ उनके पास किसी चीज़ की कोई कमी नहीं थी। वहॉ उनको जितना चाहिये गेहूँ था मिठाइयॉ थीं फल थे गुड़ियें थीं।

फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ एक ऐसे बिस्तर पर सोयीं जिस पर मखमल और ब्रोकेड[61] के परदे लटक रहे थे। वे एक दूसरे से कहने लगीं — "यहॉ तो हम अपने पिता से उस समय से भी बहुत ज़्यादा अमीर हैं जितने कि वह राजा होने के समय अपने राज्य में थे। पर अब हमें एक पति चाहिये।

यहॉ तो इस मकान के लिये कोई आयेगा नहीं क्योंकि यह मकान तो मौत के लिये बिछाया एक जाल लगता है। दूसरे किसी को यह पता भी नहीं है कि ओगरे और उसकी पत्नी मर चुके हैं।

इसलिये अब हम लोगों को बहुत बढ़िया कपड़े पहन कर पास वाले शहर में जाना चाहिये जहॉ हमें विश्वास है कि जल्दी ही कोई

[61] Velvet and brocade. Brocade is a kind of very expensive and rich cloth woven in gold and silver threads.

बड़ा सौदागर हम राजकुमारियों से शादी करने को तैयार हो जायेगा।"

अगले दिन वे अपने बढ़िया कपड़े पहन कर तैयार हुईं और फ़िने से बोलीं — "फ़िने हम ज़रा घूमने जा रहे हैं। तू घर की देखभाल और कपड़े धोने के लिये यहीं रहना ताकि जब हम लौट कर आयें तब सब कुछ हमें साफ सुथरा लगे। अगर तूने ऐसा नहीं किया तो हम तुझे बहुत मारेंगे।"

यह सुन कर बेचारी फ़िने बहुत दुखी हुई लेकिन वह क्या करती। वह घर की झाड़ू बुहारी सफाई और सबके कपड़े धोने के लिये घर पर ही रुक गयी। उसको एक मिनट का भी आराम नहीं मिला।

वह तो बस रोती ही रही और कहती रही "अपनी गौडमदर का कहा न मान कर मैं कितनी परेशान हूँ। सब तरीके की बुराइयॉ मेरे ही साथ हो रही हैं। मेरे अच्छे कपड़े मेरी बहिनों ने अपने पहनने के लिये चुरा लिये।

अगर मैं न होती तो ओगरे और उसकी पत्नी अभी भी ज़िन्दा होते। पर उनको मारने का मुझे क्या फायदा हुआ। इस तरह की ज़िन्दगी जीने से तो अच्छा होता कि वे मुझे खा जाते।"

जब तक वह यह सब कह कर चुकी तो ऑसुओं से उसका गला ही रुँध गया।

तभी उसकी बहिनें पुर्तगाल के सन्तरे मुरब्बा चीनी आदि ले कर घर आ गयीं और बोलीं — "ओह हम लोग कितने अच्छे नाच में गये थे। और वहॉ क्या ही भीड़ थी।

वहॉ राजा का बेटा नाच रहा था। वहॉ लोग हमारा कितना ख्याल रख रहे थे। पर अब तू हमारे जूते निकाल दे और हमें नहला दे ताकि हम थोड़ा सा आराम कर सकें। तू तो बस इसी काम के लिये ठीक है।"

फ़िने ने वही किया जैसा उसकी बहिनों ने उससे करने के लिये कहा। और अगर उसके मुँह से कोई शिकायत गलती से भी निकल गयी तो उसकी बहिनों ने उसको इतना मारा कि वह बेचारी बेहोश भी हो गयी।

अगले दिन वे दोनों बहिनें फिर बाहर गयीं और वापस आ कर फिर उन्होंने जो कुछ भी नया देखा वह सब आ कर फ़िने को बताया।

एक दिन शाम को फ़िने के पास करने के लिये कुछ नहीं था तो वह आग के पास रखे कोयलों पर बैठी थी तो बस ऐसे ही वह चिमनी में उसके ऊपर की तरफ देखने लगी।

तभी उसको वहॉ बहुत पुरानी जंग लगी हुई एक चाभी दिखायी दे गयी। उत्सुकतावश उसने वह चाभी वहॉ से निकाल ली और उसको साफ किया। उसको साफ करने में उसको बहुत देर लग गयी।

जब वह साफ हो गयी तो उसने देखा कि वह चाभी तो सोने की बनी हुई थी। तो उसको यह भी लगा कि वह चाभी तो किसी सुन्दर से छोटे से बक्से की होनी चाहिये।

बस यह सोचते ही वह उसको ले कर घर के सारे कमरों में दौड़ गयी। उसने हर जगह उस चाभी को लगा लगा कर देखा। आखिर में वह एक बहुत सुन्दर बक्से में लग गयी।

उसने उस बक्से को खोला तो उसमें उसको बहुत सुन्दर पोशाकें हीरे लेस चादरें और बहुत सारे मॅहगे मॅहगे रिबन मिले।

उसने उस बक्से को तुरन्त ही बन्द कर दिया और उसके बारे में अपनी बहिनों को कुछ भी नहीं बताया बल्कि अगले दिन का इन्तजार किया जब वे फिर से बाहर चली जायेंगी।

सो अगले दिन जैसे ही वे बाहर गयीं वह सूरज और चॉद से भी सुन्दर सज कर वहॉ गयी जहॉ उसकी बहिनें नाच के लिये गयी हुई थीं। हालॉकि उसने कोई मुखौटा नहीं लगाया हुआ था फिर भी वह क्योंकि इतनी बदली हुई थी कि उन्होंने उसको पहचाना ही नहीं।

जैसे ही वह वहॉ पहुॅची तो वहॉ बैठे सभी लोगों में एक फुसफुसाहट सी दौड़ गयी। उस फुसफुसाहट में कुछ तारीफें थी तो कुछ जलन। कुछ लोग उसके साथ नाचने के लिये भी आये। जैसी वह सबसे सुन्दर दिखायी दे रही थी वैसे ही वह नाच भी सबसे अच्छा रही थी।

घर की मालकिन ने उसके पास आ कर उसको झुक कर नमस्ते की और उससे पूछा कि उसका क्या नाम है ताकि वह आगे के लिये उसका नाम याद रख सके। उसने बहुत ही नम्रता से उसको बताया कि उसका नाम सिन्ड्रौन[62] है।

फ़िने को देख कर वहॉ जो कोई प्रेमी नहीं था वह अपनी पत्नी को भूल गया और जो कोई कवि नहीं था वह कविता करने लगा। ऐसे किसी नाम ने पहले कभी किसी जगह इतने थोड़े से समय में हलचल नहीं मचायी थी।

किसी के पास उसकी तारीफ करने के लिये शब्द नहीं थे पर फिर भी सब सैन्ड्रौन की तारीफ ही तारीफ कर रहे थे। उस पर किसी की निगाह ही नहीं ठहर रही थी।

फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ ने पहले तो जहॉ भी वे गयीं अपना रौब जमाया पर अब किसी दूसरे का ऐसा स्वागत देख कर वे गुस्से से भर उठीं।

पर फ़िने के चेहरे पर शिकन नहीं थी। वह बिल्कुल सादा स्वभाव थी। तुम उसकी तरफ देख कर ही कह सकते थे कि वह तो बस जैसे राज करने के लिये ही बनायी गयी है।

और फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ ने जिन्होंने कभी अपनी बहिन को ठीक कपड़ों में और ठीक से सजा हुआ देखा ही नहीं था हमेशा घर के काम करते हुए देखा था तो वह तो उसकी सुन्दरता

[62] Cendron – name Finette told to the lady of the house where she went to dance.

को कैसे पहचानतीं। वे भी दूसरों की तरह से उसकी इज़्ज़त करने के लिये गयीं।

जैसे ही नाच ख़त्म हुआ फ़िने वहॉ से चल दी। घर आ कर उसने जल्दी जल्दी अपने नये कपड़े बदल कर अपने पुराने कपड़े पहन लिये।

जब उसकी बहिनें घर वापस लौटीं तो उन्होंने उससे कहा — "ओह फ़िने आज हमने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान राजकुमारी देखी। वह तुम्हारी तरह से बदसूरत बॅदरिया नहीं थी। वह बरफ से भी ज़्यादा सफेद थी और गुलाब से भी ज़्यादा लाल थी। उसके दॉत मोती जैसे थे और होठ मूॅगे जैसे थे।

उसकी तो पोशाक ही एक हजार पौंड से ज़्यादा भारी रही होगी क्योंकि वह तो सोने की बनी हुई थी और उसमें बहुत सारे हीरे जड़े हुए थे। ओह वह कितनी सुन्दर और कितनी प्यारी थी।"

फ़िने फुसफुसायी "मैं ऐसी ही थी मैं ऐसी ही थी।"

बहिनों ने जब उसको फुसफुसाते सुना तो पूछा — "तुम क्या बुदबुदा रही हो?"

फिने ने और भी नीची आवाज में कहा "मै ऐसी ही थी।"

यह सब काफी देर तक चला। मुश्किल से एक ही दिन गुजरा होगा कि फ़िने ने फिर से नये कपड़े पहने। क्योंकि वह तो परी का बक्सा था उसमें जितने ज़्यादा चीज़ें निकालो उसमें उतनी ही और ज़्यादा चीज़ें निकलती जाती थीं।

वह जो भी कपड़े उस बक्से में से निकालती वे इतने ज़्यादा फैशनेबिल होते कि जब वह उनको पहनती तो लोग उसको मौडल समझ लेते।

एक शाम को जब फ़िने रोज से भी बहुत ज़्यादा नाच ली और वहॉ देर तक भी रही तो अपनी बहिनों से पहले घर पहुँचने के लिये वह बहुत तेज़ तेज़ चली। इससे उसका एक जूता जो लाल मखमल का था और मोतियों से कढ़ा हुआ था कहीं निकल गया।

उसने उसको सड़क पर ढूँढने की बहुत कोशिश की पर रात इतनी अँधेरी थी कि उसकी उस जूते को ढूँढने की सब कोशिशें बेकार गयीं। और उसको केवल एक जूता पहने ही घर जाना पड़ा।

अगले दिन राजा का सबसे बड़ा बेटा राजकुमार शरी[63] उधर से शिकार के लिये गुजर रहा था तो उसने फ़िने का जूता वहॉ पड़ा पाया तो अपने आदमियों को उसे उठाने का हुक्म दिया।

उसने उसको घुमा फिरा कर देखा और उसको चूमा। उसको वह अच्छा लगा तो उसको वह अपने साथ ले गया।

उस दिन के बाद से उसका खाना पीना छूट गया। वह दुबला होता चला गया और बहुत बदल गया। वह पीला पड़ गया उदास रहने लगा और बिल्कुल बेजान सा हो गया।

[63] Cheri – pronounced as “Sharee” in French and “Sherry” in America.

राजा और रानी उसको बहुत प्यार करते थे सो उन्होंने उसको नये शिकार के लिये कई नयी जगहों पर भेजा पर उसके ऊपर तो इन सब बातों का कोई असर ही नहीं पड़ा।

वह तो बस केवल इधर उधर ही देखता रहता और रानी जब कभी उससे बोलती तो वह रानी की बात का भी जवाब नहीं देता। इस पर फ्रांस के बहुत बड़े बड़े डाक्टरों को बुलाया गया यहाँ तक कि पेरिस ओर मौन्टपैलियर[64] से भी।

जब वे वहाँ आये तो राजकुमार को उनको दिखाया गया। उसको तीन दिन और तीन दिन तक लगातार देखने के बाद वे इस नतीजे पर पहुँचे कि उसको प्यार हो गया था। और अगर उसका जल्दी ही ठीक से इलाज नहीं किया गया तो वह मर जायेगा।

उसकी माँ रानी जो उसको बहुत प्यार करती थी बहुत रोयी क्योंकि उसको यही पता नहीं चला कि वह किससे प्यार करता था। आखिर उसने उसकी शादी करने का फैसला किया। इसके लिये उसने बहुत सुन्दर सुन्दर लड़कियाँ बुलवायीं पर वह तो उनकी तरफ देख भी नहीं रहा था।

आखिर एक दिन उसने अपने बेटे से कहा — "बेटे अगर तुम्हें किसी से प्यार है और तुम इस बात को हमसे छिपाते रहोगे तो तुम तो हमें दुख से मार ही डालोगे। बताओ तो तुम किससे प्यार करते

[64] Paris is the capital of France and in Montpellier there is a very big School of Medicine.

हो। अगर वह कोई लड़की सादी सी भेड़ चराने वाली भी हुई तो हम तुमसे उसकी शादी करा देंगे।"

यह सुन कर राजकुमार को थोड़ी सी तसल्ली मिली। उसने सड़क पर पाया हुआ जूता अपने तकिये के नीचे से निकाला और रानी माँ को दिखाया और कहा "माँ यही मेरी बीमारी की वजह है।

मैं एक बार शिकार के लिये जा रहा था तो यह जूता मुझे सड़क पर पड़ा हुआ मिला। मैं केवल उसी लड़की से शादी करूँगा जिसके पैर में भी यह जूता आ जायेगा।"

रानी बोली — "ठीक है बेटा। तुम दुखी मत हो। हम उसको ढूँढने की पूरी पूरी कोशिश करेंगे।" और वह यह बात राजा को बताने के लिये चली गयी। राजा तो यह सुन कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया पर क्या करता।

तुरन्त ही उसने ढोल ओर बिगुल से यह मुनादी पिटवा दी कि सारी लड़कियाँ उसके महल में आयें और उस जूते को पहन कर देखें जो उसके पास है। जिस किसी के भी वह जूता आ जायेगा वह अपने बेटे की शादी उसी लड़की से कर देगा।

जिस किसी लड़की ने यह मुनादी सुनी सबने अपने अपने पैर अच्छी तरह से धोये और साफ किये।

कुछ ने अपने पैरों की खाल भी छीली ताकि उनके पैर और बहुत सुन्दर हो जायें। कुछ ने उपवास भी रखा ताकि उनके पैर कुछ छोटे हो जायें।

भीड़ की भीड़ इकट्ठा हो कर जूते को पहन कर देखने के लिये राजा के महल चली लेकिन वह जूता तो किसी के पैर में आया ही नहीं। उस जूते को पहनने की जितनी ज़्यादा कोशिशें की गयीं वे सब नाकामयाब रहीं और राजकुमार का दुख बढ़ता ही गया।

एक दिन फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइट ने भी अपनी बहुत बढ़िया पोशाकें पहनीं जिनको पहन कर वे बहुत सुन्दर लग रही थीं। उनको इस तरह से सजा धजा देख कर फ़िने ने पूछा "कहॉ जा रही हो?"

वे बोलीं — "हम बड़े शहर जा रहे हैं जहॉ राजा और रानी रहते हैं। वहॉ हम एक जूता पहन कर देखेंगे जो उनके राजकुमार को मिला है। वह जूता जिसके भी आ जायेगा राजकुमार उसी से शादी कर लेगा और फिर वही रानी बन जायेगी।"

फ़िने ने पूछा — "क्या तुहारे साथ मैं भी चल सकती हूॅ?"

वे बोलीं — "तू? सच कहें तो तू तो एक बहुत ही बेवकूफ बतख है। चल जा कर बन्द गोभी में पानी दे। तू किसी काम की नहीं।"

फिने ने तुरन्त ही सोच लिया कि वह अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहनेगी और वहॉ जा कर दूसरों के साथ अपनी भी किस्मत आजमायेगी। क्योंकि उसको कुछ ऐसा लग रहा था कि वहॉ उसका अच्छा मौका है।

पर परेशानी यह थी कि उसको वहॉ का रास्ता मालूम नहीं था। क्योंकि जहॉ वे नाचने गयी थीं वह जगह उस बड़े शहर में नहीं थी।

वह अपने सबसे सुन्दर कपड़ों में सजी – नीली साटन के गाउन में जिसमें हीरों के सितारे बने हुए थे। हीरों का एक सूरज उसके सिर में लगा हुआ था। एक पूरा चॉद उसकी पीठ पर बना हुआ था। और वे सब इतने चमक रहे थे कि उसकी तरफ बिना ऑखें झपकाये नहीं देखा जा सकता था।

जब उसने बाहर जाने के लिये दरवाजा खोला तो वह तो यह देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गयी कि उसका वही स्पेन का घोड़ा वहॉ खड़ा है जो उसको उसकी गौडमदर के पास ले गया था।

उसने उसको सहलाया और प्यार से बोली — "आओ ओ मेरे छोटे घोड़े आओ। मैं तो इसके लिये हमेशा ही अपनी गौडमदर परी मरलूश की कृतज्ञ रहूँगी।"

घोड़ा नीचे झुक गया और फ़िने उसके ऊपर एक अप्सरा जैसी बैठ गयी। घोड़े पर सारे में घंटियॉ और रिबन लगे हुए थे और उसका साज तो बस बहुत ही बेशकीमती था। और जहॉ तक फ़िने का सवाल है वह तो उस समय सुन्दर हेलेन से भी ज़्यादा सुन्दर लग रही थी।

घोड़ा अपनी घंटियों के संगीत की धुन पर चला जा रहा था – क्लिंग क्लिंग क्लिंग क्लिंग।

फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइट ने अपने पीछे यह आवाज सुनी तो उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि वहॉ तो वह आ रही थी।

पर उससे भी ज़्यादा आश्चर्य उनको तब हुआ जब उन्होंने उसको पहचान लिया कि वह तो फ़िने सिन्ड्रौन थी। पर आश्चर्य की बात उसी समय वे खुद गन्दी हो गयीं और उनके कपड़े कीचड़ में लथपथ हो गये।

फ़्लूर डीअमूर ने बैले डीनुइट से कहा — "मैं तुझे यह बता दूँ कि यह तो फ़िने सिन्ड्रौन है।" दूसरी ने भी यही कहा।

उसी समय फ़िने उनके पास से गुजरी तो उसके घोड़े के खुरों के कीचड़ में पड़ने से उनके चेहरों पर भी कीचड़ आ पड़ी।

फ़िने ने हॅसते हुए कहा — "योर हाईनैस, सिन्डरैला तुम्हारी भी उतनी ही बेइज़्ज़ती करती है जितनी कि उसको तुम्हारी करनी चाहिये।" कह कर वह तीर की तरह वहॉ से चली गयी।

फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइट दोनों एक दूसरे की तरफ देखती रह गयीं। उन्होंने कहा "क्या हम सपना देख रहे हैं? फ़िने को यह इतनी बढ़िया पोशाक और यह इतना अच्छा घोड़ा किसने दिया होगा। कितनी सुन्दर लग रही थी वह।

लगता है कि आज उसकी किस्मत चमक रही है। वह वह जूता पहनेगी और उसके वह जूता आ जायेगा और हमारी यात्रा बेकार जायेगी।

जब वे अपनी इस नाउम्मीदी पर दुखी हो रही थीं फ़िने महल में घुस रही थी। जैसे ही लोगों ने उसे वहॉ देखा तो हर एक को लगा कि वह तो रानी थी।

सिपाही अपने अपने हथियार तैयार कर के खड़े हो गये। ढोल बजाने वालों ने ढोल बजाने शुरू कर दिये। बिगुल बजाने वालों ने बिगुल बजाने शुरू कर दिये। दरवाजे खोल दिये गये। जिन्होंने उसको नाच में देखा था वे "सुन्दरी सिन्ड्रौन को जगह दो सुन्दरी सिन्ड्रौन को जगह दो" कहते हुए उसके सामने दौड़ पड़े।

ऐसी शान के साथ वह राजकुमार के कमरे में घुसी। उस पर निगाह पड़ते ही राजकुमार पर तो जैसे जादू सा पड़ गया। वह सोचने लगा शायद उसके छोटे से पैर में वह जूता आ जाये।

वहॉ घुसते ही उसने वह जूता पहना जो राजकुमार के पास था और अपने साथ लाया जूता उनको दिखाया जो वह किसी मतलब से ले कर आयी थी।

"राजकुमारी शरी अमर रहे।" वहॉ खड़े सब चिल्ला उठे।

राजकुमार अपने बिस्तर से उठा और उसके हाथ चूमने के लिये आगे बढ़ा। जब उसने फ़िने की तारीफ करनी शुरू की तो फ़िने को लगा कि राजकुमार बहुत सुन्दर था और मजाक करने वाला भी।

यह खबर राजा और रानी के पास भी पहुॅची तो वे भी वहॉ जल्दी से आ गये। उन्होंने फ़िने को गले लगा लिया और उसको

अपनी बेटी कहा और अपनी छोटी रानी कहा। राजा और रानी ने उसको सुन्दर भेंटें भी दीं।

उसके स्वागत में तोपें दागी गयीं। वायलिन और पाइप और बहुत तरीके के वाद्य बजाये गये। इस समय वहाँ पर संगीत और नाच और खुशी की आवाजों के अलावा और कुछ सुनायी नहीं पड़ रहा था।

राजा और रानी ने सिन्ड्रौन से प्रार्थना की कि वह उनको उनके बेटे से शादी करने की रजामन्दी दे दे।

सिन्ड्रौन बोली — "नहीं। पहले मैं अपनी कहानी सुना लूँ उसके बाद।" कह कर उसने उन सबको अपनी कहानी सुनायी।

जब उनको यह पता चला कि वह एक राजकुमारी थी तो वे बहुत खुश हुए और खुशी के मारे अपने आपे में ही नहीं रहे। पर जब उसने अपने माता पिता राजा और रानी का नाम बताया तो उनको पता चला कि उनको हराने वाले तो वे खुद ही थे।

जब उन्होंने उसको यह बताया कि उन्होंने ही उसके पिता को हराया था तो उसने कहा कि वह उस राजकुमार से तब तक शादी नहीं करेगी जब तक उसके अपने माता पिता को उनका राज्य वापस नहीं मिल जाता।

यह सुन कर राजकुमार के पिता ने उससे वायदा किया कि वह उनका राज्य वापस कर देगा। क्योंकि उनके पास तो अब सौ से भी

ज़्यादा राज्य थे। उसमें अगर उनके पास एक राज्य कम भी हुआ तो उनको क्या फर्क पड़ता था।

इस बीच फ़्लूर डीअमूर और बैले डीनुइ भी वहॉ आ पहुँची थीं। वहॉ आ कर उन्होंने पहली खबर जो सुनी वह यह थी कि सिन्ड्रौन ने जूता पहन लिया था।

अब उनको यही नहीं पता था कि वे क्या कहें और क्या करें। बस वे तो यह चाहती थीं कि वे सिन्ड्रौन से बिना मिले ही वापस लैट जायें पर जब सिन्ड्रौन को यह पता चला कि वे वहॉ हैं तो उसने हुकुम दिया कि उनको उसके सामने लाया जाये।

बजाय उन पर चिल्लाने के और उनको सजा देने के जैसा कि उनके साथ किया जाना चाहिये था उसने आगे बढ़ कर उनको गले लगा लिया।

फिर उसने उनको रानी मॉ से मिलाया — "मैम ये मेरी बहिनें हैं। ये बहुत अच्छे स्वभाव की हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप इनको जरूर प्यार करेंगी।"

फ़िने के इस व्यवहार पर तो वे दोनों बहुत ही आश्चर्यचकित रह गयीं और कुछ बोल ही नहीं सकीं।

फिने ने उनसे कहा कि अब वे अपने राज्य लौट जायें जिसको राजा ने फिर से उनके पिता को वापस दे देने का वायदा किया था। यह सुन कर वे फ़िने के पैरों पर गिर पड़ीं और खुशी से रो पड़ीं।

इससे पहले शादी की इतनी अच्छी दावत कहीं नहीं देखी गयी थी। फ़िने ने अपनी गौडमदर को एक चिट्ठी लिखी और उस घोड़े को उसे दे कर उसे बहुत सारी भेंटें दे कर वापस भेज दिया।

उस चिट्ठी में उसने लिखा कि वह उसके माता पिता को उसकी अच्छी किस्मत के बारे में बता दे और उनसे कह दे कि वे जब चाहें तब अपने राज्य वापस जा सकते थे। परी मरलूश ने वैसा ही किया।

फ़िने के माता पिता अपने राज्य चले गये। उसकी बहिनें भी उसी की तरह रानियॉ बन गयीं।

9 छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की[65]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश में कही सुनी जाती है। यह कहानी भी बहुत पुरानी है। यह कहानी **1894** में प्रकाशित की गयी थी।

एक बार की बात है कि जियोर्जिया देश[66] में एक बेचारा बड़ा बदकिस्मत किसान रहता था। उसकी एक पत्नी और एक छोटी सी बेटी थी। वह किसान इतना गरीब था कि लोग उसकी बेटी को फटे कपड़ों वाली लड़की[67] कह कर बुलाते थे।

कुछ समय बीत गया और उसकी पत्नी चल बसी। एक तो वह पहले से ही अपनी ज़िन्दगी से बहुत दुखी था और अब अपनी पत्नी के जाने के बाद तो उस पर मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा।

---

[65] The Little Rag Girl – a fairy tale from Georgia, Europe or Asia.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Charles Perrault took it from, Georgian Folk Tales by Marjory Wardrop. 1894. Translated and edited by DL Ashliman.

[66] See the map of Giorgia above for its locaton.

[67] The Little Rag Girl

पहले तो वह बहुत दुखी होता रहा फिर सोचा "मुझे अब दूसरी शादी कर लेनी चाहिये। दूसरी पत्नी आयेगी तो वह कम से कम घर का ख्याल भी रखेगी और मेरी बच्ची की भी देख भाल करेगी।"

पर उसकी यह पत्नी जब शादी हो कर इस आदमी के पास आयी तो अपनी भी एक बेटी ले कर आयी और जब वह अपने नये पति के घर आयी और उसकी बच्ची को देखा तो वह दिल ही दिल में बहुत गुस्सा हुई।

वह उस छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की को बहुत बुरी तरह से रखती। वह अपनी बेटी को तो प्यार से थपथपाती रहती और छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की को डॉटती रहती। वह हमेशा इसी ताक में रहती कि किस तरह उसको घर से बाहर निकाला जाये।

रोज उसको वह कच्ची या जली हुई डबल रोटी देती और यह कहते हुए गाय को नहलाने के लिये बाहर भेजती — "ले यह डबल रोटी ले। इसमें से तू खुद भी खाना और रास्ते में आने जाने वाले को भी खिलाना और सारी रोटी घर वापस ले कर आना।"

लड़की बेचारी बहुत परेशान होती। वह नहीं जानती थी कि वह ऐसा कैसे करे। ऐसा सोचते सोचते वह कुछ नहीं खा पाती और भूखी रहने की वजह से वह दिनों दिन दुबली होती जा रही थी।

एक बार वह मैदान में बहुत दुखी बैठी थी कि उसकी ऑखों में ऑसू आ गये और वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। एक गाय ने

उसका रोना सुना तो वह उसके पास आयी और बोली — "तुम क्यों रो रही हो बेटी? तुमको क्या परेशानी है?"

लड़की ने उसको अपनी कहानी सुना दी तो गाय बोली — "मेरे एक सींग में शहद है और दूसरे सींग में मक्खन है। अगर तुमको वह चाहिये तो तुम उनको ले सकती हो। तुम दुखी क्यों होती हो?"

लड़की ने अपने ऑसू पोंछे और गाय के सीगों में से शहद और मक्खन निकाल कर खा लिया। कुछ दिनों में ही उसका शरीर भर गया और उसके चेहरे की रंगत वापस आ गयी। इसके अलावा वह अब खुश भी रहने लगी थी।

उसकी सौतेली मॉ ने जब यह देखा कि वह बिना खाने के तन्दुरुस्त है और खुश है तो वह बहुत गुस्सा हुई और उसको गुस्से में यही समझ में नहीं आया कि वह क्या करे।

फिर कुछ सोच कर उसने उसको रोज एक टोकरी भर कर ऊन देनी शुरू कर दी जिसको उसको दिन भर में कातना होता था और शाम को उसको कात कर घर वापस लाना होता था।

उसकी सौतेली मॉ का खयाल था कि इस तरह से काम करने से वह थक जायेगी और दुबली और बदसूरत होती चली जायेगी।

एक बार जब वह छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की गाय चरा रही थी तो उसकी वह गाय एक छत के ऊपर चढ़ गयी।[68] वह लड़की

[68] In some parts of this country the peasants build their house so low to the ground that it is possible for a cow to climb on its roof.

उसके पीछे पीछे भागी ताकि उसको नीचे जमीन पर वापस ला सके।

ऐसा करते समय उसकी ऊन कातने वाली तकली[69] उस घर की छत पर गिर पड़ी। उसने घर के अन्दर झॉका तो उसमें उसको एक बुढ़िया बैठी दिखायी दी।

उसने उस बुढ़िया से कहा — "मॉ जी, आपकी छत पर मेरी तकली गिर पड़ी है। क्या आप मेरी तकली मुझे दे देंगी?"[70]

वह बुढ़िया बोली — "बेटी, मैं तुमको तुम्हारी तकली नहीं दे सकती तुम खुद ही आ कर ले जाओ।"

यह बुढ़िया एक देवी[71] थी। वह लड़की अन्दर चली गयी और अपनी तकली उठाने लगी कि वह बुढ़िया बोली — "बेटी इधर आओ। ज़रा मेरा सिर तो देखना। लगता है कि मेरे सिर को तो किसी ने खा लिया है।"

---

[69] Translated for the word "Spindle. See its picture above.

[70] [My Note – Here this is the scene that the cow had climbed on the roof, and the girl followed it, it means that the cow was on the roof and the girl was on the ground. Then how her spindle can fall on the roof. It means that the girl was on the roof also, and if she was on the roof, she could pick it up herself; but if she was on the ground she could not have dropped it on the roof in the first place. It might be possible that she must have thrown the spindle to hit the cow to bring it down and the spindle remained on the roof as the cow was also on the roof.]

[71] This old woman was a Devi. Demi dii, ndii in Mingrelian or Devi or Mdevi in Georgian, connected with Persian Div, a representative of the principle of evil, but with certain limitations, neither incorporeal nor immortal, but half demon half man, ie an unclean spirit in the form of a giant. He is subject to death, even a man can kill, cheat terrify him; he can marry a woman.

लड़की उधर गयी और उस बुढ़िया के सिर को देखा तो वह तो बहुत डर गयी। उस बुढ़िया के सिर में तो दुनियॉ भर के कीड़े रेंग रहे थे।

उस छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की ने उसके सिर में से कुछ कीड़े तो निकाले पर फिर बोली — "मॉ जी आपका सिर तो साफ है मुझे उसमें क्या देखना है।"

उस लड़की इस व्यवहार से वह बुढ़िया बहुत खुश हुई और उससे कहा — "जब तुम यहॉ से जाओ तो तुम फलॉ फलॉ सड़क से हो कर जाना और उस सड़क पर एक जगह तुमको तीन फव्वारे[72] मिलेंगे – एक सफेद, एक काला और एक पीला।

तुम सफेद और काले फव्वारों को तो छोड़ देना पर पीले फव्वारे में अपना सिर डुबो देना और अपने सिर को हाथ से मल मल कर धोना।"

जब वह छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की वहॉ से गयी तो उसने वही सड़क ली जो उसको उस बुढ़िया ने बतायी थी। उस बुढ़िया के कहे अनुसार उसको वहॉ तीन फव्वारे भी मिले।

वह सफेद और काले फव्वारों को तो छोड़ गयी और तीसरे वाले पीले फव्वारे में उसने अपना सिर डुबो दिया और उसको उस फव्वारे के पानी से खूब मल मल कर धोया।

[72] Translated for the word "Spring" – spring is the water flow which comes out automatically breaking the ground. It is natural.

सिर धोने के बाद जब उसने ऊपर देखा तो देखा कि उसके तो सारे बाल सुनहरी हो गये हैं। उसके हाथ भी सुनहरे रंग में चमक रहे हैं।

शाम को जब वह घर पहुँची तो उसकी सौतेली माँ उसको देख कर फिर बहुत गुस्सा हुई। उसने छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की से इस बारे में पूछा कि उसके साथ यह सब कैसे हुआ तो उस लड़की ने उसको सब कुछ सच सच बता दिया।

यह जान कर उसने अपनी बेटी को इस उम्मीद में गाय को चराने के लिये भेजा ताकि उसकी बेटी की किस्मत भी शायद उसी तरीके से खुल जाये।

सो अगले दिन वह छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की तो घर में रही और उसकी सौतेली बहिन गाय चराने गयी। एक बार फिर वह गाय उसी छत के ऊपर जा कर चढ़ गयी। उस लड़की ने भी उस गाय का पीछा किया और अपनी तकली छत पर गिरा दी।

उसने भी उस मकान के अन्दर देखा तो एक बुढ़िया को बैठे पाया। वह बोली — "ओ बुढ़िया मेरी तकली तुम्हारी छत पर गिर गयी है ज़रा उसे मुझे दे दो।"

"बेटी मैं तुमको तुम्हारी तकली नहीं दे सकती तुम खुद ही आ कर ले जाओ।"

जब वह लड़की अपनी तकली लेने के लिये उस बुढ़िया के पास आयी और अपनी तकली उठाने लगी तो वह बुढ़िया बोली —

"बेटी, इधर आओ। ज़रा मेरा सिर तो देखना लगता है इसमें कुछ है क्या।"

उस लड़की ने उसका सिर देखा तो चिल्लायी — "उफ़, तुम्हारा सिर तो कितना भयानक है। तुम्हारे सिर को तो देख कर ही नफरत होती है।"

बुढ़िया बोली — "धन्यवाद मेरी बच्ची, जब तुम यहाँ से जाओ तो फलाँ फलाँ सड़क ले कर जाना। वहाँ तुमको रास्ते में तीन फव्वारे मिलेंगे - एक सफेद, एक काला और एक पीला।

तुम सफेद और पीले फव्वारों को तो छोड़ देना और काले फव्वारे में अपना सिर डुबो देना और अपने सिर को हाथ से खूब मल मल कर धोना।"

जब वह लड़की वहाँ से गयी तो उसने वही सड़क ली जो उसको उस बुढ़िया ने बतायी थी। उस बुढ़िया के कहे अनुसार उसको वहाँ तीन फव्वारे भी मिले।

वह सफेद और पीले फव्वारों को तो छोड़ गयी और तीसरे काले फव्वारे में जा कर अपना सिर डुबो दिया और उसको उस फव्वारे के पानी से खूब मल मल कर धोया।

सिर धोने के बाद जब उसने ऊपर देखा तो देखा कि वह तो बिल्कुल काली हो गयी है किसी अफ्रीका में रहने वाले की तरह। और उसका केवल रंग ही काला नहीं हुआ था बल्कि उसके सिर पर एक सींग भी उग आया था।

उसने उस सींग को कई बार काटने की कोशिश की पर वह उस को जितनी बार काटती थी वह उसके काटने के बाद और ज़्यादा लम्बा हो जाता था।

आखिर वह घर चली गयी और जा कर अपनी मॉ से शिकायत की। उसकी मॉ तो यह देख कर पागल सी हो गयी पर वह उसकी कुछ सहायता नहीं कर सकी। उसकी मॉ को लगा कि यह सब उस गाय की ही करामात है इसलिये उस गाय को मरवा देना चाहिये।

इस गाय को अपना भविष्य पता था। तो जब इसको पता चला कि अब उसको मारा जायेगा तो वह छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की के पास गयी और बोली —

"देखो तुम्हारी सौतेली मॉ मुझे मारने की कोशिश कर रही है। जब मैं मर जाऊॅ तो तुम मेरी हड्डियॉ इकट्ठी कर लेना और उनको जमीन में दबा देना।

फिर जब भी तुमको कोई परेशानी हो तो तुम मेरी कब्र पर आ जाना और ज़ोर से चिल्लाना — "मेरा घोड़ा और मेरी पोशाक लाओ।"

उस छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की ने ऐसा ही किया। जब उस गाय को मार दिया गया तो उसने उसकी हड्डियॉ इकट्ठी कीं और जमीन में गाड़ दीं।

इसके बाद फिर कुछ दिन निकल गये। एक छुट्टी के दिन उसकी सौतेली मॉ अपनी बेटी को ले कर चर्च गयी।

उसने छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की के सामने एक बड़ा सा डिब्बा रख दिया और घर के ऑगन में बाजरा फैला दिया और उससे कहा —

"जब तक हम चर्च से वापस लौट कर घर आते हैं तब तक तुम इस डिब्बे को ऑसुओं से भर देना और यह सारा बाजरा इकट्ठा कर के रख देना ताकि जमीन पर एक दाना भी न रहे।" उसके बाद वे दोनों चर्च चली गयीं।

यह सुन कर छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की तो वहॉ बैठी बैठी रोने लगी। तभी उसकी पड़ोसन उसके पास आयी और उससे पूछा — "बेटी, तुम क्यों रो रही हो? क्या बात है?"

उस लड़की ने उसको अपनी कहानी बतायी तो वह बहुत सारे मुर्गे मुर्गियॉ वहॉ ले आयी जिन्होंने बाजरे के वे सारे दाने वहॉ से उठा दिये। फिर उसने उस डिब्बे में एक टुकड़ा नमक का डाल दिया और उसको पानी से भर दिया।

पड़ोसन बोली — "लो देखो तुम्हारे दोनों काम हो गये। तुम्हारा बाजरा भी साफ हो गया और यह डिब्बा भी तुम्हारे ऑसुओं से भर गया। अब तुम जाओ और खुशियॉ मनाओ।"

तभी उस लड़की के दिमाग में गाय की बात आयी। वह दौड़ी दौड़ी गाय की कब्र के पास गयी और बोली — "मेरा घोड़ा और मेरी शाही पोशाक लाओ।"

तुरन्त ही वहॉ एक बहुत सुन्दर घोड़ा और एक बहुत सुन्दर कपड़ों का जोड़ा प्रगट हो गया। छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की ने वे कपड़े पहने, अपने घोड़े पर चढ़ी और चर्च चली गयी।

वहॉ पहुॅची तो सब उसको घूरने लगे। सब उसकी शान को देख कर बहुत आश्चर्य करने लगे।

उसकी सौतेली बहिन ने भी उसको देखा तो अपनी मॉ से कहा — "मॉ, देखो न, यह लड़की तो हमारी छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की जैसी लग रही है।"

उसकी मॉ मुस्कुरा कर बोली — "अरी उस धूप जली को इतने अच्छे कपड़े कौन देगा?"

चर्च की पूजा खत्म पर छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की वहॉ से सारे लोगों के जाने से पहले ही चल दी। घर पहुॅच कर उसने अपनी सौतेली मॉ के आने से पहले ही अपने अच्छे कपड़े उतार कर अपने फटे कपड़े पहन लिये।

पर जब वह चर्च से घर आ रही थी तो एक नाला पार करते समय उसके पैर का एक जूता निकल गया और वह वहीं पड़ा रह गया।

कुछ दिनों बाद एक बार राजा के सिपाहियों के घोड़े उसी नाले पर पानी पी रहे थे तो वहॉ उनके घोड़ों ने कुछ चमकीली चीज़ पानी में पड़ी देखी तो वे डर गये। वे वहॉ फिर पानी नहीं पी सके और वहॉ से भागने लगे।

राजा ने अपने सिपाहियों से कहा कि वे वहॉ जा कर देखें कि वहॉ ऐसा क्या था जो उसके घोड़े इतना डर गये थे। देखने पर उनको एक सुनहरी जूता मिला। वे उसको ले आये और ला कर उसे राजा को दे दिया।

जब राजा ने वह जूता देखा तो उसने अपने वज़ीर[73] से कहा कि वह उस जूते वाली को ढूँढे। उसको वह जूते वाली चाहिये। वह उसी जूते वाली से शादी करेगा किसी और से नहीं।

उसके वज़ीर उस लड़की को ढूँढने के लिये निकले पर वह जूता तो किसी के पैर में आ ही नहीं रहा था।

छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की की सौतेली मॉ ने भी यह सुना तो उसने अपनी बेटी को सजाया और घर में एक सिंहासन पर बिठा दिया।

फिर वह राजा के पास गयी और उससे कहा कि उसकी एक बेटी है वह उसके पैर में वह जूता पहना कर देख सकता है। शायद उसके पैर में वह जूता आ जाये।

जब राजा उसके घर आया तो उसने छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की को एक कोने में बिठा दिया और उसको एक बड़ी टोकरी से ढक दिया।

[73] Translated for the word “Prime Minister”

जब राजा उसके घर में आया तो वह उस लड़की को जूता पहनाने के लिये उस टोकरी पर बैठ गया जिसके नीचे वह छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की बैठी थी।

छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की ने एक सुई ली और वह राजा को नीचे से चुभा दी। राजा तो दर्द से उछल पड़ा और उसने उस सौतेली मॉ से पूछा कि उस टोकरी के नीचे क्या है।

सौतेली मॉ बोली — "ओह कुछ नहीं, इसके नीचे तो केवल एक टर्की है।"

यह सुन कर राजा उस टोकरी पर फिर से बैठ गया। छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की ने फिर से उसको सुई चुभो दी तो राजा फिर से उछल कर खड़ा हो गया और बोला इस टोकरी को उठाओ मैं देखना चाहता हूँ कि इसके नीचे क्या है।

सौतेली मॉ ने राजा से प्रार्थना की कि वह उस पर झूठ का इलजाम न लगाये वहॉ पर केवल एक टर्की ही है और कुछ नहीं और वह अपने आप चली जायेगी। पर राजा उसकी बात सुनने को लिये बिल्कुल तैयार नहीं था। फिर उसने खुद ही वह टोकरी उठा दी।

लो उसमें से तो टर्की की बजाय छोटी फटे कपड़ों वाली लड़की निकल आयी और बोली — "यह जूता तो मेरा है और मेरे पैर में ठीक आ जायेगा।"

राजा ने उसको वह जूता पहना कर देखा तो वाकई वह जूता उसी का था क्योंकि वह उसके पैर में बिल्कुल ठीक आ गया था। राजा उसको अपने महल ले गया और उसको वहाँ ले जा कर उसने उससे शादी कर ली।

10 छोटी लम्बी नाक वाली[74]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के यूनान देश की लोक कथाओं से ली है।

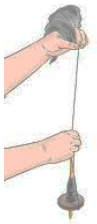

एक बार एक स्त्री थी जिसके तीन लड़कियॉ थीं। वे सब रुई काता करती थीं। वे आपस में कहती थीं कि जिस किसी की भी तकली[75] रुई कातते समय गिर जायेगी उसको मार दिया जायेगा और खा लिया जायेगा।

एक बार रुई कातते समय उनकी मॉ की तकली गिर गयी पर उस समय उसको छोड़ दिया गया। वे सब फिर रुई कातने बैठीं तो फिर उनकी मॉ की तकली फिर गिर गयी। उन्होंने मॉ को फिर छोड़ दिया। पर मॉ की तकली एक बार फिर गिर गयी तो उन्होंने कहा कि अबकी बार तो हमको इसको खा ही लेना चाहिये।

पर सबसे छोटी वाली बेटी बोली — "नहीं नहीं, तुम लोग उसको मत खाओ। अगर तुमको मॉस ही खाना है तो उसके मॉस की बजाय तुम मेरा मॉस खालो।"

---

[74] The Little Saddleslut – a fairy tale from Greece, Europe.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Charles Perrault took it from, Folk-Lore of Modern Greece: The Tales of the People. By Edmund Martin Geldart. London: W. Swan Sonnenschein and Company, 1884, pp. 27-30. Translated and edited by DL Ashliman.
[Saddle-slut means – Someone with a profusely big nose and cannot keep her legs shut and will suck your wallet dry. She is like a prostitute. This story is not of such a girl, I do not know why this story has been entitled as "The Little Saddle-slut"]

[75] Translated for the word "Spindle". See its picture above.

पर वे लड़कियॉ उस लड़की को नहीं खाना चाह रही थीं सो उन्होंने अपनी मॉ को मार दिया और उसे खाने के लिये पकाया। जब वे उसको खाने बैठीं तो उन्होंने अपनी सबसे छोटी बहिन को भी उसको खाने के लिये बुलाया — "आओ, तुम भी खा लो।"

पर उसने अपनी मॉ को खाने से मना कर दिया और एक घोड़े के साज[76] पर जा कर बैठ गयी जिसको मुर्गियों ने गन्दा कर दिया था। वह वहॉ बैठ कर रोने लगी और अपनी बहिनों को डॉटने लगी कि यह उनका कोई तरीका नहीं था कि वह अपनी मॉ को खायें।

उसकी बहिनों ने उसको कई बार खाने के लिये बुलाया पर वह अपनी मॉ को खाने नहीं गयी। वे लड़कियॉ भी खा पी कर वहॉ से चली गयीं।

तब सबसे छोटी लड़की ने जिसको वहॉ सब "लम्बी नाक वाली"[77] कह कर बुलाते थे अपनी मॉ की हड्डियॉ इकट्ठी कर के एक पत्थर के नीचे दबा दीं।

फिर वह चालीस दिन तक रोज उन हड्डियों के पास अगरबत्ती जलाती रही। चालीस दिन के बाद वह उन हड्डियों को वहॉ से हटा कर किसी दूसरी जगह रखने के लिये गयी।

[76] Translated for the word "Saddle"

[77] Translated for the word "Saddle-slut"

पर जब उसने वह पत्थर हटाया तो वह यह देख कर तो आश्चर्यचकित रह गयी कि उन हड्डियों में से रोशनी निकल रही थी और वहॉ उसके लिये बहुत बढ़िया कपड़े भी मौजूद थे।

वे कपड़े तो ऐसे थे जैसे उनमें आसमान में तारे थे, वसन्त में फूल थे, समुद्र में लहरें थीं, और वहॉ बहुत सारी तरह के बहुत सारे सिक्के भी थे। उसने उन सबको वहीं छोड़ दिया और वहॉ से चली आयी।

उसके बाद उसकी बहिनें आयीं तो उन्होंने उसको तभी भी वहीं घोड़े के साज पर बैठे देखा तो उसका मजाक बनाया।

रविवार को उसकी बहिनें चर्च गयीं तो वह घोड़े के साज पर से उठी, नहायी धोयी और वे कपड़े पहने जो आसमान में तारे जैसे चमक रहे थे। उसने कुछ सोने के सिक्के उठा कर अपने बटुए में रखे और चर्च चली गयी।

जब वह चर्च गयी तो वहॉ बैठे सब लोग उसी को देखने लगे पर उसके कपड़े इतने चमकीले थे कि वे उसकी तरफ ठीक से देख ही नहीं पा रहे थे।

जब वह चर्च से वापस चली तो लोग भी उसके पीछे पीछे यह देखने के लिये चले कि वह किधर जा रही थी। यह देख कर उसने अपने थैले में से कुछ सिक्के निकाले और सड़क पर फेंक दिये और वह उनको फेंकती ही गयी ताकि वे लोग उसके पास तक न आ सकें।

सिक्कों को देख कर वह भीड़ भी उसको छोड़ कर उन सिक्कों को उठाने में लग गयी और इस तरह वह सीधी अपने घर चली गयी।

वहाँ जा कर उसने अपने कपड़े बदल कर अपने पुराने कपड़े पहन लिये और फिर वहीं अपने घोड़े वाले गन्दे साज पर जा कर बैठ गयी।

उसकी बहिनें जब चर्च से वापस आयीं तो उन्होंने पुकारा — "ओ नीच तुम कहाँ हो? तुम यहाँ आओ तो हम तुम्हें बतायें कि आज चर्च में एक सूरज से भी ज़्यादा चमकदार लड़की आयी थी।

वह इतनी ज़ोर के चमकते कपड़े पहने थी कि तुम उसकी तरफ देख भी नहीं सकती थीं। वह अपने रास्ते पर पैसे फेंकती जा रही थी। देखो न हमने वहाँ से क्या उठाया। तुम क्यों नहीं आयीं हमारे साथ? यह तुम्हारी तुम्हारी बदकिस्मती है कि तुम वहाँ नहीं थीं।"

कह कर उन्होंने उसको रास्ते पर गिरे हुए कुछ सिक्के दिखाये। वह बोली — "तुमने जो कुछ भी उठाया वह तुम्हारे लिये ठीक है पर मुझे यह सब नहीं चाहिये।"

अगले रविवार को जब वे लोग फिर से चर्च गयीं तो उस लम्बी नाक वाली ने फिर वही किया। उनके चर्च जाने के बाद वह भी अपने अच्छे कपड़े पहन कर चर्च गयी और जब वह वहाँ से लौट रही थी तो लोग पहले की तरह से फिर उसके पीछे पीछे आ रहे थे सो उसने फिर से पैसे फेंकना शुरू किया।

पैसे फेंकते समय उसका एक जूता उतर गया तो वह उस जूते को वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गयी क्योंकि उसके पास उसको उठाने का समय ही नहीं था।

राजा का बेटा भी उन पीछा करने वाले लोगों में से एक था। वह उस लड़की को तो नहीं पा सका पर उसने उसका जूता उठा लिया।

वह अपने आपसे बोला — "जिसके पैर में भी यह जूता बिल्कुल ठीक आ जायेगा, न छोटा रहेगा न बड़ा, मैं उसी से शादी कर लूँगा।"

वह जितनी स्त्रियों को जानता था सबके पास गया और उन सबको वह जूता पहना कर देखा पर वह जूता किसी स्त्री के भी नहीं आया।

तब उस लम्बी नाक वाली लड़की की बहिनें आयीं और उससे मजाक करते हुए बोलीं — "तुम जाओ न वहाँ, शायद वह जूता तुम्हारे पैर में आ जाये।"

वह बोली — "छोड़ो। तुम क्या सोचती हो कि क्या वह जूता मेरे पैर में पहना कर देखेगा और उसको गन्दा करेगा? मेरा मजाक मत बनाओ।"

फिर भी वह नीचे गयी तो जब राजकुमार ने उसको देखा तो वह पहचान गया कि वह जूता तो उसी का ही है। इसलिये उसने

उससे भी जूता पहनने के लिये कहा। उसने जूता पहना तो वह तो उसके बहुत आसानी से आ गया।

राजकुमार उससे बोला — "मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

लम्बी नाक वाली ने कहा — "मेरा मजाक मत बनाओ ताकि तुम अपनी जवानी में खुश रह सको।"

राजकुमार फिर बोला — "पर मैं सचमुच में तुमसे शादी करना चाहता हूँ।" यह कह कर वह उसको अपने साथ ले गया। उस लड़की ने अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहनी और उस राजकुमार ने उसके साथ शादी कर ली।

कुछ समय बाद उनके पहला बच्चा हुआ तो उसकी बहिनें उसको देखने आयीं। जब वह अकेली बिस्तर पर लाचार लेटी हुई थी तो वे उसे वहाँ से उठा कर ले गयीं और एक बक्से में बन्द कर दिया।

बक्से को बन्द कर के वे उसको वहाँ से ले गयीं और उस बक्से को नदी में फेंक दिया। नदी ने उस बक्से को एक रेगिस्तान के किनारे ले जा कर लगा दिया।

वहाँ एक आधी पागल स्त्री थी। उसने जब लकड़ी का एक बक्सा किनारे पर देखा तो उस बक्से की लकड़ी को आग जलाने के लिये इस्तेमाल करने के इरादे से उस बक्से को तोड़ दिया।

पर तोड़ने पर तो उसमें एक ज़िन्दा स्त्री निकली। वह स्त्री यह देख कर चौंक गयी और राजकुमारी को वहीं अकेला छोड़ कर वहॉ से चली गयी।

राजकुमारी अब वहॉ अकेली रह गयी। वहॉ उसने भेड़ियों की चिल्लाहट की आवाज सुनी तो वह डर कर बैठ गयी और रोने लगी।

वह भगवान से प्रार्थना करने लगी — "हे भगवान, धरती में एक गड्ढा कर दे ताकि मैं उसमें अपना सिर छिपा लूॅ और इन भेड़ियों की आवाज न सुन सकूॅ।" और भगवान ने उसको जमीन में एक गड्ढा दे दिया।

वह फिर बोली — "हे भगवान, तू मुझे इतना बड़ा गड्ढा दे दे ताकि मैं उसमें कमर तक अन्दर घुस सकूॅ।" और भगवान ने उसको एक इतना बड़ा गड्ढा भी दे दिया।

फिर उसने भगवान से तीसरी बार कहा कि हे भगवान तू मुझे इतना बड़ा गड्ढा दे दे जिसमें मैं खुद रह सकूॅ तो वहॉ एक कमरा बन गया। उस कमरे में वह सब कुछ मौजूद था जो उसको चाहिये था। वह वहीं रहने लगी। वहॉ उसने जब भी और जो कुछ भी मॉगा वह उसको मिल गया।

जब उसको खाना खाना होता तो वह कहती — "आओ, मेज पर मेरे खाने के लिये जिस चीज़ की भी जरूरत है वह लग जाओ –

खाना, चम्मच, कॉटे और जिस चीज़ की भी जरूरत है।" तो तुरन्त ही वहॉ यह सब लग जाता।

जब वह खाना खा चुकती तो वह कहती — "क्या तुम सब यहॉ मौजूद हो?"

और वे सब जवाब देते "हॉ हम सब यहॉ हैं।"

एक दिन उसका पति राजकुमार शिकार खेलते खेलते उस वीरान जगह में आ निकला। उसने वहॉ एक कमरा देखा तो वह यह देखने के लिये उधर चला गया कि वहॉ उस वीराने में कौन रहता है। वह उधर गया और जा कर उसने उस कमरे का दरवाजा खटखटाया।

लम्बी नाक वाली ने उसको देखा तो उसको दूर से ही पहचान लिया। उसने पूछा — "कौन है?"

राजकुमार बोला — "यह मैं हूॅ। दरवाजा खोलो।"

वह वहीं से बोली — "दरवाजा खुल जा।" और दरवाजा खुल गया। राजकुमार उस कमरे के अन्दर गया फिर ऊपर गया जहॉ उसने लम्बी नाक वाली को कुरसी पर बैठे पाया।

राजकुमार बोला — "गुड डे[78]।"

वह बोली — "आओ।"

और कमरे में रखी हर चीज़ बोल पड़ी "आओ।"

[78] Good Day – a normal greeting in daytime in English language

राजकुमारी बोली — "आओ कुरसी आओ।" और एक कुरसी तुरन्त ही आ गयी।

राजकुमारी ने कहा — "बैठो।" राजकुमार उस कुरसी पर बैठ गया। जब वह कुरसी पर बैठ गया तो राजकुमारी ने उससे उसके वहाँ आने की वजह पूछी। फिर उसने उसको वहाँ रुकने और खाना खा कर जाने के लिये कहा।

राजकुमार राजी हो गया और राजकुमारी ने तुरन्त ही हुक्म दिया — "आ जाओ मेज, सब चीज़ों के साथ आ जाओ।" और मेज पर खाने की सब चीज़ें लग गयीं। यह देख कर तो राजकुमार बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया।

वह फिर बोली — "आजा बेसिन आजा। जग आजा। हमारे हाथ धोने के लिये पानी डाल। हमारे लिये दस तरीके का खाना आजा।" तुरन्त ही ये सब काम हो गये।

जब खाना खत्म हो गया तो राजकुमार ने एक चम्मच चुराने की कोशिश की। उसने वह चम्मच अपने जूते में रख ली।

जब वे मेज पर से उठे तो राजकुमारी ने पूछा — "ओ मेज, क्या तुम्हारे पास सब बरतन हैं?"

"हाँ हैं।"

"तुम्हारे पास सब चम्मच हैं?"

वे बोलीं — "हॉ हम सब यहॉ है सिवाय एक चम्मच के जो राजकुमार के जूते में हैं।"

उसे अनसुना करते हुए वह फिर बोली— "कॉटे चम्मच क्या तुम सब यहॉ हो?"

और जैसे ही राजकुमार ने यह सुना उसने शरमाते हुए वह चम्मच अपने जूते में से बाहर निकाल दी।

राजकुमारी बोली — "तुम शरमाये क्यों? और तुम डरो नहीं, मैं तो तुम्हारी पत्नी हूॅ।"

फिर उसने राजकुमार को सारी कहानी बतायी कि वह वहॉ कैसे आयी और कैसे वहॉ आ कर रही।

दोनों ने एक दूसरे को गले लगाया। फिर उसने अपने कमरे को वहॉ से चलने के लिये कहा और वह कमरा वहॉ से चल दिया। जब वह कमरा राजमहल के पास पहुॅचा तो सारे लोग उस चलते हुए कमरे को देखने के लिये निकल आये।

राजकुमार ने अपनी पत्नी की बहिनों को अपने सामने लाने का हुकुम दिया। जब उनको वहॉ लाया गया तो राजकुमार ने उनको काट डालने का हुकुम सुना दिया।

उसके बाद वे खुशी खुशी रहने लगे और बहुत दिनों तक रहते रहे।

11 लावारिस[79]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के यूनान[80] देश में कही सुनी जाती है। यह एक पुस्तक से ली गयी है जो बच्चों के लिये लिखी गयी है।

बहुत पहले पुराने समय में यूनान में एक माता पिता और उनकी एक बेटी रहा करते थे। वे दोनों अपनी उस बेटी को इतना ज़्यादा प्यार करते थे जितना शायद कभी किसी ने अपनी बेटी को नहीं किया होगा।

उसकी मॉ उसकी हर जरूरत को पूरा करती। वह उसको खुशबू वाले पानी से नहलाती। हाथी दॉत के कंघे से उसके लम्बे काले घने बाल बनाती और लोरियॉ गा गा कर उसको पंखों के बिस्तर पर सुलाती।

लेकिन जब उसकी बेटी छोटी ही थी तो भगवान के बेरहम हाथों ने उसको अपनी बेटी से दूर कर दिया। उसने उसकी ज़िन्दगी ले ली और वह लड़की लावारिस सी हो गयी।

---

[79] The Orphan: a Cinderella story from Greece – a fairy tale from Greece, Europe.
This story is taken from the book "The Orphan: a Cinderella Story from Greece". By Anthony L Manna and Soula Mitakidou.

[80] Translated for the name of the country "Greece" – a country in Europe, East to Italy on the coast of Mediterranean Sea.

अब क्योंकि जैसा कि लोग यूनान में कहते हैं "एक बच्चे की जब मॉ मर जाती है तो वह लावारिस हो जाता है।" सो वह लावारिस ही हो गयी थी

उस बच्ची के पिता ने जल्दी ही दूसरी शादी कर ली। उस बच्ची की वह सौतेली मॉ बहुत बेरहम थी। उसके अपनी भी दो बेटियॉ थीं।

वह अपनी बेटियों को तो बहुत आराम से रखती पर उस लावारिस बच्ची को वह बुरी तरीके से रखती। इससे वह बच्ची अक्सर दुखी रहती। उसकी सौतेली मॉ उस बच्ची से इतनी नफरत करती कि वह उसके पीने के पानी को भी एक एक बूँद कर के गिनती।

एक दिन वह बच्ची इतनी ज़्यादा दुखी हुई कि वह उस रात अपनी मॉ की कब्र पर गयी और वहॉ जा कर खूब रोयी —

ओ मॉ मेरी ओ प्यारी मॉ मेरी बात सुनो
एक अजनबी तुम्हारी जगह लेने की कोशिश रहा है पर वह मेरी परवाह नहीं करता
उसकी बेटियॉ मुझे अब बहिनें कहती हैं पर वे मेरे लिये बहुत बेरहम हैं
ओ मॉ ओ मेरी प्यारी मॉ मुझे इससे आजाद करो

जैसे ही उस बच्ची ने यह कहा तो उसकी मॉ की कब्र कॉप गयी और जमीन में से उसकी मॉ की आवाज आयी —

जा मेरी बच्ची अपने अच्छे के लिये जा मेरी सारी दुआऐं तेरे साथ हैं तू जा
तेरा दुख मेरे दिल पर बहुत भारी पड़ता है, तेरे दर्द से मुझे दर्द होता है

इसलिये जा मेरी बच्ची जा अपने अच्छे के लिये जा और रो मत और नाउम्मीद मत हो जा घर जा मेरी जान, और वहॉ जा कर किसी अच्छे समय का इन्तजार कर

वह बच्ची बेचारी रोती हुई वहॉ से अपने घर चली गयी।

अगले दिन सुबह जैसे ही अँधेरा छँटा तो उस बच्ची ने अपना रोज का काम करने के लिये घर से बाहर कदम रखा तो उसने देखा कि मॉ प्रकृति और उसके बच्चे[81] वहॉ अपनी पूरी शान के साथ प्रगट हो गये और उन्होंने उसको बहुत सारी दुआऐं दीं।

सूरज ने उसको चमक दी। चॉद ने उसको सुन्दरता दी। सुबह ने उसको शान दी। और यही नहीं सुबह के तारे[82] ने उसको शाम के तारे[83] का हार पहनाया।

घास के मैदानों ने उसको तीन बहुत सुन्दर पोशाकें दीं और समुद्र ने उसको एक बहुत ही नाजुक मुलायम नीले रंग के जूते दिये जो उसके छोटे छोटे पैरों में बिल्कुल ठीक आ गये।

उन सबको धन्यवाद दे कर वह बच्ची अन्दर चली गयी और अपनी मिली हुई चीज़ें उसने एक बक्से में बन्द कर दीं।

अब ऐसा हुआ कि एक बार उस राज्य के राजकुमार ने यह तय किया कि वह उसी रविवार को उस गॉव के चर्च की पूजा में आयेगा।

---

[81] Translated for the words “Mother Nature and her children”. It means the Sun, Moon, trees, flowers etc

[82] Morning Star

[83] Evening Star

यह सुन कर उस बच्ची की सौतेली माँ बोली — "ज़रा सोचो तो। अगर राजकुमार ठीक से देख पायेगा तो उसको मेरी बेटियाँ ही अच्छी लगेंगी और यह भी हो सकता है कि वह उनमें से मेरी ही एक बेटी को अपनी दुलहिन बना ले।"

इस बात के दिमाग में आते ही उसने अपने पति से कहा कि वह उस गाँव का सबसे अच्छा दरजी तलाश करे ताकि वह उसके खुद के लिये और उसकी दोनों बेटियों के लिये बहुत बढ़िया किस्म की पोशाकें तैयार करे।

अब सोचो ज़रा कि उस बच्ची के पिता ने क्या किया होगा? और वह बेचारा अपनी पत्नी कहे के अलावा और कर भी क्या सकता था?

वह गाँव में गया और गाँव के सबसे अच्छे दरजी को सबसे अच्छी तीन पोशाकें बनाने के लिये कहा – एक ब्रोकेड की[84] एक डैमैस्क[85] की और एक असली सिल्क की।

रविवार आया। जैसे ही सुबह हुई तो सौतेली माँ ने उस लावारिस बच्ची को उसकी सौतेली बहिनों के बाल बहुत ही बढ़िया तरीके से बनाने के लिये कहा और उनको वे नयी पोशाकें पहनाने के लिये कहा।

[84] Brocade – is a kind of very expensive and rich cloth woven in gold and silver threads

[85] Damask is a reversible figured fabric of silk, wool, linen, cotton, or synthetic fibres, with a pattern formed by weaving. Damasks are woven with one warp yarn and one weft yarn, usually with the pattern in warp-faced satin weave and the ground in weft-faced or sateen weave.

पर वह सौतेली मॉ अभी भी सन्तुष्ट नहीं थी। उसने अपने जादू से अपने पति को विश्वास दिलाया कि उसको और उसकी दोनों बेटियों को बढ़िया गहनों की भी जरूरत थी।

अब उस बच्ची के पिता ने क्या किया? और वह इसके अलावा कर भी क्या सकता था?

उसने अपनी पत्नी के लिये एक नीलम[86] का हार खरीदा। एक बेटी के लिये लाल[87] का ब्रेसलैट[88] खरीदा। और दूसरी बेटी के लिये उसने एक गारनैट[89] लगी सोने की अॅगूठी खरीदी।

इन सबको पहन कर सज कर वह सौतेली मॉ और उसकी दोनों बेटियॉ गॉव के रास्तों से हो कर चर्च की तरफ चल दीं।

चर्च में पहुॅचने पर वे वेदी[90] के पास वाली सीट पर जहॉ राजकुमार की सीट भी लगी थी जा कर बैठ गयीं।

इस बीच वह लावारिस बच्ची घर में अकेली रह गयी तो उसको अपनी मॉ के शब्द याद आये —

जा मेरी बच्ची अपने अच्छे के लिये जा मेरी सारी दुआऐं तेरे साथ हैं तू जा
तेरा दुख मेरे दिल पर बहुत भारी पड़ता है, तेरे दर्द से मुझे दर्द होता है

---

[86] Sapphire – a precious stone
[87] Red Rubies – a precious stone
[88] Bracelet is an ornament to be worn in wrist. See its picture above.
[89] Garnet is a semi-precious stone, deep blood red in color. It is also used to make jewelry.
[90] Translated for the word “Altar”. See the picture above.

इसलिये जा मेरी बच्ची जा अपने अच्छे के लिये जा और रो मत और नाउम्मीद मत हो जा घर जा मेरी जान, और वहॉ जा कर किसी अच्छे समय का इन्तजार कर

वह तुरन्त अन्दर गयी और अपना बक्सा खोल कर उसने मॉ प्रकृति की भेंटें निकालीं। तो वह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गयी कि उन पोशाकों के नीचे तो सोने के बहुत सारे सिक्के भी पड़े थे।

जैसा कि उसकी मॉ उसके लिये पहले किया करती थी आज उसने भी अपने लिये वही किया।

वह कस्तूरी[91] की खुशबू वाले पानी से नहायी। हाथी दॉत के कंघे से अपने बाल बनाये। फिर उसने अपनी वह वाली पोशाक पहनी जिसमें घास के मैदानों के फूल बने हुए थे। शाम के तारे वाला हार पहना और गहरे नीले समुद्री रंग के छोटे से जूते पहने।

उसी पल वह सूरज की तरह चमकीली हो गयी, चॉद की तरह सुन्दर हो गयी और सुबह की तरह से शान वाली हो गयी। उसने बक्से में से एक मुट्ठी भर सोने के सिक्के अपनी जेब में डाले और चर्च जाने के लिये घर से निकल पड़ी।

अपने हाथ ऊपर उठाते हुए उसने आसमान पर पहुॅचना चाहा तो एक बहुत चमकती हुई सफेद घोड़ी उसके पास आ गयी। वह

[91] Translated for the word “Musk”. Musk is a class of aromatic substances commonly used as base notes in perfumery. They include glandular secretions from animals such as the musk deer, numerous plants emitting similar fragrances, and artificial substances with similar odors. Musk was a name originally given to a substance with a penetrating odor obtained from a gland of the male musk deer.

हवा की तेज़ी के साथ उस घोड़ी पर चढ़ गयी और उस पर सवार हो कर चर्च की तरफ चल दी।

जब वह चर्च जा रही थी तो पेड़ों की पत्तियों की खड़खड़ाहट में उसको अपनी मॉ की आवाज फिर से सुनायी पड़ी —

तुम मेरी जान को याद रखना
तुम घर वापस तभी लौट आना जब चर्च की पूजा खत्म हो
नहीं तो यह सब खत्म हो जायेगा

चर्च पहुॅच कर वह लावारिस लड़की अपनी घोड़ी से कूदी और चर्च के अन्दर भागी। उसने न बॉये देखा न दॉये बस सीट की दोनों लाइनों के बीच वाली जगह में से भागती हुई वह वेदी के पास पहुॅच गयी जहॉ राजकुमार बैठा हुआ था।

जैसे ही वह चर्च के अन्दर घुसी सारे लोगों की ऑखें उस अजनबी लड़की के पीछे ही लगी रहीं। बाद में एक गॉव वाले ने याद कर के बताया कि वह अजनबी लड़की तो हर कदम पर शाही परिवार में जुड़ने के विश्वास से और ज़्यादा चमकीली होती जा रही थी।

जब पादरी ने चर्च में बैठे लोगों को अन्तिम आशीर्वाद दिया तो राजकुमार ने अपने रक्षकों को बुलाया और उनसे कहा — "मुझे इस लड़की से मिलना है जो यह हार पहने है। इसको मेरे पास बुला कर लाओ।"

अपनी मॉ की बात को सोचते हुए कि उसको चर्च की पूजा के तुरन्त बाद ही लौटना है वह लावारिस लड़की वहॉ से भाग ली। भीड़ को पीछे छोड़ते हुए उसने अपनी पोशाक की जेब से कुछ सिक्के निकाले और अपने पीछे फेंक दिये।

गॉव वाले सब तितर बितर हो गये। वे उन सिक्कों को उठाने में लग गये और वह लावारिस लड़की वहॉ से भागने में सफल हो गयी। राजकुमार के रक्षक इतने तेज़ नहीं थे जो वे उसको पकड़ पाते सो वह लड़की उनको भी धोखा देने में सफल हो गयी।

घर पहुँच कर लावारिस लड़की ने अपनी घोड़ी को वापस आसमान में भेज दिया, अपनी सारी भेंटें अपने बक्से में बन्द कर दीं और जा कर अपने मकान के सबसे अँधेरे कोने में बैठ गयी।

जब उसकी सौतेली मॉ और उसकी दोनों बेटियॉ वापस घर लौटीं तो वे उस अजनबी लड़की के अलावा किसी और बारे में कोई बात ही नहीं कर रही थीं जिसने पूरे चर्च पर जादू डाला हुआ था।

पर वह लावारिस लड़की चुप ही रही।

इस बीच राजकुमार बहुत परेशान रहा। उसको कोई तसल्ली भी नहीं दे सका। उसने तय किया कि वह अगले रविवार गॉव के चर्च फिर से लौटेगा और उस सुन्दर अजनबी लड़की को फिर से ढूँढने की कोशिश करेगा।

जब अगला रविवार आया तो राजकुमार ने अपने रक्षकों से कहा — "महल के मधुमक्खी पालने वाले के पास जाओ और उससे

कहो कि वह शहद और मोम को मिला कर एक ऐसा मिश्रण बनाये जिस पर अगर कोई पैर रखे तो वह उस पर तुरन्त ही चिपक जाये।

जैसे ही चर्च की पूजा खत्म हो तो उसकी एक परत चर्च की देहरी[92] पर लगा दो इससे वह लड़की उससे चिपक जायेगी फिर तुम लोग उस लड़की को ले कर यहॉ आ जाना।"

एक बार फिर सौतेली मॉ की दोनों बेटियों ने अपनी मॉ से उस रविवार को चर्च जाने के लिये कहा। अच्छे कपड़े फिर से बनवाये गये। गहने फिर से खरीदे गये। और एक बार फिर से उसकी दोनों बहिनों ने उस लावारिस लड़की से अपने बाल ऊॅचे ऊॅचे घुॅघराले बनाने के लिये कहा।

सब कुछ वैसे ही हुआ जैसे पहले हुआ था। जैसे ही सौतेली मॉ और उसकी दोनों बेटियॉ चर्च गयीं लावारिस लड़की की मॉ के शब्द उसके कानों में पड़े —

जा मेरी बच्ची अपने अच्छे के लिये जा मेरी सारी दुआऐं तेरे साथ हैं तू जा
तेरा दुख मेरे दिल पर बहुत भारी पड़ता है, तेरे दर्द से मुझे दर्द होता है
इसलिये जा मेरी बच्ची जा अपने अच्छे के लिये जा और रो मत और नाउम्मीद मत हो
जा घर जा मेरी जान, और वहॉ जा कर किसी अच्छे समय का इन्तजार कर

[92] Translated for the word "Threshold"

सो पहले ही की तरह से उसने कस्तूरी के पानी से नहाया, बालों में हाथी दॉत की कंघी से कंघी की, अपनी पोशाक पहनी, हार पहना और अपने छोटे से जूते पहने।

उसी पल वह सूरज की तरह चमकीली हो गयी, चॉद की तरह से सुन्दर हो गयी और सुबह की तरह से शान वाली हो गयी। उसने बक्से में से एक मुट्ठी भर कर सोने के सिक्के अपनी जेब में डाले और चर्च जाने के लिये घर से निकल पड़ी।

अपने हाथ ऊपर उठाते हुए उसने आसमान पर पहुॅचना चाहा तो एक बहुत चमकती हुई सफेद घोड़ी उसके पास आ गयी। वह हवा की तेज़ी के साथ उस घोड़ी पर चढ़ गयी और उस पर सवार हो कर चर्च की तरफ चल दी।

जब वह जा रही थी तो पेड़ों की पत्तियों की खड़खड़ाहट में उसको अपनी मॉ की आवाज फिर से सुनायी पड़ी —

तुम मेरी जान को याद रखना
तुम घर वापस तभी लौट आना जब चर्च की पूजा खत्म हो
नहीं तो यह सब खत्म हो जायेगा

चर्च पहुॅच कर वह बड़ी शान से चर्च के अन्दर घुसी। चर्च में बैठे गॉव वाले फिर से उसकी तरफ से निगाह नहीं हटा सके। पर सबसे ज़्यादा तो इस बार राजकुमार की निगाहें उस पर जमी रहीं।

जब चर्च की पूजा खत्म हो गयी तो राजकुमार के रक्षक अपने काम पर लग गये। उन्होंने शहद और मोम का मिश्रण चर्च की देहरी पर लगा दिया।

जैसे ही पादरी ने कहा "आमीन" वह लावारिस अपनी सीट पर से उठी और दरवाजे की तरफ भागी और किसी भी गॉव वाले के वहॉ पहुँचने के पहले ही वहॉ पहुँच गयी।

पर चर्च से बाहर निकलते समय उसका पैर चर्च के दरवाजे पर लगे उस शहद और मोम के मिश्रण की परत पर पड़ गया। उसका पैर वहीं चिपक गया। उसने उसको वहॉ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की पर वह तो वहीं की वहीं चिपकी रह गयी। वह तो अपना पैर वहॉ से छुड़ा ही नहीं पा रही थी।

समय निकला जा रहा था सो उसने अपने उस जूते को वहीं उस चिपकते हुए मिश्रण में चिपका हुआ छोड़ा और खुद वहॉ से भाग गयी।

जब राजकुमार के रक्षक उसके पास आये तो उसने फिर से सोने के सिक्के अपने पीछे फेंक दिये। गॉव वाले इधर उधर बिखर कर वह सिक्के उठाने में लग गये और वह लावारिस अपनी घोड़ी पर चढ़ कर वहॉ से भाग ली।

राजकुमार के रक्षक उस दिन भी उसका पीछा नहीं कर सके। वे बेचारे क्या करते? और वे बेचारे कर भी क्या सकते थे?

वे बेचारे फिर से इस बुरी खबर को ले कर राजकुमार के पास गये — "वह हार वाली लड़की तो हम लोगों से कहीं ज़्यादा होशियार है। जैसे ही हमको लगा कि हमने उसे पकड़ लिया है तो वह तो बस हवा में ही गायब हो गयी। हमको उसका केवल यह जूता ही मिल पाया।"

राजकुमार इस खबर से कुछ नाउम्मीद सा तो जरूर हुआ पर उस जूते को देख कर अब उसके दिमाग में एक नयी तरकीब आयी।

उसने अपने रक्षकों से कहा — "तुम लोग गॉव जाओ और सब लड़कियों से जा कर कहो कि चाहे वे अमीर हों या गरीब, छोटी हों या बड़ी सब महल में आयें और इस जूते को पहन कर देखें। जिस लड़की के पैर में यह जूता आ जायेगा वही मेरी दुलहिन बनेगी।"

और फिर ऐसा ही हुआ। सुबह से ले कर शाम तक और शाम से ले कर सुबह तक, हर दिन, हर लड़की, हर पैर उस जूते को पहनने के लिये देखने के लिये आता रहा पर हुआ कुछ भी नहीं। वह जूता किसी के पैर में भी नहीं आया।

इस बीच लावारिस की सौतेली बहिनें घंटों और दिनों तक यही सोचती रहीं कि वे राजकुमार के सामने जाते समय वे क्या पहनेंगीं। आखिर तीसरे दिन शाम को वे राजमहल की तरफ अपनी किस्मत आजमाने चलीं।

क्या उनके साथ वह लावारिस लड़की भी थी? नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। वह भला उनके साथ कैसे जा सकती थी।

जब वह लावारिस अकेली रह गयी तो उसने फिर से अपनी मॉ की आवाज सुनी —

जा मेरी बच्ची अपने अच्छे के लिये जा मेरी सारी दुआऐं तेरे साथ हैं तू जा
तेरा दुख मेरे दिल पर बहुत भारी पड़ता है, तेरे दर्द से मुझे दर्द होता है
इसलिये जा मेरी बच्ची जा अपने अच्छे के लिये जा और रो मत और नाउम्मीद मत हो
जा घर जा मेरी जान, और वहॉ जा कर किसी अच्छे समय का इन्तजार कर

उस लड़की ने एक मिनट भी बरबाद नहीं किया। वह अपने बक्से की तरफ भागी। बक्सा खोला और फिर से मॉ प्रकृति की भेंटें निकालीं।

वह फिर से कस्तूरी के पानी से नहायी, हाथी दॉत की कंघी से अपने बाल बनाये, कपड़े पहिने और सूरज जैसी चमकीली और चॉद जैसी सुन्दर और सुबह की तरह से शानदार हो गयी।

पर इस बार बजाय सोने के सिक्के साथ ले जाने के उसको अपनी सौतेली मॉ और सौतेली बहिनों के गहने मिल गये जो उन्होंने पहले दिन चर्च जाने के लिये पहने थे और फिर उसकी जेब में रख दिये थे।

उसने वही गहने पहन लिये और घर से बाहर निकली। बाहर जा कर उसने पहले की तरह से अपने हाथ ऊॅचे किये तो एक सफेद

घोड़ी आसमान से नीचे उतर आयी। वह उस पर बैठ गयी और वह घोड़ी उसको हवा की रफ्तार से महल ले गयी।

जब वह महल पहुँची तो वह बहुत चमक रही थी। बड़े कमरे में घुसते ही सबकी निगाहें फिर से उसके ऊपर जम गयीं। और राजकुमार तो उसको देखते ही खड़ा हो गया।

वह उस अजनबी लड़की के सामने झुका, घुटनों के बल बैठा और उसके सामने वह नाजुक सा जूता बढ़ा दिया।

पर क्या वह जूता उसके पैर में ठीक आया? क्यों नहीं।

यकीनन। वह जूता उसके पैर में ठीक क्यों नहीं आता वह तो उसी का जूता था। और यह तो कहने की बात ही नहीं कि यह देख कर राजकुमार और लावारिस लड़की दोनों ही कितने खुश हुए।

उस लावारिस लड़की की सौतेली मॉ और सौतेली बहिनें भी वहीं खड़ी थीं। सो उसने जब उन तीनों को वहॉ खड़े देखा तो वह उनके पास गयी और उनके गहने वापस कर दिये।

तीनों आश्चर्य से चिल्लायीं — "ओह तो तुम हो वह लड़की जो वह हार पहने थीं?" और अगले ही पल वे महल से बाहर भाग गयीं। कुछ हफ्ते बाद राजकुमार ने उस लावारिस लड़की से शादी कर ली और फिर वे खुशी खुशी रहे।

List of Cinderella Stories in Europe “Cinderella Europe Mein”

List of Cinderella stories in “Cinderella Europe Mein-1”.
They are taken from the website : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#links

1. Cinderella – (Germany)
2. Vuitji-Vegt-Den-Oven – (Belgium)
3. The Three Oranges – (Corsica)
4. Green Knight – (Denmark)
5. Broken Pitcher – (Denmark/Greece)
6. Rushen Coatie – (France)
7. Cinderella or Little Glass Slippers (France)
8. Finnett Cendron (France)
9. Conkiajgharuna, the Little Rag Girl – (Georgia)
10. The Little Saddleslut – (Greece)
11. The Orphan – (Greece)

List of Cinderella Stories in “Cinderella Europe Mein-2”

1. Ashey Pelt – (Ireland)
2. Fair, Brown and Trembling – (Ireland)
3. Cinderella – (Italy)
4. Katie Woodencloak (Norway)
5. The Hearth Cat – (Portugal)
6. The Sharp Grey Sheep – (Scotland)
7. Rashin Coatie – (Scotland)
8. Papelyouga or the Little Girl – (Serbia)
9. The Cinder Maid (European Mixture)

1. Story of Rhodopis
2. German Cinderella
3. French Cinderella
4. Baba Yaga-2

Some Books on Cinderella

Dundes, Alan, ed. *Cinderella: A Casebook*. University of Wisconsin Press, 1988.
Besides the texts of Basile, Perrault, and Grimm, this volume includes essays on Cinderella. Dundes also includes a select bibliography, pp. 309-313.]

Heiner, Heidi Anne, ed. *Cinderella: Tales from Around the World*. SurLaLune Press, 2012.
This collection offers a wide variety of Cinderella stories from around the world. Classic versions, such as the Egyptian Rhodopis and "The Cat Cinderella," are offered alongside lesser known versions such as "The Hearth Cat" from Portugal. The versions of the traditional Cinderella story come from all over the world including Russia, Mexico, and Chile. The collection also includes a selection of Catskin variants, "As Much as Meat Loves Salt" retellings, and "One Eye, Two Eye, Three Eye" stories. A helpful list of primary and secondary sources is also provided. The collection is useful for students or scholars and is available in print and digital formats.] [Annotation by Martha Johnson-Olin]

Philip, Neil, ed. *The Cinderella Story: The Origins and Variations of the Story Known As "Cinderella."* London: Penguin, 1989.
Includes Introduction; Cendrillon, or, "The Little Glass Slipper" (Andrew Lang's edition of Robert Samber's translation of Perrault); "Yeh-hsien" (from Tuan Ch'êngshih's *Yu Yang Tsa Tsu* (*Miscellany of Forgotten Lore* [China] AD 850-60); "Kajong and Halock" (from A. Landes' *Contes Tjames, traduits et annotés*, Saigon, 1887); "Benizara and Kakezara" (from Keigo Seki, *Folktakes of Japan*, 1963); "Burenushka, the Little Red Cow" (from Aleksandr Afanas'ev's*Russian Fairy Tales*, 1945); "The Poor Girl and Her Cow" (from E. S. Stevens, *Folk-Tales of 'Iraq*, 1931; "An Armenian Cinderella" (from Susie Hoogasian-Villa, *100 Armenian Tales and Their Folkloristic Relevance*, 1966; "Askenbasken, Who Became Queen" (from Evald Tang Kristensen, *Jyske Folkeminder*, Copenhagen, 1881; "Ashey Pelt" (Irish version recorded by M. Damant (1895); "Rashin Coatie" (from Andrew Lang, "Rashin Coatie. A Scotch Tale," 1876); "Mossycoat" (North English version recorded by T.W.Thompson, 1915); "Dona Labismina" (from Silvio Roméro, *Contos Populares do Brazil*, 1883); "La Sendraoeula" (from Caterina Pigorini-Beri, "La Cenerentola a Parma e a Camerino," Palermo, Italy, 1883); "The Poor Turkey Girl" (from Frank Cushing, Zuni Folk Tales, 1901); "The Boy and his Stepmother" (from A. Campbell, *Santal Folk Tales*, 1891); "The Finger Lock" (recorded from Andra "Hoochten" Stewart, Perthshire, Scotland, 1971); "The Bracket Bull" (from Douglas Hyde, *Four Irish Stories*, 1898); "Fair, Brown, and Trembling" (from Jeremiah Curtin, *Myths and Folk-lore of Ireland*, 1890); "Maria" (from Fletcher Gardner, "Filipino [Tagalog] Versions of Cinderella," 1906); "The Black Cat" (from F.M.Luzel, *Contes Populaires de Bass-Bretagne*, 1887); "The Maiden, the Frog and the Chief's Son" (from William Bascom, "Cinderella in Africa," 1972); "Rushycoat and the King's Son" (from Leonard Roberts, *Old Greasybeard: Tales from the Cumberland Gap*, 1969); "Cinderella in Tuscany" (from Alessandro Falassi, *Folklore by the Fireside: Text and Context of the Tuscan Veglia*, 1980); "The Travellers' Cinderella" (from the School of Scottish Studies Sound Archives, 1976); and suggested further readings.

Sierra, Judy. *Cinderella*. Illustrated by Joanne Caroselli. The Oryx Multicultural Folktale Series. Phoenix, Arizona: Oryx Press, 1992.

A text designed for school use with apparatus on activities and resources for young scholars. Includes "Rhodopis: A Cinderella in Ancient Egypt?"; "Yeh-hsien" (China); "Cinderella, or the Little Glass Slipper" (France); "Peu d'Anisso" (France); "Aschenputtel" (Germany); "Allerleirauh, or the Many-furred Creature" (Germany); "Little One-eye, Little Two-eyes, and Little Three-eyes" (Germany); "Cap o'Rushes" (England); "Billy Beg and the Bull" (Ireland); "Fair, Brown, and Trembling" (Ireland); "Hearth Cat" (Portugal); "Katie Woodencloak" (Norway); "The Wonderful Birch" (Finland); "The Story of Mjadveig, Daughter of Mani" (Iceland); "Little Rag Girl" (Republic of Georgia); "Vasilisa the Beautiful" (Russia); "The Little Red Fish and the Clog of Gold" (Iraq); "Nomi and the Magic Fish" (Africa); "How the Cowherd Found a Bride" (India); "The Invisible One" (Native American: Micmac); "Poor Turkey Girl" (Native American: Zuni); "Ashpet" (United States: Appalachia); "Benizara and Kakezara" (Japan); "Maria" (Philippines); "The Story of Tam and Cam" (Vietnam). With Introduction and Notes.

Sierra, Julie, ed. *Cinderella*. Westport, CT: Oryx Press, 1992.

[This volume is one part of the larger *Oryx Multicultural Folktale Series*. It includes translations of many classic retellings but focuses heavier on the traditional Cinderella storyline. It includes retellings from around the world, including Scotland, Iraq, and Vietnam. The discussions about the tale at the end of the volume are brief but can represent a starting place for students studying the tale.

List of Cinderella Stories given in above sources

This list has been prepared by collecting all the titles given in the books above. Titles in red are give in my books – "Cinderella Europe Mein-1", "Cinderella Europe Mein-2"and "Cinderella in the World".

Egyptian Rhodopis and "The Cat Cinderella"
"The Hearth Cat" from Portugal.
"As Much as Meat Loves Salt" retellings,
"One Eye, Two Eye, Three Eye" stories.

Cendrillon, or, "The Little Glass Slipper" (Andrew Lang's edition of Robert Samber's translation of Perrault);
"Yeh-hsien" (from Tuan Ch'êngshih's *Yu Yang Tsa Tsu* (*Miscellany of Forgotten Lore* [China] AD 850-60);
"Kajong and Halock" (from A. Landes' *Contes Tjames, traduits et annotés*, Saigon, 1887);
"Benizara and Kakezara" (from Keigo Seki, *Folktakes of Japan*, 1963);
"Burenushka, the Little Red Cow" (from Aleksandr Afanas'ev's *Russian Fairy Tales*, 1945);
"The Poor Girl and Her Cow" (from E. S. Stevens, *Folk-Tales of 'Iraq*, 1931;
"An Armenian Cinderella" (from Susie Hoogasian-Villa, *100 Armenian Tales and Their Folkloristic Relevance*, 1966;
"Askenbasken, Who Became Queen" (from Evald Tang Kristensen, *Jyske Folkeminder*, Copenhagen, 1881;
"Ashey Pelt" (Irish version recorded by M. Damant (1895);
"Rashin Coatie" (from Andrew Lang, "Rashin Coatie. A Scotch Tale," 1876);
"Mossycoat" (North English version recorded by T.W.Thompson, 1915);
"Dona Labismina" (from Silvio Roméro, *Contos Populares do Brazil*, 1883);
"La Sendraoeula" (from Caterina Pigorini-Beri, "La Cenerentola a Parma e a Camerino," Palermo, Italy, 1883);
"The Poor Turkey Girl" (from Frank Cushing, *Zuni Folk Tales*, 1901);
"The Boy and his Stepmother" (from A. Campbell, *Santal Folk Tales*, 1891);
"The Finger Lock" (recorded from Andra "Hoochten" Stewart, Perthshire, Scotland, 1971);
"The Bracket Bull" (from Douglas Hyde, *Four Irish Stories*, 1898);
"Fair, Brown, and Trembling" (from Jeremiah Curtin, *Myths and Folk-lore of Ireland*, 1890);
"Maria" (from Fletcher Gardner, "Filipino [Tagalog] Versions of Cinderella," 1906);
"The Black Cat" (from F.M.Luzel, *Contes Populaires de Bass-Bretagne*, 1887);
"The Maiden, the Frog and the Chief's Son" (from William Bascom, "Cinderella in Africa," 1972);
"Rushycoat and the King's Son" (from Leonard Roberts, *Old Greasybeard: Tales from the Cumberland Gap*, 1969);
"Cinderella in Tuscany" (from Alessandro Falassi, *Folklore by the Fireside: Text and Context of the Tuscan Veglia*, 1980);
"The Travellers' Cinderella" (from the School of Scottish Studies Sound Archives, 1976);
"Rhodopis: A Cinderella in Ancient Egypt?";
"Yeh-hsien" (China);
"Cinderella, or the Little Glass Slipper" (France);
"Peu d'Anisso" (France);

"Aschenputtel" (Germany);
"Allerleirauh, or the Many-furred Creature" (Germany);
"Little One-eye, Little Two-eyes, and Little Three-eyes" (Germany);
"Cap o'Rushes" (England);
"Billy Beg and the Bull" (Ireland);
"Fair, Brown, and Trembling" (Ireland);
"Hearth Cat" (Portugal);
"Katie Woodencloak" (Norway);
"The Wonderful Birch" (Finland) Given in "Cinderella in the World" (Russia);
"The Story of Mjadveig, Daughter of Mani" (Iceland);
"Little Rag Girl" (Republic of Georgia);
"Vasilisa the Beautiful" (Russia);
"The Little Red Fish and the Clog of Gold" (Iraq);
"Nomi and the Magic Fish" (Africa);
"How the Cowherd Found a Bride" (India)
"The Invisible One" (Native American: Micmac);
"Poor Turkey Girl" (Native American: Zuni);
"Ashpet" (United States: Appalachia);
"Benizara and Kakezara" (Japan);
"Maria" (Philippines);
"The Story of Tam and Cam" (Vietnam).

There are some other stories also which I have written in my books but they are not given here in this list …

Links to Related Sites

The Annotated Cinderella, from the SurLaLune Fairy Tales by Heidi Anne Heiner.

Cinderella, from *Wikipedia*, the free encyclopedia.

Cinderella Bibliography. A thorough and scholarly annotated bibliography of texts, analogues, criticism, modern versions, parodies -- ranging from ancient folklore through recent popular culture, and modern scholarship. Organized by Russell A. Peck, University of Rochester.

Cox, Marian Roalfe. *Cinderella: Three Hundred and Forty-Five Variants of Cinderella, Catskin, and Cap o' Rushes*, with an introduction by Andrew Lang (London: Published for the Folk-Lore Society by David Nutt, 1893). This book is available at the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/marianroalfecox/index.html also

The Father Who Wanted to Marry His Daughter, folktales of type 510B. These stories resemble the "Cinderella" tales (type 510A), but they also include an episode depicting attempted incest. Here DL Ashliman has given more than **22 stories** in full.

http://www.365cinderellas.com/ , Many Cinderella tales from the world.

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022